अब्राहम लिंकन

प्रदीप पंडित

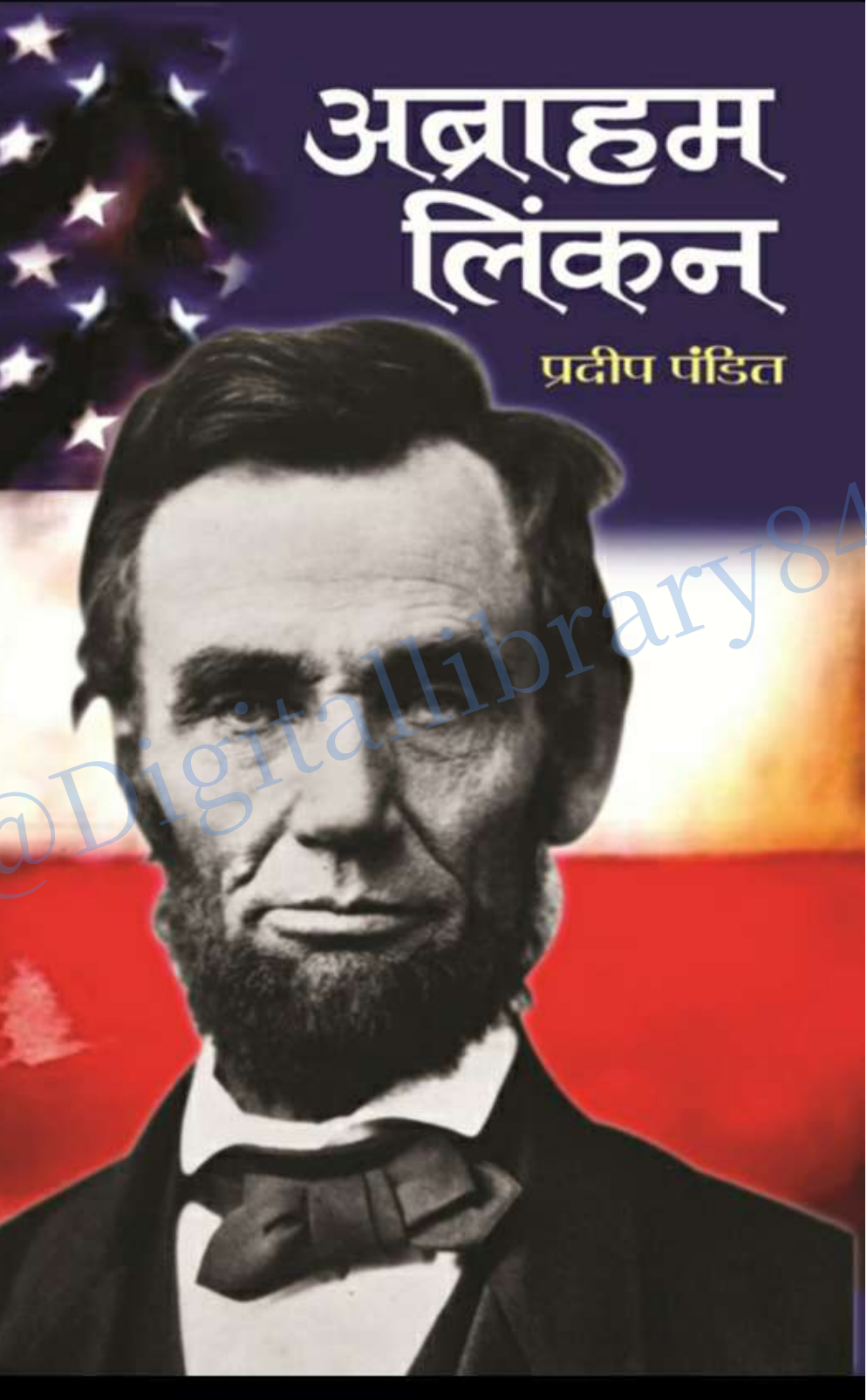

@Digitallibrary84

अब्राहम लिंकन

प्रदीप पंडित

@Digitallibrary84

सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

विषय सूची

1. इतिहास का झरोखा

2. पहला पायदान

3. राजनीति के शिखर पर

4. दासप्रथा का उन्मूलन

5. दूसरी बार राष्ट्रपति बनना

6. बलिदान

@Digitallibrary84

1

इतिहास का झरोखा

इतिहास महज घटनाओं का गुणा-भाग ही नहीं होता, उसमें तत्कालीन जीवन की धड़कनें भी होती हैं। वे धड़कनें, जो कभी आज थीं। यह सब समय को, मनुष्य को केंद्र में रखकर की जानेवाली सजग अनुक्रिया का नाम है। यही वजह है कि हर राष्ट्र ने अपनी संपूर्ण चेतना और सरोकारों के साथ अपने समय के नागरिकों की उपलब्धियों पर पैनी निगाह रखी। ऐसे लोग, जिन्होंने अपनी क्षमता के सार्थक हस्तक्षेप से समूचे राष्ट्र की दिशा बदल दी; ऐसे लोग, जिन्होंने अपनी मानवीय प्रतिबद्धताओं के जरिए देश की धारा बदलने का काम किया; ऐसे लोग, जिन्होंने अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को बर्बर नहीं बनने दिया, बल्कि उन्हें विनम्र अभिलाषाओं के साये में पोषित किया—ऐसे सभी लोग विभिन्न राष्ट्रों के इतिहास में अविस्मरणीय हैं। इनमें अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन भी एक थे।

जैसा कि पं. भवानीप्रसाद मिश्र ने लिखा—

'न निरापद कोई नहीं है

न तुम न वे न वे न वे।'

ऐसे ही अब्राहम लिंकन का जीवन भी निरापद नहीं रहा। उनकी माँ नैंसी हैंक्स का बचपन अपने चाचा-चाची के साथ बीता। उन्होंने ही उन्हें बड़ा किया। नैंसी कभी स्कूल नहीं गईं। हालात ऐसे थे कि उनका स्कूल जाना कभी नहीं हुआ। उन्हें निरक्षर कहा जा सकता है। करीब 22 बरस की उम्र में उन्होंने अपना जीवनसाथी खोज लिया। उनका नाम था थॉमस लिंकन। वे एक दिहाड़ी मजदूर थे। उनका जीवन एकाकी, उपेक्षित और नीरस था। मगर थॉमस हिरण का शिकार करने में लाजवाब थे। कभी मछलियाँ पकड़ीं, कभी कुछ किया, कभी सड़कों पर काम किया और पुराने रिकॉर्ड बताते हैं कि करीब तीन बार थॉमस लिंकन को कैदियों की निगरानी का काम भी दिया गया। उनकी माली हालत

@Digitallibrary84

इतनी खराब थी कि एक समय पत्नी नैंसी हैंक्स को अपनी पोशाक बबूल के काँटों से बेधकर पहननी पड़ी।

यूँ तो थॉमस लिंकन ने अपनी शादी के बाद शहर जाकर कारपेंटर की जिंदगी बितानी चाही थी, मगर प्रकृति को शायद यह भी मंजूर नहीं हुआ। उन्हें काम मिला, लेकिन उनके लोग लकड़ी को चाहे गए अनुपात में काट नहीं पाए। नतीजतन उन्हें उनके परिश्रम का मूल्य नहीं मिला। मालिक ने पैसे देने से इनकार कर दिया। उसके बाद थॉमस का मन उचट गया। उन्हें लगा, दरख्तों के बीच बड़े हुए हैं, उन्हें वहीं लौट जाना चाहिए। दीर्घ और पुष्ट बाजुओं के धनी थॉमस एलिजाबेथ के पास बेरन चले गए। यह वह क्षेत्र था, जहाँ भैंसें चराई जाती थीं। यहाँ छिटके हुए कुछेक फूलों के पेड़ थे। अमूमन जमीन पथरीली थी। वहीं दिसंबर 1808 में टॉम लिंकन ने अनेक संघर्षों के बाद थोड़ी जमीन खरीदी। उस पर लकड़ी का घर बनाया। कच्चे फर्श और बिना खिड़की के उस कमरे में ही सन् 1809 की 12 फरवरी को कंटेकी राज्य में अब्राहम लिंकन का जन्म हुआ। समय और जिम्मेदारियाँ संघर्ष की शक्ल बदलते रहे हैं। थॉमस के संघर्ष की शक्लें भी बदलती रहीं। खरीदी गई जमीन बंजर थी। वह खेती करना चाहता थे। लिहाजा उन्हें परिवार के गुजर-बसर के लिए उस जमीन से करीब सोलह कि.मी. दूर जमीन खरीदनी पड़ी। वहीं अब्राहम अपने पिता थॉमस की मदद किया करते थे। मक्की के खेत में परिश्रम और अपनी बड़ी बहन सराह के साथ स्कूल—ये अब्राहम लिंकन की जिंदगी की ओर चलती तुतलाहट के आरंभिक कदम थे। अब्राहम की माँ को खुशी के चंद लमहे भी नसीब नहीं हुए। रोज-रोज की तंगहाली और जिंदगी के सदमों ने महज 35 वर्ष की आयु में ही उनकी साँसें छीन लीं।

सन् 1816 में अब्राहम लिंकन के पिता ने अपनी कंटेकी की जमीन को 'कार्न ह्विस्की' से बार्टर किया और वे ओहायो नदी के पार उत्तर में पड़ोसी राज्य इंडियाना चले आए। तब लिंकन की उम्र मात्र सात बरस की थी। मौसम की पहली बर्फ गिर चुकी थी। जंगल इतना घना था कि चलते हुए आस-पास उलझी और लटकी लताओं, शाखाओं को काटना होता था। जल्दबाजी में थॉमस ने अपने परिवार के लिए एक 'शेड' तैयार किया। न वहाँ फर्श था, न दरवाजे, न दरीचे। तीन तरफ तो ठीक, लेकिन एक तरफ से तो वह बिलकुल खुला था। बर्फीली हवा सीधे अंदर आती थी। लेकिन थॉमस को लगा कि यह उनके और उनके परिजनों की गुजर के लिए पर्याप्त है। सन् 1816-17 की ठंड इतिहास की कड़ाके की ठंडक करार दी गई। उसका साक्षी रहा थॉमस का परिवार। ऐसे ही मौसम में थॉमस के साथ बालक अब्राहम काम कराता। वहाँ दासप्रथा थी—घनघोर गरीबी से उपजी सामाजिक बीमारी। थॉमस दासप्रथा के खिलाफ थे। हालाँकि इसकी वजह थॉमस का बेपटिस्ट चर्च का सदस्य होना

@Digitallibrary84

था। चर्च उन दिनों दासप्रथा के खिलाफ था। लिहाजा, इस धार्मिक कारण से थॉमस भी इसके खिलाफ थे। चर्च का सदस्य होने की वजह से वे दूसरे दुर्गुणों से भी दूर थे, जो उस समय के समाज का हिस्सा बन गए थे। इस तरह अब्राहम के मन में बचपन में ही दासप्रथा के विरुद्ध संघर्ष का बीजारोपण हो गया था। कंटेकी को संयुक्त राज्य में प्रवेश दास राज्य के रूप में ही मिला था। यह सन् 1792 की बात है। उस दौर में सामंत दासप्रथा समर्थक थे और उनके कहने का अभिप्राय आदेश हुआ करता था।

इंडियाना में जमीन का पट्टा हासिल करने में थॉमस को ज्यादा दिक्कत नहीं आई। एक तो चर्च की मदद, दूसरे यह इलाका ऐसा था, जहाँ ज्यादातर लोग आना नहीं चाहते थे। सर्दी के कारण यहाँ के लोग भालू और हिरण का शिकार करके खाते थे, ताकि अपने शरीर को गरम रख सकें। थॉमस और उनके बेटे अब्राहम ने यहाँ के घने पेड़ों को काटने के लिए कुल्हाड़ी उठाई, ताकि वे मक्के की खेती कर सकें और उसके लिए योग्य जमीन तैयार कर सकें। सात बरस की उम्र में अब्राहम के हाथ आई कुल्हाड़ी तेईस बरस तक नहीं छूटी।

उस इलाके में शुरु से ही 'दूध की बीमारी' नाम से एक बीमारी फैली हुई थी। यह मवेशियों, भेड़ों, घोड़ों से फैलती थी। उन्हें शायद किसी पेड़ विशेष की पत्तियाँ खाने से यह बीमारी होती थी। सन् 1818 में नैंसी हैंक्स पीटर बूरनर के काम में मदद करने अपने घर से आधा मील दूर चलकर जातीं। बूरनर की अचानक मृत्यु हो गई और नैंसी भी बीमार पड़ गई। नैंसी को पेट में दर्द होने लगा, उल्टियाँ शुरु हो गईं। उसके हाथ-पैर ठंडे होने लगे। वह बार-बार पानी माँगती। टॉम लिंकन की गहरी आस्था थी शकुन-अपशकुन पर। उसके कमरे के बाहर कुत्तों के रोने की आवाज आई तो उसे पक्का यकीन हो गया कि नैंसी अब नहीं बचेगी। वह फुसफुसाकर भी नहीं बोल पा रही थी। पक्षाघात और मूर्च्छा से जूझते हुए अपनी बीमारी के सातवें दिन 3 अक्तूबर, 1818 को उसका निधन हो गया।

अब्राहम लिंकन के राष्ट्रपति बन जाने पर उनकी माँ के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिशें हुईं, लेकिन कुछ ज्यादा पता नहीं चला। जंगलों में दुःख-तकलीफ सहते नैंसी ने अंतिम दिन गुजारे। अलग-अलग जीवनीकार इस बात पर भी एकमत नहीं हो सके कि नैंसी कैसी दिखती थीं। उनके बालों और आँखों के रंग पर भी अलग-अलग राय थी। उन्हें उनके चाचा-चाची के पास दफनाया गया। लेकिन आज कोई यह नहीं बता सकता कि उन तीन में से कौन सी कब्र में अब्राहम लिंकन की माँ चिरनिद्रा में हैं।

@Digitallibrary84

धीरे-धीरे थॉमस और अब्राहम के परिश्रम की कुल्हाड़ी ने उस जगह की काया बदल दी। खेती के सभी बुनियादी तरीके वे इस्तेमाल में लाने लगे। आमदनी भी बढ़ी। मगर तब तक नैंसी चल बसीं। इसके बाद थॉमस जल्दी ही समझ गए कि बिना नए जीवनसाथी के वे गृहस्थी की गाड़ी अकेले नहीं खींच पाएँगे। कंटेकी जाकर वे सराहदश जॉनसन से मिले। उसे पति की तलाश थी और थॉमस को पत्नी की। थॉमस शादी कर उसे इंडियाना ले आए। उसके आते ही घर की दशा बदल गई। फर्श बदला, दरवाजा लगा, दरीचे लगे। इतना ही नहीं, वहीं एक और खंड बनाकर सराह एवं थॉमस के बच्चों—डेनिस, अब्राहम और जॉन—के लिए अलग शयनकक्ष बनाया गया।

वह सराह ही थी जिसकी प्रेरणा, विश्वास और समर्पण के कारण थॉमस के पाँचों बच्चे क्राफर्ड के स्कूल में जाने लगे। हालाँकि स्कूल एक मील दूर था। मगर यहाँ भी नियति ने थॉमस लिंकन के साथ मजाक किया। क्राफर्ड स्कूल मात्र तीन महीनों में बंद हो गया। नतीजतन बच्चे साल भर तक स्कूली शिक्षा से वंचित रहे। पंद्रह बरस की उम्र में अब्राहम लिंकन को अक्षर-ज्ञान हो पाया, जिसकी मदद से वे थोड़ी कठिनाई से थोड़ा-बहुत पढ़ पाते थे। फिर वे लोग एजल डोर्सी के स्कूल में जाने लगे। वह घर से करीब चार मील दूर था। अब्राहम और उनकी बहन जंगल से होते हुए रोज स्कूल जाते। डोर्सी जोर से पढ़ाने में यकीन करते थे और उनकी मान्यता थी कि बच्चे भी जोर-जोर से बोलकर सबक याद करें। लिहाजा एक मील दूर से ही पता चल जाता था कि डोर्सी का स्कूल कहाँ है? स्कूल क्या था—वह भी लकड़ी के कैबिन में चलता था। अर्थात् टुकड़ों-टुकड़ों में अब्राहम मात्र वर्ष भर स्कूल जा पाए। बावजूद इसके वे पुस्तकें पढ़ना सीख गए। इतना ही नहीं, उन्हें पुस्तकें पढ़ने में रुचि भी जाग्रत् हो गई। वे खोज-खोजकर पुस्तकें पढ़ने लगे। उनकी लिखावट भी बड़ी साफ और स्पष्ट थी। भाषा और हस्तलिपि के प्रभाव के कारण आस-पास के लोग उनसे पत्र लिखवाने आते थे। अपने आरंभिक वर्षों के आरंभिक अध्ययन के चलते ही अब्राहम ने बेंजामिन फ्रेंकलिन की आत्मकथा और जॉर्ज वाशिंगटन की जीवनी पढ़ डाली। इसके अलावा लिंकन सबसे ज्यादा इतिहास की एक पुस्तक से प्रभावित हुए। वह पुस्तक थी 'संयुक्त राज्य का इतिहास'। ग्रीमशा की लिखी वह पुस्तक अमरीका की खोज और फ्लोरिडा के विलय का विवरणात्मक इतिहास व्यक्त करती है। इस पुस्तक से लिंकन उतने ही प्रभावित थे, जितने रस्किन की पुस्तक 'अन टु द लास्ट' से महात्मा गांधी। यहीं से उनमें दासप्रथा के खिलाफ बगावत पनपी। ग्रीमशा का चर्चित वाक्य 'दासप्रथा लालच और आधारहीनता का चरमोत्कर्ष है।' इसी पुस्तक में है। यह ध्वनि कि 'सभी समान रूप से जनमे हैं।' ग्रीमशा का सूत्र वाक्य था, जिसने लिंकन का जीवन बदल दिया। वह पाथेय,

@Digitallibrary84

जिस पर चलकर लिंकन अपने विचारों में प्रौढ़ और दृढ़ हुए और जिसने उन्हें एक वैचारिक ऊँचाई प्रदान की, वह ग्रीमशा से ही शुरू होता है।

अपने बचपन में लिंकन बच्चों को इकट्ठा करते और उनसे बातचीत करते हुए चुटकुले सुनाना न भूलते। इसी तरह एक साथ दो घटनाएँ हुईं। एक, उनके भीतर लगातार क्रमबद्ध रूप में अपने को व्यक्त करने का तरीका पैदा हुआ। दूसरे, सामनेवाले को अपनी कही बातों से बिना असहमति का वक्त दिए सहमत करने की क्षमता का विकास हुआ। इसे ही अगुआई करने की सामर्थ्य कहते हैं। लंबे बाजू और 6 फीट 4 इंच के कद की वजह से लिंकन के साहस व शारीरिक क्षमता का लोहा तो सभी मानते ही थे, उनके धाराप्रवाह बोलने की वजह से उनकी उम्र के अधिसंख्य लड़के उनके कायल हो गए। लिहाजा लिंकन बचपन से ही एक नायक की प्रतिच्छवि के युवक थे। जीतता हुआ युवा, प्रतिस्पर्धा में आगे दिखाई देती ऊर्जा का प्रतिनिधि युवक। इसीलिए लिंकन को इस बात की कोई परवाह नहीं होती थी कि उनका परिधान कैसा है अथवा उनके साथी कैसी पोशाक पहनते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति उन्हें इस बात की इजाजत भी नहीं देती थी। वे इतने गरीब थे कि अंकगणित की पुस्तक भी नहीं खरीद सके थे। इसके लिए उन्होंने कागज की एक कॉपी बनाई और दोस्त से अंकगणित लेकर उसे पूरा उतार लिया। वह कॉपी पर बनी पुस्तक उनके साथ अंतिम समय तक रही।

तरुणाई ने उन्हें एक साथ कविता और गद्य में भी निपुण बना दिया था। वे अनवरत अपने विचारों और काम को प्रकाशित करवाना चाहते थे। विलियम वुड के पास वे अपनी कविताओं को लेकर गए भी थे। राजनीति पर लिखे उनके लेखों से एक अभिभाषक इतना प्रभावित हुआ कि उनके एक लेख को ओहियो के एक अखबार में छपवाया। लेख मद्य-निषेध से संबंधित था। मजा यह कि वह लेख महज उपदेश नहीं था, प्रेरणादायी था। उसे पढ़ते हुए पाठकों के मन में मद्यपान न करने का विचार आने लगता था। यह लिंकन की अपनी शैली थी।

लिंकन को लिखने की प्रेरणा उनके साथ खेलनेवाले बच्चों से ही मिली थी। हम सबके आस-पास अनेक घटनाएँ घटती रहती हैं, लेकिन उनसे जो सीखते हैं, समय उन्हें ही महान् लोगों की श्रेणी में खड़ा करता है। हुआ यूँ कि एक बार लिंकन और उनके दोस्त खेल रहे थे। खेल-खेल में वे एक कछुआ ले आए और उसे धधकते कोयले पर ला पटका। वे उसे जिंदा ही भूनने पर उतारू थे। लिंकन ने पहले तो उन साथियों को मना किया और फिर नंगे पैर ही जलते कोयलों को 'किक' मार दी। उनका पहला निबंध भी 'पशुओं के साथ दयालुता' विषय पर था। अपनी 'टूटी-फूटी शिक्षा' के बावजूद उनके भीतर ज्ञान के प्रति प्रेम और सीखने की असीम प्यास थी। सन् 1847 में वे कांग्रेस में शामिल हुए। उस समय

@Digitallibrary84

उन्होंने अपने जीवनवृत्त की 'शिक्षा' के हाशिए को खाली छोड़ दिया था। इस पर उनसे किसी ने पूछा कि इसका मतलब क्या है? इस पर लिंकन ने कहा था —'टूटी-फूटी शिक्षा'।

अध्यापन के प्रति अँकुआई अभिरुचि ने लिंकन का प्रवेश एकदम नई जादुई दुनिया में कराया, जिसका सपना भी लिंकन ने कभी नहीं देखा था। इसने लिंकन के क्षितिज को न केवल और व्यापक बना दिया, बल्कि इससे लिंकन को नया नजरिया भी मिला। उनकी सौतेली माँ अपने साथ एक छोटा सा वाचनालय ले आई थीं। उसमें 'सिंदबाद का व्यापारी', 'रॉबिन्सन क्रूसो', 'बाइबिल' आदि पुस्तकें थीं। इन पुस्तकों से पर्याप्त रोशनी लेने के बाद भी लिंकन की आँखें थकीं नहीं, बल्कि वे जरूरी उजास की तलाश में भटकने लगे। वे किताबें और अखबार जुटाने लगे। ऐसे ही ओहियो नदी के किनारे टहलते हुए एक दिन उन्हें इंडियाना के पुनरीक्षित कानून की प्रतिलिपि मिली। उसी के बाद उन्होंने अमरीका के संविधान और स्वाधीनता की घोषणा को पहले-पहल पढ़ा।

एक बार की बात है, पुस्तकों की पिपासा के कारण वे अपने पड़ोसी से पारसन वीम्स की लिखी पुस्तक 'वाशिंगटन' ले आए। आधी रात से भी ज्यादा जागकर वे उसे पढ़ते रहे। सुबह भी जल्दी-जल्दी पुस्तक पढ़ी; लेकिन थोड़ी असावधानी के चलते किताब पानी में भीग गई। लिंकन अपने पड़ोसी को जब किताब लौटाने गए तो उसने पानी में भीगी किताब लेने से इनकार कर दिया। लिंकन के पास किताब का मूल्य चुकाने के पैसे तो थे नहीं, लिहाजा उन्हें तीन दिन तक पड़ोसी किसान के घर काम करना पड़ा। उसके बाद ही उनकी जान छूटी। इसी तरह एक बार लिंकन के हाथ 'स्कॉट के अध्याय' नामक किताब लग गई। उसमें सिसरो और डिमॉस्थेंस के भाषण थे। शेक्सपियर के अनेक पात्रों से परिचय भी इसी पुस्तक के जरिए हुआ। इसी से लिंकन जनता को संबोधित करने की प्रक्रिया से रु-बरु हुए। पुस्तकों के प्रति बढ़ती अभिरुचि और नए ज्ञानालोक के बीच भी लिंकन को हमेशा कुछ-न-कुछ काम करना पड़ता था। खेतों में हो या किसी मकान का काम करना हो या लकड़ी के लट्ठे सरकाने का काम या घोड़ों की रखवाली का काम, वे किसी भी काम को करते हुए पढ़ना नहीं भूलते थे। उनका परिवार भोजन पर उनका इंतजार करता और वे पढ़ने में निमग्न रहते। अदालतों के सत्रों के समय वे 15-15 मील पैदल चलकर वकीलों के धारदार तर्कों को सुनने जाते।

सन् 1830 की सर्दियों में एक बार फिर 'दूध की बीमारी' से लोग मरने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया। टॉम लिंकन ने भी वहाँ से पलायन की तैयारी की। अपना खेत 80 डॉलर में बेच दिया। कुछ सूअर और अन्न बेचा, कुछ अपने साथ की यात्रा के लिए रख लिया। एक भारी-भरकम बोझा तैयार किया और

@Digital library84

इलिनॉइस की घाटी के लिए रवाना हुए, जिसे 'संगामान' कहा जाता था— अर्थात् ऐसी जगह, जहाँ पर्याप्त भोजन हो। कुल जमा वह एक बैलगाड़ी थी, जिस पर जरूरत से ज्यादा बोझा लदा था। करीब दो सप्ताह तक धीमे-धीमे चरर-चूँ करती गाड़ी पहाड़ी हिस्से के एकदम सुनसान इलाके में विलाप करती हुई टूट गई। आस-पास का वातावरण बेहद कड़ा और रूखा था। हर्नडन ने इस बारे में लिखा है कि एक बार लिंकन ने खुद उसे इस भयानक यात्रा का वर्णन सुनाया था। उनके अपने शब्दों में—"वह एक उबाऊ, थकाऊ और दर्दनाक यात्रा थी। दिन का थोड़ा ही हिस्सा बरदाश्त होता था, बाद में तो हाड़ कँपानेवाली सर्दी होती थी। रास्ते में बर्फ पिघल चुकी थी। उन्हें बाबाश नदी मिली। ऐसे में उनका कुत्ता गाड़ी से कूद गया। वह डूबने लगा। उसे डूबता देख लिंकन से रहा नहीं गया और वे बर्फीले पानी में उसे बचाने के लिए कूदे और उसे बचा भी लिया। जैसे-तैसे सभी लोग संचमन नदी पार कर डेकाटर गाँव पहुँचे। डेकाटर जैसे प्रतीक्षा कर रहा था। वहाँ अब्राहम को काफी कुछ करने और अपने को साबित करने का मौका मिला।

डेकाटर की जमीन अब्राहम लिंकन के पहले राजनीतिक भाषण की भी साक्षी रही है। संयोगवश सही मगर पहली बार यहीं पर लिंकन ने अपने प्रवाहपूर्ण ओजस्वी भाषण से जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया। इससे पहले जनता दो राजनीतिक सोच के बोझिल भाषणों से ऊब चुकी थी।

इस तरह डेकाटर में लिंकन का जीवन थोड़ा व्यवस्थित हुआ। मगर अब्राहम अपने पिता से अनेक मामलों में असहमत होते जा रहे थे। उसमें शिक्षा की उपेक्षा भी एक जरूरी मुद्दा था। अपने 21वें वसंत को पार करने पर वे संगामो शहर चले गए। एक बार वे संगमोन नदी पार कर रहे थे। उनके पास डोंगी थी। उसका संतुलन बिगड़ गया और वे बर्फीले पानी में गिर गए। मेजर वार्निक के घर पहुँचने से पहले ही उनके पैर ठंड के कारण अकड़ गए। करीब महीने भर तक अब्राहम चल नहीं पाए। वहीं रहे। इससे पहले वे मेजर की बेटी पर मोहित हो गए। बात को मन में रखना उस नौजवान ने नहीं सीखा था। उसने अपनी बात उनकी बेटी से कह भी दी। यह सीधे-सीधे विवाह का प्रस्ताव था। उसने मेजर को यह बात बता दी। यूँ तो मेजर वार्निक लिंकन से काफी प्रभावित थे, मगर यह बात उन्हें रास नहीं आई। उनकी त्योरियाँ चढ़ गईं। मेजर की बेटी उस कुरूप, मूर्ख और अशिक्षित आदमी से विवाह करेगी! उसके पास न धन है, न संपत्ति और न कोई भविष्य। खेतों में दो दशक बिताने के बावजूद उसके पास बित्ते भर जमीन भी नहीं थी।

संगामो शहर में अब्राहम डोंगी चलाते। वहाँ से वे एक व्यापारी का माल लेकर न्यू ऑर्लियंस में बिकवाने में मदद करते। इससे पहले वे बढ़ईगिरी, क्लर्की कर

@Digitallibrary84

चुके थे। मगर धीरे-धीरे वे अपने संकल्प को पुष्ट करने में जुटे थे। कानून पढ़ते हुए एक बेहतर राजनीतिज्ञ के रूप में जीवन को गढ़ने का संकल्प लिया। घटना सन् 1931 की है। लिंकन संगामो से एक व्यापारी का माल लादकर न्यू ऑर्लियंस जा रहे थे, तभी उनकी नाव न्यू सलेम गाँव के सामने रुक गई। वहाँ दरअसल एक बाँध था। नाव में गेहूँ, मक्का व सूअर का मांस लदा था। वजन इतना अधिक था कि नाव आगे नहीं बढ़ पा रही थी। उसमें पानी भरने लगा। इससे लोगों में उत्तेजना फैल गई और कुतूहल भी कि लिंकन और उनके साथी इस नाव को सामान के साथ कैसे पार पहुँचाएँगे। लिंकन पानी में उतर गए, उन्होंने आगे के सामान को पीछे की ओर धकेल दिया। नतीजतन नौका का आगे का हिस्सा ऊपर उठ गया और वह नदी पार पहुँच गई। न्यू सलेम के जितने लोग देख रहे थे, वे सभी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इस पूरे घटनाक्रम को ऑफट नामक एक व्यापारी भी देख रहा था। दरअसल, वह मिसीसिपी नदी से न्यू ऑर्लियंस की यात्रा पर था। उसने कहा, 'मैं तुमसे अत्यधिक प्रभावित हूँ। तुम जैसे कर्मठ और परिश्रमी को एक दिन अपनी मंजिल जरूर मिलेगी। मैं लौटकर आऊँगा तो यहाँ एक स्टोर खोलूँगा। मैं तुम्हें उसका प्रबंधक नियुक्त करूँगा।' जुलाई में लिंकन वहाँ पहुँचे, लेकिन ऑफट का स्टोर नहीं खुला था। इस दौरान फिर उन्हें तरह-तरह के काम करने पड़े। ऐसे काम, जिनमें ताकत लगती थी। अर्थात् हाड़-तोड़ मेहनत से उस नौजवान ने अपनी रोजी-रोटी चलाई।

सितंबर में ऑफट ने अपना वादा निभाया और स्टोर खुल गया। उसने लिंकन को अपने स्टोर का मैनेजर भी नियुक्त कर दिया। यह वह समय था, जब न्यू सलेम व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित हो रहा था। कस्बे में लकड़ी चीरने का आराघर था। यह नदी के बहाव की ताकत से चलता था। लुहार, बढ़ई और तरह-तरह के काम करनेवालों के साथ अनेक स्टोर भी खुल गए थे। स्वाभाविक रूप से व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा भी वहाँ गहराने लगी। डेंटन ऑफट को अपना स्टोर चलाना था। इसलिए वह लिंकन की प्रशंसा किया करता। कई बार तो प्रशंसा प्रशस्ति में बदल जाती। वह लिंकन को न केवल समझदार और बौद्धिक संपन्नता से युक्त बताता, बल्कि उनकी शारीरिक क्षमता का ढिंढोरा भी पीटता। स्पर्धा के दौर में इस तरह की बातें दूसरे समूह को रास नहीं आतीं। पास में कैटीग्रूव नाम का गाँव था। वहाँ जैक आर्मस्ट्रांग रहता था। आर्मस्ट्रांग मजबूत कद-काठी का पहलवान था। उसके प्रशंसक इस बात से खिन्न रहते थे कि ऑफट बेवजह लिंकन की ताकत के गीत गाता है। उन्होंने शर्त लगा ली और आर्मस्ट्रांग से लड़ने के लिए ऑफट को चुनौती भिजवा दी। लिंकन को यह सब पसंद नहीं था। वे अपनी ताकत और मानसिक मजबूती का इस्तेमाल गुलाम-प्रथा के विरुद्ध करना चाहते थे। अपनी शारीरिक क्षमता को बैल की तरह खर्च करने में उनकी रुचि नहीं थी। लिंकन ने इनकार कर दिया। मगर ऑफट के दबाव

@Digitallibrary84

और दूसरे लोगों के उकसावे में अंततः आर्मस्ट्रांग से लड़ना पड़ा। दोनों के बीच हुए मल्लयुद्ध में लिंकन हर बार प्रभावी रहे; लेकिन कुश्ती बॉक्सिंग के नियमों को धकियाते हुए आर्मस्ट्रांग ने बाजी मार ली। पर लिंकन की शक्ति का लोहा पूरे क्षेत्र ने एक स्वर से स्वीकार कर लिया।

फिर भी लिंकन ने इस क्षेत्र में आगे कोई प्रयास नहीं किया। उनकी दोस्ती और संपर्क पहलवानों के बजाय बौद्धिकों से बढ़ने लगा। वे वहाँ के वाद-विवाद क्लब के सदस्य भी बन गए। क्लब में निरंतर गतिविधियाँ होती रहती थीं और प्रत्येक को अपना क्रम आने पर कुछ-न-कुछ बोलना होता था। लिंकन की विषय के प्रति समझ, उसके समर्थन में जुटाए गए तर्क और प्रवहमान भाषा ने श्रोताओं का मन मोह लिया। सभी इस बात पर सहमत थे कि एक दिन लिंकन की वाक्पटुता उन्हें शीर्ष पद तक ले जाएगी। ऑफट लिंकन से इतना प्रभावित था कि वह अपना काम बढ़ाता और उसकी जिम्मेदारी लिंकन पर डाल देता। लिंकन भी उसे निश्चिंत कर देते। लिंकन की ईमानदारी, हिसाब-किताब रखने की क्षमता, ग्राहकों और दूसरे लोगों के साथ विनम्र व्यवहार ने अनेक लोगों को लिंकन का प्रशंसक बना दिया था। इस दौर में भी लिंकन कोर्ट की कारवाई देखने का समय निकाल लेते। इसी के चलते उनकी अभिरुचि कानून में बढ़ी और धीरे-धीरे वे कानून का भी अध्ययन करने लगे। कानून में उनकी प्रवीणता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है कि वे जल्दी ही कानूनी दस्तावेज तैयार करने और सलाहें भी देने लगे थे। इतना ही नहीं, क्षेत्रीय विकास में भी उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। पानी में काम करने का उनके पास अनुभव था—एक योग्य नाविक जैसा अनुभव। इसी कारण उन्होंने सोचा कि संगमोन नदी का उपयोग नौकायन के लिए कैसे किया जाए। इसके लिए उनकी अपनी योजना थी। इस बारे में उन्होंने एक स्थानीय अखबार में लेख भी लिखा। यूँ लेखन की दृष्टि से वह लेख बचकाना था, फिर भी उसमें उनकी योजना का तर्कपूर्ण विवरण और आगामी विधायिका के चुनाव में खुद के खड़े होने की घोषणा शामिल थी। न्यू सलेम कस्बा संगमोन नदी के मुहाने पर बसा था, अतः नदी का उपयोग ज्यादा-से-ज्यादा व्यापारिक कार्यों के लिए किया जाए, यही सबकी इच्छा थी और माँग भी। मगर विरोध कहाँ नहीं होता! यहाँ भी एक समूह ऐसा था, जो नदी की उपेक्षा का इलिनाय नदी को स्प्रिंगफील्ड और जैक्सनविले से जोड़ना चाहता था, वह भी रेल लाइन के जरिए। ऐसा होने से न्यू सलेम का प्रभाव समाप्त हो जाता। न्यू सलेम की ओर से लिंकन का मुद्दा यह था कि संगमोन नदी का विकास हो और उसका जलमार्ग अधिसंख्य व्यापारियों को लाभ पहुँचाए। ऐसा होगा तो तैयार माल बाहर से आ सकेगा। हम कृषि की पैदावार बाहर भेज सकेंगे, जिससे उद्योग-धंधों के लिए अपेक्षाकृत नई संभावनाएँ खुलेंगी। इन्हीं तर्कों और निष्पत्तियों के कारण सन् 1832 की वसंत ऋतु में वाद-विवाद क्लब के

@Digitallibrary84

सदस्यों ने लिंकन के फैसले पर मुहर लगा दी, ताकि स्थानीय विधानसभा में एक ऐसा जन-प्रतिनिधि पहुँचे, जिसे वहाँ की भौगोलिक एवं सामाजिक जानकारी हो और यह न्यू सलेम को नई शक्ल दे सके।

मगर इस बीच फिर उनकी किस्मत ने उन्हें संघर्ष में घसीट लिया। सिपाही का अनुभव उनसे जुड़ा नहीं था। वह भी पूरा हो गया। हुआ यूँ कि इलिनाय के पश्चिम में मिसीसिपी नदी के पार रेड इंडियन आदिवासियों का इलाका था। इलिनॉय और आदिवासी इलाके के नेताओं में संधि थी कि वे एक-दूसरे के इलाकों में प्रवेश नहीं करेंगे। बावजूद इसके रेड इंडियनों के नेता ब्लैक हॉक ने संधि तोड़कर इलिनॉय पर हमला कर दिया। स्वाभाविक रूप से अमरीकियों के लिए यह एक राष्ट्रीय संकट था। इससे निपटने के लिए सेना में नई भरती हुई। लिंकन अपने साथियों के साथ वर्ष 1832 में भरती हो गए। इससे पहले की कहानी यह है कि धीरे-धीरे उनके स्टोर के मालिक ऑफट का व्यापार एकदम चौपट हो गया था। इस वजह से उसने अपना स्टोर और दूसरा कामकाज बंद कर दिया था। ऑफट के इस फैसले से लिंकन फिर सड़क पर आ गए थे। इसके तत्काल बाद हुई सेना की भरती में लिंकन स्वयंसेवक बन गए। परंपरा के अनुसार स्वयंसेवकों को अपना नेता चुनना था। लिंकन भारी समर्थन से नेता चुने गए। इससे उन्हें पर्याप्त संतोष मिला। उन्हें लगा कि उनके परिश्रम और प्रतिबद्धता की पहचान हो गई है। लोग अब उन्हें उनके ध्येय, निष्ठा और समर्पण के कारण पहचानने लगे हैं। यह उनके लिए सुकून भरा समय था। इसलिए भी कि जैक आर्मस्ट्रांग उनका पहला सार्जेंट बना। अप्रैल से जुलाई तक लिंकन इस काम में लगे रहे। यहीं उन्हें अनेक मित्र मिले, जो बाद के जीवन में भी उनसे जुड़े रहे। इसी के बाद लिंकन न्यू सलेम पहुँचे, जहाँ के लोग उनकी अपनी घोषणा के अनुसार लिंकन के चुनाव लड़ने की प्रतीक्षा कर रहे थे। वैसे चुनाव लड़ना लिंकन जैसे के वश की बात नहीं थी। इसलिए भी कि सिर्फ कुछ दोस्तों और शुभचिंतकों के बल पर चुनाव नहीं जीते जाते। पर लिंकन ने हिम्मत नहीं हारी, हौसला नहीं खोया। वे न्यू सलेम को आत्मनिर्भर व्यापारिक कस्बा देने के लिए प्रतिबद्ध थे। वे संगमोन नदी के उपयोग के तर्क दे रहे थे और विरोधी प्रचारित कर रहे थे कि नदी का जल स्तर गिर रहा है, इसलिए यहाँ स्टीमर नहीं चल पाएँगे। लिंकन ने अपनी स्थापना के समर्थन में परचा निकाला। उसमें सिर्फ संगमोन नदी के जलमार्ग के रूप में विकसित किए जाने की बात ही नहीं थी, बल्कि विरोधियों पर तीखा प्रहार था। लिंकन ने साबित किया कि रेल योजना पर होनेवाला खर्च लाभ की तुलना में कहीं अधिक है। उन्होंने कहा कि वे नेशनल बैंक के भी पक्ष में हैं। परचे के उपसंहार में लिंकन ने कहा कि अगर वे जीत जाते हैं तो क्षेत्र के विकास के लिए काम करेंगे, परंतु हार भी जाते हैं तो उनके लिए असहनीय नहीं होगा। इसलिए कि वे निराशा सहने के अभ्यस्त हैं।

@Digitallibrary84

जल्दी ही पता चला कि एक स्टीमर 'तलिस्मान' सिनसिनाटी से चलकर संगमोन नदी के लिए रवाना हुआ है। इसका उद्देश्य संगमोन नदी पर स्टीमरों के उपयोग की संभावनाएँ तलाशना था। वैसे उसे पोर्टलैंड लैंडिग तक आना था। इस बीच लिंकन न्यू सलेम के अपने समर्थकों के साथ बर्ड्स टाउन पहुँच गए और स्टीमर का प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया। ऐसा इसलिए भी संभव हो पाया कि संगमोन नदी के जलमार्ग के रूप में इस्तेमाल किए जाने की बात करने के जनक लिंकन ही थे। लिंकन 24 मार्च, 1832 को उस स्टीमर को पोर्टलैंड लैंडिंग तक ले जा सके। इससे लिंकन का प्रभाव-क्षेत्र भी बढ़ा और उनके समर्थकों की संख्या भी। चुनावी दौड़ में बारह प्रत्याशी मैदान में थे। वहाँ की परंपरा और राजनीतिक रिवाज के अनुसार हर प्रत्याशी को घूम-घूमकर अपना परिचय देना होता था और वह वोट क्यों चाहता है, इस पर अपनी दलील भी देनी होती थी। लिंकन ने भी ऐसा किया। कद छह फीट चार इंच, सिर पर किसानों जैसी सरकंडे की हैट, अपने शरीर से छोटे कपड़े और धूप से भूरा हो गया बदन लेकर लिंकन लोगों के पास गए। वे अपने समर्थकों के प्रति सरोकारी थे कि वे सभी उनके स्पंदन का हिस्सा थे। एक बार वे कहीं सभा कर रहे थे कि विरोधी खेमे में से किसी ने उनके एक समर्थक को पीट दिया। इस पर वे अपना भाषण छोड़कर मंच से नीचे उतर आए और पीटनेवाले को उठाकर फेंक दिया। वह करीब बारह फीट दूर जा गिरा। भीड़ उनके साथ थी। लोगों की शुभाकांक्षा थी कि लिंकन चुनाव जीत जाएँ, लेकिन वे जीत न सके। पराजय के दंश से उन्हें भी गहरा आघात लगा। इस पर भी वे टूटे नहीं, बल्कि और दृढ़ता के साथ, और मजबूत इरादों के साथ उन्होंने अपनी प्रतिबद्धताएँ दोहराईं तथा काम में लग गए।

चुनाव खत्म हो गए थे। लिंकन के पास पैसे थे नहीं। वे कुछ-न-कुछ करने की सोच रहे थे। तभी न्यू सलेम में अपना स्टोर चला रहे दो भाई स्टोर से उकता चुके थे। उनका नाम हर्नडन था। उनमें से एक ने अपना हिस्सा लिंकन के दोस्त बेरी को बेच दिया और दूसरे ने अपना हिस्सा लिंकन को। लिंकन को अपना हिस्सा ईमानदारी और दूसरी वजहों से मिला। इसमें पैसे का लेन-देन नहीं हुआ। पैसे थे भी नहीं। कुछ ही दिनों में इसी तरह उनके हाथ एक और स्टोर भी जुड़ गया। बेरी व्यवसाय में लग गया और लिंकन बचे हुए समय को अध्ययन से भरने में। स्टोर के समय में लिंकन सिर्फ पुरुष ग्राहकों से ही संवाद करते थे। पुस्तक- प्रेमी होने के नाते वे पैदल चलकर जाते, ताकि अच्छी पुस्तकें पढ़ सकें। शेक्सपियर के अनेक नाटक वे कंठस्थ कर चुके थे। यहीं उन्होंने रोलिंस की लिखी 'दुनिया का इतिहास' पुस्तक पढ़ी। अव्वल तो इस कस्बे में सीमित आमदनी के लोग रहते थे, फिर भी थोड़ा-बहुत स्टोर चलता तो वे लोग निष्णात व्यापारी की तरह व्यवहार नहीं करते थे। वहाँ सबसे ज्यादा शराब की बिक्री थी। इसी से प्रेरित होकर बेरी ने शराब बिक्री के लिए लाइसेंस की माँग की। बेरी और लिंकन के

@Digitallibrary84

नाम से लाइसेंस मिला, फिर भी उनका स्टोर बच न सका। उसे बंद करना पड़ा। इस बीच शराब बेचते-पीते बेरी लिंकन का साथ छोड़ गया और पीछे छोड़ गया ढेर सारा कर्ज! उसे चुकाने में लिंकन को करीब डेढ़ दशक लग गया।

बेरी के गुजर जाने के बाद लिंकन की स्थिति फिर खराब हो गई। रोजमर्रा की जिंदगी गुजारने लायक तो जुट नहीं पाता था, ऊपर से कर्ज की स्थिति। 7 मई, 1834 को उनके शुभचिंतकों ने उनके लिए ग्रामीण पोस्ट मास्टर का काम खोज लिया। गाँव में सप्ताह में दो बार डाक आती। जिनके पते लिखे होते, उन्हें डाक थमाई जाती और उनसे डाक खर्च लिया जाता था। इसी में पोस्ट मास्टर का थोड़ा कमीशन भी होता था। लिंकन तीन बरस तक पोस्ट मास्टर रहे। इतने वर्षों में वे ज्यादा कुछ नहीं कर पाए, अलबत्ता फुरसत में बैठकर पढ़ने का लुत्फ जरूर उठाते रहे। लिंकन के दोस्त जानते थे कि उनके लिए इससे बेहतर काम तलाशना होगा और उन्हीं लोगों के संपर्क व प्रभाव के कारण लिंकन को एक ऐसा काम मिला, जिसके योग्य वे नहीं थे। काम था जिले के सर्वे का। उन्हें न ज्यामिति का पता था और न किसी विषय का। नई पीढ़ी को जानकर अचरज होगा कि लिंकन ने उस काम के लिए खुद को योग्य बनाया। संबंधित विषय का पर्याप्त अध्ययन किया। फिर उसे नियत समय में पूरा किया। उन्हें गाँव-गाँव, तालाब-तालाब, हर अच्छी-बुरी जगह जाना होता था। इस काम में दो लोग उनके सहायक थे। शाम को जब वे लोग लौटते तो उनके कपड़े फटेहाल हो जाते। इसके बावजूद उन्होंने अपने काम को पूरी निष्ठा और मनोयोग से संपन्न किया। उसके पूरे होने पर काम देनेवाले अफसर इतने खुश हुए कि लिंकन को अंतरराज्यीय सर्वे का काम भी दिया गया। वैसे वह काम उन्हें जॉन केलहॉन ने दिया था। वे देश के सर्वेक्षक और धुर डेमोक्रेट थे। बाद में लिंकन ने कहीं कहा भी कि वे अब तक वाद-विवाद में मिले सभी प्रतिद्वंद्वियों में सबसे भयंकर प्रतिपक्षी थे। नेंकर अब्राहम की मदद से लिंकन सर्वे के काम में निपुण हो गए थे। उन्होंने इसे तब तक किया जब तक कि वे अपनी वकालत का काम नहीं करने लगे। आश्चर्य इस बात का है कि इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि लिंकन ने अपना काम पर्याप्त सजगता के साथ किया।

समय का सदुपयोग और अपनी निर्बलता को सबलता में बदलने का जुनून अब्राहम लिंकन की अद्भुत चारित्रिक विशेषताओं में है। अपने पोस्ट मास्टर के कार्यकाल में वे अनेक साहित्यकारों के संपर्क में आए। उनमें वोल्टायर, बोलनी, टॉम पेइने जैसे हस्ताक्षर भी शामिल हैं। सन् 1834 में लिंकन एक बार फिर प्रत्याशी बनाए गए। मैदान में तेरह प्रत्याशी थे। चार चुने जाने थे। एक पार्टी थी डेमोक्रेट, उसके अध्यक्ष थे एंड्रू जैक्सन और दूसरी सुधारवादी, उसके नेता थे हेनरी क्ले। लिंकन क्ले के करीबी थे। सर्वे से इतना पैसा मिल गया था कि लिंकन ने अपना थोड़ा-बहुत कर्ज भी चुकाया और चुनाव के नाम से वे चिंतित

@Digitallibrary84

भी नहीं हुए। उस समय उनके एक विरोधी ने कहा था कि पार्टी को इससे उम्दा उम्मीदवार नहीं मिल रहा था। मगर इस बार उनकी वाक्पटुता, विषयों पर पकड़, विपक्षियों को ध्वस्त करते उनके धारदार तर्क, गजब का आत्मविश्वास— इस सबने उनकी विजय का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसके बाद वे लगातार तीन और कार्यकालों के लिए भी चुने गए। यह लिंकन का पहला विजयी राजनीतिक बपतिस्मा था। सन् 1836 में जब वे दूसरी बार के लिए चुनाव लड़ने मैदान में उतरे तब तक राज्य की राजधानी स्प्रिंगफील्ड हो गई थी। पहली बार जब लिंकन चुनाव जीते तो उनके पास विधानसभा में पहनने लायक कपड़े भी नहीं थे। उन्होंने सूट के लिए पैसे उधार लिये थे।

@Digitallibrary84

2

पहला पायदान

एकतरफ राजनीति की पाठशाला लिंकन को नए अध्यायों से परिचित करा रही थी, वहीं दूसरी तरफ न्यू सलेम का एक पात्र जैक केलसी लिंकन को अंग्रेजी साहित्य की स्वर-साधना समझा रहा था। वैसे जैक केलसी उस कस्बे का अत्यंत असफल आदमी था। इतना असफल कि उसे कस्बे के लोग हिकारत की नजर से देखते थे; लेकिन अब्राहम लिंकन को वह बहुत पसंद था। इतना अधिक कि लिंकन जल्दी ही उसके लँगोटिया दोस्त बन गए थे। लिंकन उसकी विद्वत्ता से बहुत प्रभावित थे। केलसी को 'हेमलेट' पढ़ते हुए और 'मैकबेथ' को मुँहजबानी सुनाते हुए देखना लिंकन को मंत्रमुग्ध कर देता था। केलसी की इस सामर्थ्य ने पहली बार लिंकन को बताया कि अनंत सौंदर्य होता क्या है। भावनाओं का उद्रेक ज्वार कैसे बनता है? शेक्सपियर ने अब्राहम लिंकन से श्रद्धा ली और बर्न्स ने उनका प्रेम जीत लिया। शायद इसलिए भी कि बर्न्स लिंकन की तरह गरीब था। उसका जन्म भी उसी तरह काठ की कोठरी में हुआ था। इसलिए भी कि उसके रूपक और विशेषण उन लोगों की जिंदगी से मिलते थे जिनके हाथ रीते थे। इसलिए भी कि बर्न्स अपने शुरुआती जीवन में किसान था। लेकिन बर्न्स और शेक्सपियर की कविताओं ने, उनके सॉनेट्स और ट्रेजडी ने लिंकन की दुनिया में भावना व प्रेम के सैकड़ों नए गवाक्ष खोले। एक और बात, जो शायद लिंकन को भावोद्रेक से भरती होगी, वह यह कि दोनों ही महाविद्यालय भी नहीं गए थे। इतना ही नहीं, दोनों की स्कूली शिक्षा भी अब्राहम लिंकन से ज्यादा नहीं थी। कभी-कभी लिंकन भी उन्हें पढ़ते हुए सोचते कि वे टॉम लिंकन के अर्द्धशिक्षित बेटे भी इसी तरह किसी विशेष काम के लिए जनमे हैं। लिंकन का यह प्रेम तब भी जिंदा रहा जब वे व्हाइट हाउस चले गए—अमरीका के राष्ट्रपति बनकर। उस दौर में गृहयुद्ध की चिंता की रेखाएँ उनके चेहरे पर, धँसे हुए गालों पर तथा उभरती झुर्रियों में साफ दिखाई देती थीं। उस समय भी लिंकन अपने निजी दोस्तों के साथ 'मेकबेथ' को जोर-जोर से बोलते हुए सुनाते और उस नाटक में खो जाते।

@DigitalLibrary84

नई विधानसभा के सदस्य बनने के बाद लिंकन ने अपनी तैयारी विंडेलिया के लिए की। यहीं विधानसभा का पहला अधिवेशन होना था। अपने आरंभिक दिनों में वे सिर्फ अपनी तैयारी में लगे होते, कानून के अध्यवसाय में। नतीजतन, ऐसे विधायक, जो नया बिल लाने की तैयारी करते, उस बिल को लिंकन से लिखवाते। ऐसा होते-होते न केवल उनकी कानूनी समझ बल्कि मनुष्य के सरोकार के लिए जूझती उनकी आत्मा के भी दर्शन विधायकों को होने लगे। वे धीरे-धीरे लिंकन का शब्द-सामर्थ्य, कानूनी पकड़ और विश्लेषण के कायल होने लगे। इससे लिंकन की बौद्धिक धाक जमती चली गई।

नई विधानसभा के पहले अधिवेशन की तैयारी लिंकन ने जमकर की। इसमें 200 डॉलर का ऋण लेने से लेकर अध्ययन भी शामिल था। आरंभ में वे मुखर नहीं हुए। वे समझना चाहते थे कि संसदीय प्रणाली का कामकाज कैसे चलता है, कारवाई कैसे होती है? अधिवेशन के संपन्न होने पर उन्हें अपने वेतन का बकाया 158 डॉलर मिला। उस समय 258 डॉलर मिला करते थे, लेकिन दिसंबर में ही लिंकन 100 डॉलर हासिल कर चुके थे। यह रकम लिंकन द्वारा कमाई गई सबसे बड़ी रकम थी। इस बीच बेरी ऐंड लिंकन के पूरा कर्ज न चुकाए जाने पर कुर्की का आदेश आ गया। सन् 1835 की गरमी और वसंत में लिंकन के पास ज्यादा कुछ काम नहीं था। वे अब तक 26 बरस के हो गए थे। उनकी सादगी, भोलापन, स्पष्टता और धारदार तर्कों के प्रभाव के चलते अनेक लड़कियों ने उनमें दिलचस्पी दिखाई, लेकिन कोई भी लिंकन के मन को नहीं छू पाई। साहित्य और समाज के अध्ययन के कारण लिंकन मन से चलनेवाले रिश्ते का मान करते थे। जीवन सदैव व्यक्त होता रहता है। अव्यक्त तभी तक माना जा सकता है, जब तक जीवन नहीं है। न्यू सलेम गाँव की आर रसेज पर लिंकन की नजर पड़ी। आन रसेज भी भोली सी लड़की थी। लिंकन उसके प्रति गंभीर थे। मझोले कद की, गोल-मटोल उस नीली आँखोंवाली लड़की ने लिंकन के जीवन में प्रेम का उजाला कर दिया था। उस जमाने में रजाई बनाने के लिए लोग इकट्ठा होते। यह एक उत्सव की तरह होता था। आस-पास जहाँ कहीं भी उसका आयोजन होता, आन रसेज को जरूर बुलाया जाता। लंबी उँगलियों में सुई को पकड़कर हलके हाथों वह चलाती तो देखनेवाले उसकी कला के कायल हो जाते। लिंकन जहाँ भी इस तरह का आयोजन होता, उसे अवश्य ले जाते। फिर भी साँझ ढले आन से मिलने की इच्छा रह जाती। एक बार तो लिंकन ने बड़ा साहस किया। वह जहाँ रजाई बना रही थी वहाँ भीतर तक चले गए और आन की पीठ से लगकर बैठ गए। उसके हाथ में सुई थी, लेकिन वह आड़ी-तिरछी चलने लगी और चेहरा ललाई साँझ की तरह रक्तिम! वहाँ की बूढ़ी महिलाएँ समझ गईं। उन्होंने आपस में इशारे भी किए। वह रजाई वर्षों तक सँभालकर रखी गई और लिंकन के राष्ट्रपति बनने पर उसे यह कहकर प्रदर्शित किया गया कि इसके टाँके

@Digitallibrary84

लिंकन की प्राणवल्लभा ने लगाए हैं। आन के चिरनिद्रा में चले जाने के बाद लिंकन अमर्त्यता/मर्त्यता के बारे में सोचते। वर्षों बाद तक लिंकन उसकी कब्र तक पैदल चलकर जाते और घंटों खड़े ताकते रहते। व्हाइट हाउस पहुँचने पर भी वे ये पंक्तियाँ भूल नहीं पाए—

"जैसे लहरों पर आती लहरें

करती हैं एक-दूजे का पीछा

वैसे गीत और शोक गीत

मुसकान और आँसू

छोड़ते नहीं किसी का पीछा

ऐसे आशा और निराशा

सुख और दुःख

धूप और बारिश में

अन्वित है एक-दूजे में।"

अर्थात् एक जगह है, जहाँ लिंकन से पहले उनका हृदय दफनाया गया। उसकी टीस उन्हें आजीवन सालती रही। आन को टायफाइड हो गया था और उसे बचाया न जा सका। इससे लिंकन बहुत आहत हुए। इतने ज्यादा कि वे अवसाद में चले गए। न्यू सलेम गाँव अपनी भौगोलिक समस्याओं के चलते पलायन का शिकार हो रहा था। सड़क, जलमार्ग और रेलमार्ग की सुविधाएँ न होने से वहाँ के अधिसंख्य लोग पीट्सबर्ग जाने लगे। लगने लगा था कि वह दिन दूर नहीं जब लिंकन को भी अपनी यह कार्यस्थली छोड़नी होगी। ऐसे हालात में सन् 1835-36 में विधानसभा का विशेष शीतकालीन अधिवेशन हुआ। अधिवेशन में डेमोक्रेट और सुधारवादी छवि की पार्टी के लोग आमने-सामने थे। इसी में जिले की विधानसभा सीटों का परिसीमन किया गया। इसके चलते संगमन काउंटी को चार के बजाय सात प्रतिनिधि चुनने का अधिकार मिल गया। इसके साथ ही इलिनॉय और शिकागो नदियों को जोड़कर नहर बनाने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। इससे मिशिगन झील के जरिए मिसीसिपी नदी जुड़नी थी। नदी जोड़ योजना का लिंकन ने समर्थन किया। संभवतया इसलिए भी कि वे किसी भी कीमत पर अपने राज्य का विकास करना चाहते थे। बुनियादी और आधारभूत संरचना के विकास की अवधारणा भी 'लिंकन सिद्धांत' मानी जाती

@Digitallibrary84

है। इसीलिए वे व्यापार एवं संचार व्यवस्था को और बेहतर तथा व्यापक बनाने पर जोर देते रहे।

सन् 1836 के चुनाव में लिंकन फिर जीते और पहले से अधिक मतों से। स्प्रिंगफील्ड उनका कार्यक्षेत्र बनने लगा। इस बार वे जीते हुए सदस्यों के एक दल के नेता भी चुने गए। हालाँकि वे सभी संगमोन के थे। कहा यह भी जाता है कि उन सभी का कद छह फीट या उससे ज्यादा ही था। विकास लिंकन की राजनीति का मुख्य सूत्र था। इसके लिए उन्होंने एक महत्त्वाकांक्षी और बृहत् योजना का समर्थन किया। इसके लिए पैसा राज्य में एक करोड़ डॉलर के बॉण्ड से हासिल होना था। इसके तहत विकास की अनेक योजनाएँ थीं। इसमें उत्तर से दक्षिण तक एक तथा पूर्व से पश्चिम तक दो रेल लाइनें बिछाने, सभी को एक-दूसरे से जोड़ने, इलिनॉय-मिशिगन नहर को पूरा करने जैसे काम शामिल थे। काम शुरू भी हुआ, लेकिन आर्थिक कठिनाइयों और जबरदस्त विरोध के कारण उसे बीच में ही रोक देना पड़ा।

इस बीच राजधानी का मुद्दा गरमाया। लिंकन स्प्रिंगफील्ड को राजधानी बनाना चाहते थे। इसके लिए उनके पास भौगोलिक तर्क थे। लेकिन उनके विरोधी अपने-अपने चुनाव क्षेत्र को राजधानी के लिए उपयुक्त बता रहे थे। डेमोक्रेट नेता लिंडर ने लिंकन पर नकेल कसने के लिए घोषणा करवा दी कि वे स्प्रिंगफील्ड के इलिनॉय स्टेट बैंक के हिसाब-किताब की जाँच करवाएँगे। इस पर बैंक अफसर लिंकन के पास पहुँचे और उनसे स्पष्टीकरण माँगा। 1 जनवरी, 1837 को लिंकन ने विधानसभा में अपना पहला लंबा भाषण दिया। उन्होंने कहा कि विपक्षी अपनी अपेक्षाओं को सच समझ रहे हैं, इसलिए राजनीति से प्रेरित इस तरह के आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने न केवल लेखा-परीक्षण के कागजात प्रस्तुत किए, बल्कि स्प्रिंगफील्ड को राजधानी बनाने के बारे में एक बिल भी पारित करा लिया। लिंकन की प्रस्तुति, उनके विचार और विकास के संदर्भ में उनकी प्रस्थापनाओं को पर्याप्त प्रचार मिला। इससे लिंकन की लोकप्रियता बढ़ी और वे पढ़े-लिखे व कर्मठ विधायकों में शुमार किए जाने लगे। जल्दी ही उन्हें हाई कोर्ट में बतौर वकील काम करने की इजाजत मिल गई। वे एक घोड़े पर दो बैग लादकर न्यू सलेम के लोगों से विदा लेते हुए स्प्रिंगफील्ड चले गए। यह 15 अप्रैल, 1837 की बात है। शहर तो निश्चित था, लेकिन शहर में गंतव्य अनिश्चित था। अर्थात् न तो उनके पास पैसे थे, न कोई घर, जिसकी छत तले अपने नए जीवन का परिकलन कर सकें। वहाँ उनकी भेंट मि. स्पीड से हुई। स्पीड वहाँ स्टोर चलाते थे। उन्होंने लिंकन को स्टोर में ही अपने साथ रहने का प्रस्ताव दिया। वहाँ एक कमरे में दो पलंग थे। हालाँकि वहाँ आने के पीछे कई कारण थे। यहीं से सुधारवादी पार्टी अर्थात् ह्विग का अखबार निकलता था। स्प्रिंगफील्ड शहर राजधानी बन रहा था। सीमांत नगर होने से आबादी भी

@Digital library84

करीब 1,500 थी। लिंकन के संपर्क में स्वाभाविक रुप से वे सभी लोग आ गए, जो स्पीड के साथ थे। इन्हीं में संगामो जर्नल के संपादक फ्रांसिस, अभिभाषक स्टुअर्ट जैसे सज्जन भी थे। इसके अलावा अनेक नौजवान भी थे, जो वहीं आस-पास रहते थे। लिंकन उनके बीच जल्दी ही लोकप्रिय हो गए। उसकी वजह लिंकन की वक्तृत्व क्षमता थी। वे अनेक विषयों पर धाराप्रवाह बोलते। उनकी भाषा का प्रवाह नदी जैसा था। नया समूह जल्दी ही लिंकन का अपना समूह बन गया। स्टुअर्ट ने लिंकन को प्रैक्टिस जमाने में मदद की। उनकी अपनी एक बड़ी लाइब्रेरी थी, जो किसी अच्छे वकील के लिए जरूरी होती है। इसलिए लिंकन को वहाँ प्रैक्टिस जमाने के लिए ज्यादा एडियाँ नहीं रगड़नी पड़ीं। स्टुअर्ट में राजनीतिक अभीप्साएँ भी थीं। यह भी एक वजह थी, जिसके चलते दोनों करीब आए। संगामो जर्नल के संपादक फ्रांसिस लिंकन से इतने प्रभावित हुए और कहा कि वे जब भी जो भी लिखेंगे, उसे अपने अखबार में प्रकाशित करेंगे।

स्प्रिंगफील्ड बड़ा नगर था। यहाँ वकील भी ज्यादा थे। यह वह समय था, जब वकीलों के पास न तो सचिव (मुंशी) होता था, न टंकण मशीन। सबकुछ खुद ही लिखना और सँभालकर रखना होता था। लिंकन लिखने में प्रवीण थे, लेकिन सँभालकर रखना उनसे संभव नहीं होता था। एक-एक कागज खोजने में पर्याप्त समय लगता था। वे लोग ज्यादातर दीवानी (सिविल) मुकदमे लेते थे और फीस में अपने पक्षकार से पाँच डॉलर लेते थे। यही आमदनी ही स्टुअर्ट और लिंकन में आधी-आधी बँट जाती थी। दोनों की कुशलता, व्यावहारिकता और केस जीतने के कारण उनकी प्रैक्टिस अच्छी चलती थी। 8 नवंबर, 1839 को स्टुअर्ट प्रतिनिधि सभा के सदस्य बन गए। उसके बाद ही लिंकन की निजी प्रैक्टिस शुरु हो पाई। बावजूद इसके लिंकन की महत्त्वाकांक्षा वकालत में प्रसिद्धि पाने तक ही खर्च न हो पाती थी। वे गगनचुंबी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा के धनी थे। यद्यपि वे यह भी मानते थे कि वकालत उनके लिए राजनीति में उतरने की जरूरी सीढ़ी है। इसलिए भी वे ऐसे प्रकरण की तलाश में रहते थे, जिससे उन्हें पर्याप्त ख्याति मिले। और एक दिन उन्हें ऐसा मामला मिल गया। मई 1837 में मैरी एंडरसन अपने बेटे रिजर्ड के साथ लिंकन के पास आई। वह न्याय चाहती थी। उसकी दस एकड़ की जमीन पर जेम्स एडम्स ने कब्जा कर रखा था। जमीन स्प्रिंगफील्ड के उत्तर में थी। जेम्स एडम्स स्प्रिंगफील्ड के प्रभावशाली डेमोक्रेट नेता थे। लिंकन को समझते देर न लगी कि यह प्रकरण उन्हें अपेक्षानुकूल यश दिलाएगा। राजनीति करते हुए भ्रष्टाचार अथवा राजनीति का अनुचित इस्तेमाल का यह शायद पहला मामला था। कागजों पर साफ था कि मैरी एंडरसन के पति उस जमीन का स्वामित्व रखते हैं। लिंकन ने उस मामले की जोरदार तैयारी की और अपनी विजय में कोई शंका न रह जाए, इसलिए एक और वरिष्ठ वकील लोगन को भी अपने साथ जोड़ लिया। इससे डेमोक्रेट जेम्स एडम्स इतना

@digitallibrary84

उद्वेलित हो गया कि लिंकन पर अनर्गल आरोप लगाने लगा। दीवानी मुकदमे थोड़े लंबे चलते ही हैं, यह भी चला। इस बीच सन् 1843 में एडम्स की मृत्यु हो गई।

ऐसा भी नहीं था कि स्प्रिंगफील्ड में जाते ही सब लिंकन को चाहने लगे थे। उन्होंने काफी समय एकाकी गुजारा और उन लोगों के साथ भी, जो समय को व्यर्थ खर्च करने में बहादुरी मानते हैं। सन् 1839 में एक महिला से उनकी भेंट हुई, जिसका नाम मैरी टोड था। उसने लिंकन को विवाह का प्रस्ताव दिया। मैरी टोड के परिवार में जनरल, गवर्नर और नेवी में सचिव भी रह चुके थे। मैरी की पढ़ाई भी एक अच्छे फ्रेंच स्कूल में हुई थी। उनका परिवार फ्रांस की राज्यक्रांति के समय वहाँ से भागकर आया था। उन्होंने मैरी को पर्शियन उच्चारण के साथ फ्रेंच बोलना सिखाया था। मैरी को यहीं बेहतर नृत्य का प्रशिक्षण भी मिला था। इससे मैरी उच्चाभिमानिनी हो गई थी। अतिप्रशंसा से उसमें अपने विशिष्ट होने का भाव अहंकार की हद तक हो गया था। इतना ही नहीं, उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि एक दिन वह एक ऐसे व्यक्ति से विवाह करेगी, जो किसी दिन अमरीका का राष्ट्रपति बनेगा। विश्वास करना, भरोसा करना मन के भीतर की स्थिति है। मैरी मन में ऐसा सोचती तो भी चल जाता, क्योंकि भीतर की मनःस्थिति से किसी का ताल्लुक नहीं होता है। शायद इसलिए भी कि उसका ठीक-ठीक पता लगना भी असंभव है। मगर मैरी ने तो एक दिन हद ही कर दी और इस बारे में घोषणा कर दी कि उसकी शादी जिससे भी होगी, वह एक दिन इस देश का राष्ट्रपति बनेगा। स्वाभाविक रूप से जैसा होता है, बड़बोलापन लोगों को रास नहीं आता। मैरी को जितने लोगों ने ऐसा कहते सुना, सबने अपनी तरह से बातें बनाईं, हँसी उड़ाई। यह हँसी खिल्ली उड़ाने की तरह थी। इसका पता चलने पर भी मैरी बाज नहीं आई। उसकी बहन ने एक बार मैरी के बारे में कहा था—उसे चमकदार वस्तुएँ लुभाती हैं। वह प्रदर्शन में विश्वास रखती है और मैं आज तक जितनी भी महिलाओं से मिली हूँ, उनमें मैरी सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी है। अपने गुस्सैल स्वभाव, तुनकमिजाजी के चलते ही मैरी एक दिन घर से झगड़कर अपनी बहन के यहाँ रहने चली गई। उसकी बहन स्प्रिंगफील्ड में रह रही थी। इसी वजह से उसका यहाँ आना हुआ और लिंकन से मुलाकात भी। मगर उसकी इच्छा अमरीका के भावी राष्ट्रपति से विवाह की थी और वह यहीं रहता था। सन् 1860 में जिनकी नियति ने जिन्हें राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया, उनमें डेमोक्रेट स्टीफन ए. डगलस और रिपब्लिकन पार्टी के अब्राहम लिंकन वहीं रहते थे।

मैरी की मुलाकात दोनों महानुभावों से हुई। वह डगलस से भी मिली और लिंकन से भी। मैरी के कथनानुसार—दोनों ने ही उसकी बाँहें थामने का उसे भरोसा दिया था। इतना ही नहीं, विवाह के लिए प्रस्तावित भी किया था। उससे जब भी पूछा

जाता कि वह किससे विवाह करेगी, उसका जवाब होता कि जिसके राष्ट्रपति बनने की संभावना अधिक होगी। अर्थात् जो संभावित है, उसी से विवाह होगा। इस कसौटी पर डगलस ज्यादा खरे उतर रहे थे। वे राज्य के सेक्रेटरी थे। इसलिए उनकी संभावनाएँ लिंकन की तुलना में सौ गुना ज्यादा थीं। लिंकन एक संघर्षशील अभिभाषक से ज्यादा कुछ नहीं थे। ऐसा अभिभाषक, जो स्पीड के स्टोर में रहता था और कई बार उसका बिल भी नहीं दे पाता था। लिंकन को जब तक लोग अपने राज्य से बाहर जानते तब तक डगलस अमरीकी राजनीति के अन्यतम शक्ति बन चुके थे। उनके धाराप्रवाह वाक् क्षमता का औसतन अमरीकी कायल था।

डगलस की सामाजिक प्रतिष्ठा किसी की भी तुलना में कहीं ज्यादा थी। उसका बात करने का अंदाज, शब्द चयन, तर्क और सुंदर व्यक्तित्व उसे महिलाओं में भी लोकप्रिय बनाने के लिए पर्याप्त थे। उसकी धीर-गंभीर और संप्रेषित वाणी, नृत्य करने की अप्रतिम क्षमता की दीवानी मैरी भी थी। वह उसके सपनों का आदर्श पुरुष था। एक बार उसने आईने में निहारते हुए फुसफुसाया था—'मैरी टोड डगलस!' उसे यह सब न केवल प्रीतिकर लगा बल्कि उसने एक साँस में ही ह्वाइट हाउस के भी सपने देख डाले। बहरहाल, डगलस के दुर्व्यवहार के बहाने मैरी ने उससे किनारा कर लिया। सीनेटर बीबेरीज ने बताया था कि डगलस ने एक बार मैरी को विवाह का प्रस्ताव दिया था; लेकिन उसकी बुरी आदतों की वजह से मैरी ने उसे स्वीकार नहीं किया। जो भी हो, डगलस एक सजग और व्यावहारिक व्यक्ति था। उसने दोबारा कभी मैरी को विवाह के लिए प्रस्तावित नहीं किया। इससे मैरी बहुत दुखी हुई, उसने चाहा कि डगलस में उसे लेकर भी ईर्ष्या जनमे। ऐसा तभी संभव हो सकता था, जब मैरी किसी ऐसे आदमी के साथ डगलस को दिखाई दे, जो डगलस का विरोधी हो। महिलाएँ ऐसा मानती हैं कि विरोधी व्यक्ति के करीब पहुँचकर वह अपने पुरुष के मन में ईर्ष्या जगा सकती हैं। यही मैरी भी सोच रही थी। इसी कारण उसने लिंकन का चयन किया। आरंभ तो इसलिए था कि अंत का प्रारंभ हो जाए, लेकिन वह हो न सका। डगलस फिर कभी नहीं लौटा और अंततः मैरी लिंकन की परिधि में समा गई।

मैरी की बहन एडवर्ड ने कहीं लिखा है कि मैं कई बार उस कमरे में गई, जहाँ लिंकन और मैरी बैठे थे। मुझे लगा कि लिंकन उसकी कुशाग्रता और चतुराई से खासे प्रभावित थे; लेकिन ज्यादातर वे उसे सुनते रहते थे—अपनी ओर से ज्यादा कुछ कहे बिना। जैसे निहार रहे हों अपने गंतव्य को पाकर।

जुलाई का महीना था। चाँदनी छिटकी हुई थी। लिंकन का भाषण था, मैरी की उपस्थिति में संभवतया पहला राजनीतिक भाषण। लिंकन प्रखर वक्ता थे ही। उनके भाषण पर जनता में समर्थन की लहर दौड़ गई। इसके बाद उनके बाजू में

@Digitallibrary84

खड़े होकर मैरी ने कहा कि तुम अद्भुत वक्ता हो। देखना, एक दिन तुम अमरीका के राष्ट्रपति बनोगे। लिंकन ने उसे आपादमस्तक निहारा, हथेली छुई और भाल पर नेह-कवच मढ़ दिया। उसके बाद जनवरी 1841 का महीना विवाह के लिए तय हुआ।

पूरे छह माह थे, लेकिन इस बीच अनेक तूफानों को आना था। लंबे समय तक दोनों में प्रेम की पींगें नहीं चल सकीं। मैरी टोड को लिंकन का पहनना-ओढ़ना कतई पसंद न था। वह उनकी तुलना अपने पिता रॉबर्ट टोड से किया करती, जो लेक्सिंगटन की सड़कों पर शानदार सूट और हाथ में सोने की गोल मूठवाली छड़ी लेकर टहलने के लिए मशहूर थे। उनकी तुलना में लिंकन के कपड़े एक बदहवास आदमी के कपड़े मालूम होते थे। गरमी में उन्हें कोट पहनना पसंद न था, इसलिए वे नहीं पहनते थे। अपनी पैंट पर वे महज एक ही गेलिस इस्तेमाल करते। एकाध बटन टूट जाने की स्थिति में वे पिन लगा लेते थे। यानी उन्हें चीजों से सुंदर दिखने का चाव न था। इसके उलट मैरी को दिखावा पसंद था। वह मानती थी कि मनुष्य जैसा है वैसा तो बाद में पता चलेगा, लेकिन उसका पहला प्रभाव उसकी वेशभूषा से ही पड़ता है। इसलिए वह व्यवस्थित होना ही चाहिए। मैरी टोड अपने निश्चय और विचार में फर्क नहीं करती थी। वह जो सोचती, उसे निश्चय में बदल लेती और फिर वैसा करने पर खुद भी आमादा हो जाती तथा आस-पास के लोगों को भी आमादा करती। ऐसा ही मैरी ने लिंकन के साथ भी किया। पहले तो उसने लिंकन की वेशभूषा पर उनका ध्यान दिलाया और तत्काल अपने पिता से तुलना करते हुए उनकी निंदा शुरू कर दी। उसकी बातों में उस अनुराग का अभाव था, जिसे लिंकन जैसा पुरुष खोज रहा था। शायद मैरी ने अपने शानदार स्कूल में फ्रेंच नृत्य तो सीखा, लेकिन दोषारोपण न करते हुए कहने की युक्ति नहीं सीखी थी। इसकी वजह से लिंकन धीरे-धीरे मैरी से दूर होने लगे। मैरी शॉर्टकट में विश्वास रखती थी। लेकिन उसकी इसी आदत ने लिंकन के मन से उसके प्रेम का उन्मूलन कर दिया।

मगर जल्दी ही लिंकन की मुलाकात मतिरादा से हो गई। वैसे वह मैरी टोड की रिश्तेदार थी। लंबी, छरहरी और चित्ताकर्षक मतिरादा मैरी की तरह फ्रेंच नहीं बोल पाती थी और न ही नृत्य में उसके बराबर पारंगत थी! बावजूद उसके मतिरादा को पुरुषों से कैसे पेश आया जाए या वे क्या पसंद करते हैं, बखूबी मालूम था। कई बार मैरी टोड कुछ कह भी रही होती तब भी लिंकन मतिरादा को निहारने में इतने मगन रहते कि वे सुन भी नहीं पाते कि मैरी क्या कह रही है। लिंकन का मतिरादा की ओर झुकाव मैरी को रास नहीं आ रहा था। वह मन-ही-मन कुपित हो रही थी। एक बार तो लिंकन मैरी को डांस में बार ले गए, लेकिन उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि मैरी किसके साथ कैसे डांस कर रही है। वह तो एक कोने में मतिरादा के साथ बतियाने में व्यस्त थे। यह सब मैरी जैसी

@DigitalLibrary84

स्वभाव की लड़की को उत्तेजित करने के लिए पर्याप्त था। उसने लिंकन से और सारी बातों के साथ यह भी कह दिया कि वह मतिरादा को प्रेम करने लगे हैं। मगर अपने स्वभाव के विपरीत लिंकन ने इसका खंडन नहीं किया, बल्कि माना कि शायद तुम ठीक सोच रही हो।

इसके बाद लिंकन ने सोचा कि वह और मैरी दो ध्रुव हैं। दोनों का विवाह बे-मतलब होगा। दोनों की रुचि, आचार-व्यवहार, पसंदगी और पारिवारिक पृष्ठभूमि में जमीन-आसमान का अंतर है। बेहतर हो कि इस सगाई को खत्म कर दिया जाए। नजरिए और स्वभाव का यह अंतर किसी को भी उद्वेलित कर सकता है। इसी नतीजे पर मैरी की बहन और जीजा भी पहुँचे। वे मैरी से कह रहे थे कि बेहतर होगा कि वह इस विवाह के बारे में विचार करना बंद कर दे। 'तुम दोनों एक-दूसरे के बिलकुल विपरीत हो। इसलिए विवाह के बाद खुश रहना एकदम मुश्किल हो जाएगा।' लेकिन मैरी सुनने को तैयार नहीं थी।

लिंकन इस बात को मैरी से साफ-साफ कह देना चाहते थे। लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी। कुछ रिश्ते कुछ समय इसलिए भी चल जाते हैं कि बड़े फैसले सुनाने की हिम्मत नहीं होती। एक दिन लिंकन ने इसके लिए एक तरकीब निकाली। उन्होंने एक पत्र लिखा और स्पीड को पढ़ने को दिया। उसमें साफ लिखा था कि मैंने बहुत इत्मीनान से इस बात पर विचार किया और इस नतीजे पर पहुँचा कि अब मैं तुम्हें प्रेम नहीं करता। इसलिए विवाह संभव नहीं है। लिंकन चाहते थे कि वह पत्र स्पीड मैरी टोड तक पहुँचा दे। किंतु इसके लिए स्पीड राजी नहीं हुआ। उसने कहा, "अगर तुममें हिम्मत है तो जाकर मैरी से कहो कि तुम उससे प्यार नहीं करते और शादी का सवाल ही नहीं उठता। मगर याद रखना, ज्यादा कुछ मत कहना, और अधिक देर रुकना भी मत।" स्पीड ने इस बारे में लिखा कि लिंकन ने इस पर अपने कोट के बटन खोले और निश्चयी मुद्रा में धीरे-धीरे वहाँ से चले गए। करीब ग्यारह बजे रात को लिंकन लौटे।

स्पीड और एक मित्र उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके आते ही स्पीड ने कहा, "जैसा कहा था, किया?"

उन्होंने जवाब दिया, "किया।" फिर बताना शुरु किया, "मैंने जैसे ही मैरी से कहा कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता, उसके आँसुओं का बाँध टूट गया। आँसू उसके गाल से बह रहे थे और मुझे लग रहा था वे मैरी के गाल को नहला रहे हैं। सच कहूँ तो मैंने उसे अपनी बाँहों में थाम लिया और भाव-विभोर होकर अनेक नेह कवच मढ़ दिए।"

इस पर स्पीड ने कहा, "तो इस तरह तुम सगाई तोड़कर आ रहे हो! तुमने मूर्ख की तरह व्यवहार किया है। इस तरह तो तुमने सगाई को फिर से पक्का कर दिया।"

@Digitallibrary84

विवाह की तारीख तय होने लगी; लेकिन लिंकन इस बीच फिर अवसाद के शिकार हो गए। उन्होंने विवाह के लिए स्वीकृति दे दी थी, लेकिन शायद उनकी आत्मा विद्रोह कर रही थी। उन्होंने खाना कम कर दिया था। तीन बजे रात को उठकर भाग जाते और शून्य में ताकते बैठे रहते। न तो वह अपने दफ्तर जाते और न ही उनकी इच्छा होती कि वह विधानसभा जाएँ। इस बीच लिंकन ने डॉ. डेनियल ड्रके को लिखा कि उनकी तबीयत इस तरह की है। वे कुछ उपाय बताएँ। मगर उन्होंने देखे बिना इलाज करने से मना कर दिया। वे बड़े मशहूर डॉक्टर थे और मेडिकल कॉलेज के विभागाध्यक्ष भी थे।

विवाह की तारीख 1 जनवरी, 1841 तय हुई थी। नए वर्ष की पहली साँझ और विवाहोत्सव, उत्साह दुगुना था। एडवर्ड का घर चमचमा रहा था। उत्तेजना एवं रोमांच से सारा माहौल सराबोर था। शाम करीब साढ़े छह बजे अतिथियों ने आना शुरू कर दिया। 7.45 बजे मंत्रीजी आ गए। उन्हीं की उपस्थिति में चर्च विवाह की रस्म अदा की जाने वाली थी। पटाखे छोड़े जा रहे थे। 7.30 बजे तक लिंकन नहीं पहुँचे। प्रतीक्षा चिंता में बदलने लगी। विवाह मंडप से दूल्हा नदारद था। क्या हुआ? कोई अनहोनी तो नहीं हो गई? परिवार के लोग एक-दूसरे से मशविरा में लग गए। कोई कुछ नहीं समझ पा रहा था, कोई कुछ नहीं सोच पा रहा था।

दूसरे कक्ष में मैरी टोड सिल्क के परिधान में दुलहन बनी प्रतीक्षा करती रही। वह बार-बार उठती और बेचैनी से खिड़की से झाँकती। उसकी आँखें घड़ी की सुइयों से हट नहीं रही थीं।

करीब 9.30 बजे अतिथि एक के बाद एक फुसफुसाते हुए विदा होने लगे। घरवाले शर्मसार! अंतिम अतिथि के जाने के बाद मैरी का घूँघट हटा; लेकिन अपने ही बालों में लगे फूलों को तोड़ते हुए वह फट पड़ी। उसकी रुलाई रुक नहीं रही थी। उसके दुःख का पारावार न था। वह सोच रही थी कि हे ईश्वर! लोग क्या सोचेंगे? लोग मुझे देखकर हँसी उड़ाएँगे, फब्तियाँ कसेंगे। एक पल पहले तक वह लिंकन की बाँहों की कामना कर रही थी। प्रतीक्षा कर रही थी। दूसरे ही पल उनकी इस हरकत पर वह उनकी हत्या करने के खयाल से भर उठी। मगर वह गए कहाँ? उन्होंने कोई चालबाजी की? या कोई एक्सीडेंट हो गया? या वह पलायन कर गए? या उन्होंने आत्महत्या कर ली? हर विचार एक नए किस्म के खयाल को लेकर आता। मगर हकीकत कोई नहीं जानता था।

पूरी रात लोग खोजते रहे, मगर लिंकन नहीं मिले। दूसरे दिन लिंकन अपने दफ्तर में बैठे मिले—बड़बड़ाते हुए। उनके दोस्तों को लगा कि उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। मैरी टोड के रिश्तेदारों ने उनकी यह दशा देखी तो कहा कि

@Digitallibrary84

लिंकन पागल हो गया है। डॉ. हेनरी को तत्काल बुलाया गया; लेकिन लिंकन ने कहा कि वह आत्महत्या कर लेंगे। इस पर डॉक्टर ने कहा कि उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। स्पीड और बटलर उन पर नजर रखें। डॉ. हेनरी चाहते थे कि लिंकन व्यस्त रहें। वह अपना काम करते रहें। लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा था। वह विधानसभा भी नहीं जा रहे थे। 19 जनवरी को सदन में जे. हार्डिन ने लिंकन के बीमार होने की घोषणा की।

इसके बाद लिंकन ने अपने एक मित्र को चिट्ठी लिखी। वह शायद लिंकन की लिखी तमाम चिट्ठियों में सबसे अधिक निराशा से भरी चिट्ठी है। लिंकन ने लिखा था—"मैं शायद दुनिया का सबसे दुःखी मनुष्य हूँ। मुझे पता नहीं कि मैं अब कभी ठीक हो पाऊँगा या नहीं।" वह लगातार मृत्यु के बारे में सोचने लगे। इतना ही नहीं, उन्होंने मृत्यु पर एक कविता भी लिखी, जो 'संगामो जर्नल' में छपी भी थी। इस सबसे लिंकन का मित्र स्पीड काफी परेशान हो गया। उसे लगने लगा—शायद लिंकन को बचाना मुश्किल है। स्पीड लिंकन को लेकर अपनी माँ के पास गया। वे लुइसविले में रहती थीं। वहाँ उसका बड़ा सा शयनागार था। उन्हें 'बाइबिल' दी गई। इस बीच श्रीमती एडवर्ड ने लिंकन को एक पत्र लिखा कि यदि वह चाहते हैं तो मैरी टोड उन्हें हमेशा के लिए इस रिश्ते से आजाद कर देगी और यदि वह चाहते हैं कि रिश्ता बरकरार रखा जाए तो उन्हें फिर से आकर रिश्ते को नएपन से अपनाना पड़ेगा। मगर लिंकन ने उसका कोई जवाब नहीं दिया। इस घटना के एक वर्ष बाद भी लिंकन के दोस्त मानते रहे कि लिंकन का जीवन अब ज्यादा नहीं है। लिंकन ने इस बीच मैरी टोड और उसके परिवारवालों से हर तरह का संबंध विच्छेद कर लिया। वह यह मानते थे कि इतनी भद्द पिटने, अवमानना होने के बाद मैरी टोड जैसी तेज-तर्रार युवती अब तक किसी दूसरे को खोज चुकी होगी। मगर सच्चाई यह नहीं थी। मैरी टोड हर उस शख्स को जवाब देना चाहती थी, जिसने फब्ती कसी थी, जिसने लिंकन को भला-बुरा कहा था, जिसने उसके को मूर्खतापूर्ण फैसला बताया था। मैरी टोड की जिद थी कि यदि वह बीमार हैं तो वह उन्हें ठीक करेगी अथवा उनके ठीक होने का इंतजार करेगी। मगर किसी और आदमी को तरजीह नहीं देगी। वह किसी और के साथ जीवन गुजारने की सोच भी नहीं सकती। दूसरी तरफ लिंकन अपनी बत्तीस बरस की उम्र में मैरी से काफी दूर जा चुके थे। इतनी दूर कि उन्होंने अपनी उम्र से आधी उम्र की लड़की को विवाह का प्रस्ताव दे दिया था। वह श्रीमती बटलर की छोटी बहन थी। उसका नाम सराह रिकार्ड था। लेकिन उसने इनकार कर दिया। सराह ने अपनी दोस्त को लिखी चिट्ठी में लिखा था—"लिंकन एक अग्रज दोस्त की तरह तो ठीक हैं, मगर उनसे शादी के बारे में मैं नहीं सोचती। मैं अभी सिर्फ सोलह बरस की हूँ और शादी के बारे में गंभीर भी नहीं हूँ।"

@Digitallibrary84

लिंकन 'स्प्रिंगफील्ड जर्नल' में संपादकीय लिखा करते थे। इससे उनकी सिमोन फ्रांसिस से गहरी दोस्ती हो गई थी। उनकी पत्नी चालीस वर्ष की अवस्था में स्प्रिंगफील्ड में जोड़े मिलाने के लिए प्रसिद्ध थी। अक्तूबर 1842 में श्रीमती सिमोन फ्रांसिस ने एक दिन पत्र भेजकर दोपहर को लिंकन को बुलवाया। लिंकन को समझ नहीं आया कि आखिर उन्होंने क्यों बुलवाया है। फिर भी वह इनकार न कर सके। वहाँ पहुँचकर वह भौंचक्के रह गए। वहाँ मैरी टोड बैठी थी। नरमदिल लिंकन के पास इस भेंट के बाद भागने का कोई रास्ता नहीं बचा था। वह रोई और लिंकन ने अपने बाजू उसकी तरफ बढ़ा दिए, जिनमें माफी थी और आगे के जीवन का भरोसा। उसके बाद वे लगातार मिलते रहे, लेकिन गुपचुप। इस मुलाकात के बारे में मैरी टोड ने अपनी बहन को भी नहीं बताया। वह तब तक इस रिश्ते को छुपाना चाहती थी जब तक यह उजागर करने लायक नहीं हो जाए। अंत में मैरी टोड सफल हो गई और 4 नवंबर, 1842 को शुक्रवार के दिन लिंकन एवं मैरी टोड का विवाह हो गया। उन्होंने अपनी शादी की अँगूठी पर लिखवाया—'प्रेम शाश्वत है'।

जीवन शुरू हुआ। लेकिन स्वभाव अपेक्षित घटनाओं के साथ बदलता नहीं बल्कि अनपेक्षित के समय मनुष्य अधिक स्वभावगत हो जाता है। जैसे किसी का स्वभाव यदि बात-बात पर रोष व्यक्त करना है अथवा कोई व्यक्ति गुस्सैल है तो वह कभी बदलता नहीं। लिंकन और मैरी टोड ने डॉ. अर्ली का घर किराए पर लिया। डॉ. अर्ली का निधन हो गया था। श्रीमती अर्ली अकेली रहती थीं। लिंकन नाश्ता कर रहे थे। तभी उन्होंने ऐसा कुछ कह दिया कि मैरी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया और उसने कॉफी का प्याला लिंकन के चेहरे पर दे मारा। यह सब देखनेवाले कई लोग थे। लिंकन क्षुब्ध होकर चुपचाप बैठे रहे। उस समय श्रीमती अर्ली भीगा हुआ तौलिया लेकर आईं और लिंकन का चेहरा तथा कपड़े साफ किए। सीनेटर बेबेरिज के अनुसार श्रीमती लिंकन की आवाज उस पूरी गली में रात को सुनी जा सकती थी। आस-पड़ोस के लोग तो उनके वाक्यों को जस-का-तस सुना सकते थे। वह शायद एक प्रकार की प्रतिहिंसा थी। वह सदा शिकायत करती रहती और अपने पति की आलोचना। उसके लिए उनका कुछ भी अच्छा नहीं था। यहाँ तक कि वह उनके उठने-बैठने, चलने-फिरने तक का मजाक बनाती। वह कहती कि लिंकन की चाल में गरिमा दूर-दूर तक नहीं झलकती। सिर के पास लिंकन के बड़े-बड़े कानों की भी वह आलोचक थी। उनके हाथ और पैरों की तुलना में उनका सिर बेहद छोटा है। अर्थात् लिंकन बे-अनुपाती हैं। यह उसका रोज का तकियाकलाम हो गया था। हर्नडन का मानना है कि वह बेवजह चिल्लानेवाली स्त्री नहीं थी। उसे लिंकन अपने आचरण से ऐसा कुछ करने को प्रेरित करते थे। जैसे—वे जब भी टहलने जाते तो उनका कोट सदैव गंदा रहता। उस पर ब्रश फिराने की जरूरत होती।

@Digitallibrary84

मगर लिंकन मैरी के लगातार कहने पर भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आते। उन्होंने जिंदगी में कभी रेजर नहीं रखा और न वे कटिंग करवाने समय-समय पर जाते। श्रीमती लिंकन इस बारे में उन्हें लगातार उलाहना देतीं। लिंकन को भी अपनी आदतों की जानकारी थी, लेकिन वे असहाय थे; उनसे वे आदतें दुरुस्त नहीं होती थीं।

एक दिन शिकागो में एक फोटोग्राफर सभी की तसवीर ले रहा था। उसने लिंकन से कहा कि सर, आप थोड़े सामान्य हो जाएँ तो मैं आपकी तसवीर उतार लूँ, अर्थात् व्यवस्थित हो जाएँ। इस पर लिंकन ने कहा कि व्यवस्थित लिंकन की तसवीर स्प्रिंगफील्ड में कोई नहीं पहचानेगा। लिंकन की दिक्कत यहीं खत्म नहीं होती। उन्हें 'टेबल मैनर्स' का भी ध्यान नहीं होता। वे कभी छुरी को दाहिने हाथ में नहीं रखते। मछली को 'फॉर्क' से कैसे काटें और खाएँ, इसका ध्यान वे शायद ही कभी रखते। उनके लिए यह सब बेमानी था।

व्यवहार के सिलसिले में भी लिंकन कई बार अपनी पत्नी से डाँट खा चुके थे। महिलाएँ कभी आतीं तो वे उठते भी नहीं थे। इस पर मैरी नाराजगी जतातीं और वे चुपचाप सुनते रहते। दफ्तर से लौटने पर वे कोट कहीं फेंकते और कॉलर कहीं। फिर लेटकर कुछ पढ़ने लगते। ज्यादातर वे कविताएँ पढ़ते। कविताएँ भी जोर-जोर से पढ़ते। इसकी आदत उन्हें इंडियाना के एक स्कूल से पड़ी थी, जहाँ जोर-जोर से पढ़ाया और बुलवाया जाता था।

श्रीमती लिंकन अपने पति के दोस्त स्पीड से बेहद चिढ़ती थीं। उन्हें लगता था कि लिंकन को बहकाने में उसी का हाथ है। इसी से प्रेरित होकर लिंकन विवाह के दिन नहीं पहुँचे थे। हालाँकि यह सच नहीं था, मगर शक का कोई इलाज नहीं होता। विवाह से पूर्व लिंकन स्पीड को पत्र लिखते रहते थे। वे पत्र 'फेनी को प्यार' से खत्म होते थे। फेनी स्पीड की पत्नी थी। इस पर भी घर में बवाल हुआ और लिंकन को बाध्य होना पड़ा कि वे अब से पत्र का समापन 'आदर के साथ' करेंगे। ऐसे अनेक बातें हैं, जिनसे लिंकन दंपती की रोज-रोज की खटपट की भनक मिलती है।

लिंकन के पहले बेटे का नामकरण होना था। उसका नाम वह अपने मित्र स्पीड के नाम पर रखना चाहते थे। श्रीमती लिंकन ने सुना तो वह आगबबूला हो गईं। अंततः उसका नाम रखा गया 'रॉबर्ट टोड'। लिंकन की चार संतानें हुईं, लेकिन मात्र एक ही वयस्क हो पाई। इनके अन्य बच्चों में इडी, विली, टड शामिल हैं। इस तरह रॉबर्ट को मिलाकर चार। इडी की मृत्यु चार बरस की उम्र में स्प्रिंगफील्ड में ही हो गई थी। विली 12 वर्ष का हुआ, उसका निधन ह्वाइट हाउस में हुआ था। टड का देहावसान सन् 1871 में 18 वर्ष की उम्र में हुआ। केवल रॉबर्ट

@Digitallibrary84

टोड लिंकन दीर्घायु हुआ। उसका निधन 26 जुलाई, 1926 को 83 वर्ष की उम्र में हुआ।

लिंकन के चचेरे भाई जॉन हैक्स का कहना था कि लिंकन सपने देखने के अलावा किसी भी बात में बहुत अच्छे नहीं थे। वह अमूर्त बातों में खो जाते, फिर तो जैसे वह पूरी दुनिया को भुला बैठते। उन्हें न कुछ सुनाई देता और न दिखाई। किसी अमूर्त फुनगी पर, बादल पर, फूल पर या शून्य में कहीं भी निगाह टिक जाती और कोई विचार उनमें आकर अटक जाता। लिंकन उसमें से तभी निकल पाते जब श्रीमती लिंकन के चीखने और उलाहने की कर्कश आवाजें उन्हें सुनाई पड़तीं। श्रीमती लिंकन और पत्नियों की तरह भोजन बनाने और खिलाने में पर्याप्त रुचि लेती थीं। वह बड़ी लगन और मेहनत से खाना बनातीं। फिर उसे टेबल पर लगातीं। लिंकन टेबल तक पहुँच भी जाते, फिर भोजन को देखते-देखते कई बार वे खाना भी भूल जाते। भोजन उनकी रुचि का नहीं, जरूरत का हिस्सा था। उन्हें खाने की याद भी श्रीमती लिंकन ही दिलातीं, तभी वे भोजन करते थे।

भोजन के बाद वे उठते और जहाँ आग जलती वहाँ बैठ जाते। बच्चे उनके आस-पास होते; कभी बाल खींचते, कभी शैतानी करते। मगर लिंकन अपने में ही मग्न रहते। कभी अचानक उठते और बच्चों को चुटकुले सुनाते या किसी कविता की पंक्तियाँ सुनाने लगते। श्रीमती लिंकन उनसे कई बार कहतीं कि बच्चों की गलतियाँ भी बताया करो, ताकि वे बेहतर इनसान बन सकें। वे कहते कि मुझे बच्चों में कोई गलती दिखाई ही नहीं देती। इस बारे में मैं 'अंधा-बहरा' हूँ। मगर उनकी अच्छी बातों की तारीफ करना वे कभी नहीं भूलते थे।

एक बार की बात है। लिंकन अपने एक न्यायाधीश मित्र के साथ शतरंज खेल रहे थे। इस बीच उनका बेटा रॉबर्ट आया। उसने कहा कि भोजन का समय हो गया है, चलें। इस पर लिंकन ने कहा कि बेटा, तुम चलो, अभी आते हैं। जैसाकि आम घरों में होता रहता है। मगर लिंकन खेल में डूब गए और भूल गए कि उन्हें बुलाया भी गया था। थोड़ी देर बाद फिर रॉबर्ट आया और उसने कहा कि चलें, सभी इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने उसी तरह शतरंज के प्यादों की तरफ देखते हुए कह दिया कि आते हैं, तुम चलो। और फिर वे थोड़ी देर में भूल गए। तीसरी बार रॉबर्ट माँ का संदेश लेकर आया और कहा कि अब तो चलें, माँ भोजन पर इंतजार कर रही हैं। लिंकन ने इस बार भी उसे लौटा दिया। काफी देर होने पर भी लिंकन जब भोजन की मेज पर नहीं पहुँचे तो रॉबर्ट तमतमाता हुआ आया और शतरंज को इतनी जोर से लात मारी कि वह लिंकन और उनके दोस्त के सिर के ऊपर तक उछल गया। इस पर भी लिंकन रॉबर्ट पर नाराज नहीं हुए। बड़ी सहजता से वे उठे और अपने मित्र से हाथ मिलाकर उन्होंने कहा—अगली

@Digitallibrary84

बाजी फिर किसी दिन पूरी करेंगे। मजा यह कि उन्होंने बाद में भी अपने बेटे को न पीटा, न डाँटा।

लिंकन किसी चर्च से जुड़े नहीं थे और न वे धार्मिक विवादों में पड़ते थे। यहाँ तक कि उनके नजदीकी मित्रों में भी कभी इस तरह की बातें होतीं तो भी वे बचते। संभवतया यह उनकी नापसंदगी का सबसे बड़ा क्षेत्र था। एक बार उन्होंने हर्नडन से कहा कि धर्म के बारे में मेरी सोच इंडियाना के लीन नामक वृद्ध आदमी से मिलती है। उन्होंने एक बार चर्च में कहा था—"मैं जब भी कोई अच्छा काम करता हूँ, मुझे अच्छा लगता है और जब मैं बुरा काम करता हूँ तो मुझे बुरा लगता है। इसका अहसास ही मेरा धर्म है।"

लिंकन आमतौर पर रविवार को अपने बच्चों के साथ होते थे। कहीं जाते तो बच्चे साथ होते। मगर एक रविवार को श्रीमती लिंकन को लेकर किसी चर्च में चले गए। टड कहीं से खेलकर आया। उसने देखा, पापा घर पर नहीं हैं। वह जिस हाल में था, दौड़ता हुआ चर्च पहुँच गया। उसके कपड़ों पर इलिनाय की काली मिट्टी लगी थी। शर्ट के बटन खुले थे। अस्त-व्यस्त हाल में था। उसे इस तरह देखकर श्रीमती लिंकन को बहुत बुरा लगा। बड़ी शर्मसार हुईं। मगर लिंकन ने उसी उत्साह से बाँहें फैलाकर बेटे को गोद में उठा लिया। उसे सीने से चिपकाया। मगर कहा कुछ नहीं। हर्नडन ने लिखा है कि लिंकन रविवार की सुबह कभी-कभी बच्चों को अपने दफ्तर भी लाते। बच्चे ऊधमी थे। बाहर तो ऊधम मचाते ही, दफ्तर को भी नहीं छोड़ते। एक बार तो उन्होंने मेज की ड्रावर, पुस्तकें, जरूरी कागजात सबको बिछाकर डांस शुरू कर दिया। मगर लिंकन ने उन्हें फिर भी नहीं डाँटा। हर्नडन का कहना है कि मैंने ऐसा कोमल व्यक्ति आज तक नहीं देखा। वैसे तो श्रीमती लिंकन कार्यालय नहीं जाती थीं, मगर जब भी जातीं, आहत होकर लौटतीं। कोई भी चीज ठीक जगह पर नहीं होती।

लिंकन के मित्र स्पीड का कहना था कि नियमित रूप से अनियमित इनसान थे।

लिंकन अपने विचारों में किसी तरह की अस्पष्टता नहीं रखते थे। डगलस के साथ हुई उनकी दो बार की बहस अमरीकी राजनीति की धारा तय करनेवाली बहस मानी जाती है। इसी से लोग लिंकन के राजनीतिशास्त्र का मूल्यांकन करते हैं। पहली बहस 19 नवंबर, 1839 को हुई थी और दूसरी 26 नवंबर को। दूसरी बहस को निर्णायक बनाने पर लिंकन कटिबद्ध थे। उन्होंने कहा था कि देश की स्थिति राष्ट्रीय बैंक की बहाली से दुरुस्त हो सकती है। वे मानते थे कि समाज व राजनीति दोनों ही स्तरों पर मनमुटाव देश को पीछे धकेलता है और प्रगति की गति को मंथर कर देता है। उन्होंने कहा था—संप्रदायवाद और दासप्रथा देश की सामाजिक समरसता को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। ऐसे में जनता निराश होकर

@Digitallibrary84

हिंसक हो जाती है। ऐसा टुकड़ों में भी हो सकता है और समग्र रूप में भी। दोनों ही स्थितियों में देश को नुकसान उठाना पड़ता है। उनका सुझाव था कि हर अमरीकी, हर स्वतंत्रता-प्रेमी को, आनेवाली पीढ़ी के शुभचिंतक को 'क्रांति' के खून की शपथ लेनी चाहिए कि वह देश के कानून को कभी अपने हाथ में नहीं लेगा और न किसी को लेने देगा। हर माँ ऐसी शिक्षा अपने बच्चों को दे। इसे देश का राजनीतिक धर्म बन जाना चाहिए। उन्होंने एक ऐसे 'स्वतंत्रता मंदिर' का आह्वान किया, जो रूढ़ियों, परंपराओं और भावनाओं पर आधारित न होकर दृढ़ सिद्धांतों पर आधारित हो।

क्रांति के पक्षधर होते हुए भी वे क्रमागत परिवर्तन को क्रांति कहते थे। उनकी क्रांति में हिंसा का कोई स्थान नहीं था। सन् 1837 में 'ऑब्जर्वर' अखबार का सामंतियों ने विरोध किया था। इसलिए कि अखबार दासप्रथा का विरोध कर रहा था। नतीजतन, सामंतों ने प्रेस में आग लगा दी। इस पर लिंकन डटकर अखबार के पक्ष में खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि रूपांतरण जरूरी प्रक्रिया है। प्रगति के लिए यह आवश्यक है। रूपांतरण कभी हिंसा से संभव नहीं है। वे देशभक्ति, स्वतंत्रता और लोकतंत्र के पक्षधर थे। अपने भाषणों के केंद्र में देशवासियों और मनुष्यों की चिंता करते हुए भी वे इन सब बातों का उल्लेख करना नहीं भूलते थे। बचपन से ही वे मानते थे कि सभी मनुष्य बराबर हैं। इसलिए दासप्रथा अमानवीय है। समय के साथ मनुष्य की विकास-गाथा में दासप्रथा अभिशाप से बढ़कर कुछ नहीं होगी। वे विरोध को लोकतांत्रिक पद्धति के लिए जरूरी मानते थे; मगर ऐसा विरोध जिसमें तर्क हों, ऐसा विरोध जो मनुष्य की चिंता में किया जा रहा हो, ऐसा विरोध जिसके नतीजे सार्थक निकल सकें। विरोध में वैयक्तिक संघर्ष और हिंसा का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

वैसे तो लिंकन हमेशा ह्विग पार्टी के समर्थक रहे, फिर भी आर्थिक नीतियों पर वे अपने निजी विचार रखते थे। वे पूर्ण मुक्त व्यापार के पक्ष में नहीं थे। उन्हें लगता था कि संरक्षण कर प्रणाली समाप्त करने से निरर्थक श्रम पर ज्यादा खर्च होगा। इसकी वजह यह है कि तब तक विदेश व्यापार बढ़ चुका होगा। इसका नतीजा यह होगा कि परिश्रम न करनेवाले लोगों के पास पैसा अधिक हो जाएगा तथा श्रम पर निर्भर करनेवाले लोग और गरीब होते जाएँगे। उचित श्रम मूल्य का संकट भी ऐसे में समाज में आम हो जाएगा। अगर ऐसा होता है तो हम देश को गरीब और अमीर की नीतियों में बाँट देंगे। ये नए वर्ग होंगे, जो चिरस्थायी दुश्मन हो जाएँगे। इस तरह लिंकन आर्थिक मसलों पर कार्ल मार्क्स की भाषा और रूपकों में बोलते नजर आते हैं। वैसे कार्ल मार्क्स लिंकन के समकालीन ही थे।

'हेनरी क्ले' लिंकन के राजनीतिक आदर्श थे। क्ले उत्तर-पूर्व के औद्योगिक उत्पादन, पश्चिम के अनाज उत्पादन और दक्षिण के तंबाकू व कपास उत्पादन

@Digitallibrary84

से देश को एक आर्थिक इकाई के रूप में खड़ा करना चाहते थे। उनका कहना था कि ऐसा होगा तो देश में एक उदार व्यवस्था खड़ी होगी, जिसमें सबके लिए न्याय होगा, समान अवसर होंगे। इस नजरिए ने अमरीका की राजनीति में वैचारिक ठिठकाव को तोड़ा और नई पीढ़ी उन्हें आत्मसात् करती दिखाई देने लगी।

सन् 1843 में प्रांतीय विधानसभा में लिंकन के चार साल पूरे हो गए। उन्होंने पाँचवीं बार विधानसभा न जाने का फैसला किया। इलिनॉय एक ऐसा प्रांत था, जहाँ डेमोक्रेट का असर ज्यादा था। फिर भी, लिंकन के प्रयासों से स्टुअर्ट वहाँ से प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए। वे स्वयं तो ह्विग पार्टी के थे ही। प्रतिनिधि सभा के लिए नए सदस्य का चुनाव होना था। प्रतिनिधि सभा वहाँ संसद् को कहते हैं। अमरीकी परंपरा के अनुसार टिकट वितरण पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र द्वारा होता है। इसके तहत हर प्रत्याशी को अपने तर्कों के साथ खड़ा होना होता है। यदि अपने संप्रेषित तर्कों से सभी को संतुष्ट कर लेता है अथवा राजी कर लेता है तो वह प्रत्याशी घोषित कर दिया जाता है। लिंकन भी इसमें जुट गए। उन्होंने इसके लिए पर्याप्त तैयारी की। इलिनॉय की जनता के लिए घोषणा-पत्र निकाला। इसमें विस्तार से लिखा था कि वे चाहते क्या हैं? विकास के बाद यहाँ का मानचित्र कैसा होगा? इससे चिंतित होकर उनके विरोधी बेकर और दूसरे साथियों ने धुआँधार प्रचार किया। पहला तो यह कि लिंकन के सरोकार दिखावटी हैं। यदि वे वास्तव में सरोकारी होते तो अमीर परिवार में विवाह नहीं करते। हाथी के दाँत खाने के और तथा दिखाने के और होते हैं। विरोधियों को पता था कि चर्च का प्रभाव-क्षेत्र विस्तृत है। लिंकन के किसी भी चर्च से न जुड़े होने की बात का असर पड़ सकता है। इसलिए इन लोगों ने इस बात का जोरदार प्रचार किया कि लिंकन चर्च में आस्था ही नहीं रखते। लिंकन की दिक्कत यह थी कि वे बेकर का अत्यधिक सम्मान करते थे। दोनों के कार्यालय भी एक ही भवन में थे। लिंकन बेकर से प्रभावित भी बहुत थे। उन्हीं के नाम पर लिंकन ने अपने एक बेटे का नाम भी रखा था। इसलिए वे ऊहापोह में रह गए और जिले के पार्टी अधिवेशन में बेकर प्रत्याशी चुन लिये गए। इतना ही नहीं, लिंकन को जिम्मेदारी दी गई कि दूसरे क्षेत्रों से भी जो प्रत्याशी चुनकर आएँ, इसमें वे उनकी मदद करेंगे। बावजूद इसके पार्टी ने लिंकन और बेकर को दरकिनार कर हार्डिन को प्रत्याशी चुन लिया। लिंकन के खाते में मात्र इतनी सी बात आई कि वे हार्डिन के बाद बेकर को प्रत्याशी बनवाने की बात पर सहमति हासिल कर गए।

सन् 1844 के पार्टी अधिवेशन में बेकर पार्टी प्रत्याशी चुन लिये गए। यह वह दौर था, जिसमें लिंकन की वक्तृता की खूब तारीफ हुई। उन्हें बेकर तथा क्ले के राष्ट्रपति चुनाव में लगातार जनसभाएँ संबोधित करने को मिलीं। नतीजतन

@Digitallibrary84

वे प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ वक्ता भी घोषित किए गए। बेकर प्रतिनिधि बन गए थे, लेकिन क्ले को इलिनॉय से आवश्यक मत नहीं मिल पाए थे। सन् 1846 में बारी लिंकन की थी। इस पर बेकर तो राजी थे, लेकिन हार्डिन अंत तक राजी नहीं हुए।

लिंकन अपने विरोधियों पर भी हिंसक भाषा के साथ जुमलेबाजी करते हुए आलोचना के पत्थर नहीं फेंकते थे। वे सधी हुई एवं संयत भाषा में सरोकार से शुरु होते हुए विधायी संकल्प तक पहुँचते थे। हार्डिन के विरोध में भी उन्होंने कुछ ज्यादा नहीं कहा, सिवाय इसके कि पार्टी की स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा का अनुशीलन करते हुए बारी-बारी से प्रत्याशियों को चुना जाता है। लिहाजा, प्रत्याशी बदलते रहेंगे और वे अपनी संपूर्ण कार्यक्षमता से काम करते रहेंगे। उनकी दलील जोरदार साबित हुई। उन्हें मिले समर्थन को देखते हुए हार्डिन हताश हो गए। वे भाँप गए कि जीतना तो दूर, इज्जत बचाना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए वे मैदान से हट गए। उन्होंने घोषणा की कि वे मेक्सिको युद्ध में भाग लेने जा रहे हैं, इसलिए चुनाव नहीं लड़ेंगे। इससे 1 मई, 1846 के अधिवेशन में लिंकन पार्टी प्रत्याशी चुन लिये गए। चुनाव में उनके खिलाफ थे डेमोक्रेट कार्ट राइट। वे मेथाडिस्ट थे। उन्होंने लिंकन के खिलाफ मुद्दा उछाला कि लिंकन चर्च को महत्व नहीं देते। उनकी धार्मिक आस्था संदिग्ध है। उन्हें लग रहा था कि बेकर के सामने लिंकन ने इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहा था। शायद इस बार भी यह दाँव चल जाएगा। मगर इस बार लिंकन ने कहा कि यह सही है कि वे किसी चर्च के सदस्य नहीं हैं, लेकिन इसका आशय यह नहीं कि वे धर्म-विरोधी हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी संप्रदाय विशेष के प्रति अनुरक्त नहीं है तो भी आप उसे किसी धर्म विशेष या सभी धर्मों का विरोधी नहीं कह सकते, जब तक कि वह धर्म-विरोधी प्रमाणित न हो जाए। लिंकन के तर्कों ने कार्ट राइट की बोलती बंद कर दी। 3 अगस्त, 1846 को लिंकन ने कार्ट राइट को विधिवत् परास्त कर दिया और प्रतिनिधि सभा के सदस्य चुने गए।

इस बीच लिंकन को इलिनॉय के बाहर ह्विग पार्टी के नेता के रूप में मान्यता मिल चुकी थी। तीसवीं कांग्रेस के पहले अधिवेशन में एक वर्ष बाकी था। उन्होंने शिकागो में हुए 'नदी तथा बंदरगाह अधिवेशन' में अपनी प्राणवान् उपस्थिति दर्ज कराई। इससे उनकी छवि एक राष्ट्रीय नेता की हो गई।

सन् 1844 में लिंकन चार्ल्स ड्रेसर के मकान में आ गए थे, करीब 1,500 डॉलर देकर। चार्ल्स ड्रेसर वही हैं, जिन्होंने बीस वर्ष पहले लिंकन का विवाह कराया था। मकान में एक लिविंग रूम, किचन, बेडरूम, आउट हाउस था। वहीं लिंकन अपनी गाय और एक हिरन भी रखते थे। शुरुआत में तो मैरी लिंकन को यह जगह स्वर्ग जैसी लगती थी, मगर धीरे-धीरे उन्हें उसकी हर चीज से शिकायत

@Digitallibrary84

होने लगी। शायद इसलिए भी कि उनकी बहन वहीं एक बड़े दोमंजिले मकान में ठाट से रहती थी। आमतौर पर मैरी लिंकन घरेलू मामलों में कोई भी सवाल करतीं तो लिंकन कहा करते—"मैं नहीं जानता। इन सब मामलों में तुम्हारी समझ ज्यादा अच्छी है।" मगर इस बार मकान के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि मकान पर्याप्त है। हम सभी के लिए इसमें पर्याप्त जगह है। फिर मेरी मासिक आमदनी 500 डॉलर है और इसमें ज्यादा कुछ इजाफा नहीं हुआ है। इसलिए इसके विस्तार के बारे में फिलहाल तो कम-से-कम नहीं सोचना चाहिए। बात को टालने और मैरी को राजी करने की गरज से लिंकन ने एक ठेकेदार को बुलवाया और चाहे गए बदलाव पर उससे पूछा कि इसमें कुल कितना खर्च आएगा? ठेकेदार ने अनुमानित खर्च बता दिया और लिंकन ने मैरी को समझाया कि इतना खर्च करना संभव नहीं है। लिंकन निश्चिंत हो गए कि मैरी राजी हो गई है। वे अपने काम में लग गए। उन्हें बाहर जाना पड़ा। इस बीच मैरी ने एक दूसरे ठेकेदार को बुलवाया और जैसे ही उसने पहले ठेकेदार की तुलना में कम खर्च की बात की, उन्होंने तत्काल उसे बनवाने का ऑर्डर दे दिया। लिंकन स्प्रिंगफील्ड लौटे तो अपना मकान पहचान ही नहीं पाए। उन्होंने पड़ोस में पूछा कि लिंकन का मकान कौन सा है?

सन् 1853 के अंतिम माह में लिंकन चौवालीस बरस के हो गए थे। ह्वाइट हाउस जाने से महज आठ साल पहले भी लिंकन की प्रैक्टिस कोई ज्यादा नहीं थी। उस बरस उन्होंने मात्र चार केस लिये। उसके एवज में उन्हें 30 डॉलर मिले थे। वे कहा करते थे कि उनके ज्यादातर मुवक्किल गरीब हैं, इसलिए वे उनसे मनचाही फीस नहीं वसूल सकते। एक बार उनके एक मुवक्किल ने उन्हें 25 डॉलर भेज दिए। इस पर उन्होंने महज 10 डॉलर स्वीकार करते हुए कहा कि आप मेरे प्रति कुछ ज्यादा ही उदार हो गए थे।

एक और प्रकरण उनके पास आया, जो करीब 10 हजार डॉलर की प्रॉपर्टी का मामला था। प्रॉपर्टी एक पागल लड़की की थी और उसे किसी ने ठगा था। प्रकरण से पहले ही फीस की बातें तय हो गई थीं। उस समय लिंकन का साथी था कार्ड लेमन। लिंकन ने यह मामला सुनवाई के पंद्रह मिनटों में ही जीत लिया। लेमन खुश-खुश लिंकन के पास आया और फीस बाँटने लगा। इस पर लिंकन अपना आपा खो बैठे। उन्होंने कहा कि अब ऐसे दिन आ गए हैं कि पागलों के लड़े जाने के मामलों में न्याय दिलाकर हम पैसे कमाएँगे। इस पर लेमन ने कहा कि पैसे उसके भाई ने दिए हैं और प्रकरण जीतकर वे लोग काफी संतुष्ट है।

"इससे क्या होता है? वे तो इसलिए खुश हैं कि प्रकरण जीत गए। पैसे तो गरीब आदमी की जेब से ही जा रहे हैं। मैं इस तरह उसे ठगने से भूखा रहना

@Digitallibrary84

ज्यादा पसंद करता हूँ। तुम तत्काल कम-से-कम आधे पैसे उन्हें वापस कर दो, वरना मैं इसमें से एक सेंट भी नहीं लूँगा।" लिंकन के ऐसे विचार थे और जीवन जीने का अंदाज। वे किसी से भी किसी भी तरह आए पैसे का इस्तेमाल ठीक नहीं समझते थे। ऐसा वे दिखावे के लिए नहीं करते थे, यह उनका स्वभाव था।

एक और मामला बहुत चर्चित हुआ था और वह था एक सैनिक आर्मस्ट्रांग की विधवा की पेंशन का। प्रकरण एक एजेंट लिंकन के पास लेकर आया था। लिंकन ने मुकदमा लड़ा और जीता, लेकिन उन्होंने उस विधवा से एक भी पैसा नहीं लिया। बल्कि उसके रुकने और भोजन का इंतजाम किया। यहाँ तक कि उसके लौटने की व्यवस्था भी की।

कुछ बरस बाद वह फिर एक बड़ी मुसीबत में पड़ गई। उसे लिंकन की याद आई। हुआ यह कि आर्मस्ट्रांग का बेटा शराब पीकर झगड़ा करने और फिर हत्या करने के मामले में फँस गया था। उसने लिंकन को अपनी व्यथा सुनाई। लिंकन ने प्रकरण का गहराई से अध्ययन किया और अदालत के सामने प्रभावशाली ढंग से अपनी दलील रखी। इसका असर हुआ और कोर्ट ने जैक आर्मस्ट्रांग को रिहा कर दिया। इसके एवज में आभार मानते हुए श्रीमती आर्मस्ट्रांग ने लिंकन से 50 एकड़ जमीन लेने की प्रार्थना की। उसने कहा कि उसके पास लिंकन को देने के लिए और कुछ नहीं है। इस पर लिंकन ने कहा कि आंटी, वह भी वक्त था, जब मेरे पास पहनने लायक कपड़े भी नहीं थे। आप लोगों ने बचपन में कितनी मदद की। मैं आपका ऋणी हूँ। किसी भी तरह से उस अहसान का बदला नहीं चुका सकता। मुझे माफ करें। मैं आपसे एक भी पैसा नहीं ले सकता। और उन्होंने लाख मिन्नतों के बाद भी कोई शुल्क नहीं लिया। उनमें एक जरूरी सदाशयता थी, जो उन्हें बेहर मनुष्य बनाती थी।

दूसरी तरफ उनकी पत्नी मैरी टोड के पास सिवा इसके कोई रास्ता नहीं था कि वे कम-से-कम पैसे में घर खर्च चलाएँ। ऐसा करना सदैव संभव नहीं होता। कभी-कभी मनुष्य कंजूसी की हद तक व्यवहार करने लगता है। मगर उसके लिए भी उसके पास तर्क होते हैं। मैरी शहर भर से सेंट लातीं, थोड़ा सा निकाल लेतीं, फिर कुछ-न-कुछ बहाना बनाकर वापस कर देतीं। शुरुआत में तो दाँव चल गया, बाद में दुकानदार समझ गए कि यह जान-बूझकर ऐसा करती है। कई तो लौटाई शीशियों पर परची लगाने लग गए कि इसे श्रीमती लिंकन ने लौटाया है।

एक बार लिंकन के एक दोस्त ने 'स्प्रिंगफील्ड रिपब्लिकन' नाम से अखबार निकाला। लिंकन से भी उसने ग्राहक बनने का अनुरोध किया। वे मान गए। दूसरे दिन घर की दहलीज पर नया अखबार देखते ही मैरी टोड उबल गईं। उन्होंने

@Digital library84

लिंकन से पूछा कि फिर एक नया अखबार! हद है कचरा बटोरने की। ऊपर से अपव्यय अलग। उनकी झाड़ सुनकर लिंकन ने कहा कि मैंने उसे अखबार डालने के लिए नहीं कहा था। वे सच ही कह रहे थे। मगर ग्राहक बनने के लिए मैंने सहमति दी थी। इस पर मैरी टोड का गुस्सा और भड़क गया। कहने लगीं कि यह तो जबरदस्ती है। उन्होंने इसके खिलाफ बड़ा तीखा पत्र अखबार के संपादक को लिख भेजा। पत्र की भाषा और तीखेपन से संपादक नाराज हो गया और उसने उनके पत्र को अखबार में अपनी टिप्पणी के साथ छाप दिया। इस अवमानना से लिंकन को बहुत बुरा लगा। हालाँकि उन्होंने संपादक से कहा कि यह एक तरह की गलतफहमी है।

उनके विवाह के तेईस वर्षों तक भी लिंकन का कोई रिश्तेदार उनके घर नहीं आता था। वैसे कहने को उनकी सौतेली माँ सबसे नजदीक थीं, लेकिन उन्होंने भी कभी लिंकन का घर भीतर से नहीं देखा था। लिंकन ही गाहे-बगाहे उनके घर चले जाते। दूर की एक चचेरी बहन थी हेरियट हैंक्स! बड़ी प्यारी और संवेदनशील लड़की थी। लिंकन उसे बहुत प्यार करते थे। वे उसे अपने घर ले आए, ताकि वह स्प्रिंगफील्ड से अपना स्कूल पूरा कर सके। वे जितना प्यार करते श्रीमती लिंकन उतनी ही नाराज होतीं। उनके जाते ही उससे कसकर काम करवाया जाता। मैरी लिंकन ने उसे एक तरह से घर में काम करनेवाली दासी बना डाला। लिंकन ने इसका विरोध किया और कहा कि यह अन्याय है। नतीजतन, कलह के अलावा और क्या हो सकता था और वही हुआ। मैरी के दुर्व्यवहार की वजह से कभी कोई घरेलू नौकर टिका नहीं, बल्कि उनके घर कोई काम करना ही नहीं चाहता था। चाहे कितनी भी सुविधाएँ देने की बात की जाती, मगर कोई राजी न होता था।

स्प्रिंगफील्ड का एक चर्चित चरित्र था 'लंबा जैक' या कहें 'लंबू जैक'। उसके पास उसी की तरह के मूर्ख दोस्त थे और एक टूटी-फूटी वैगन थी। उसमें बैठकर वे लोग यहाँ-वहाँ शेखी मारते फिरते। उसकी भतीजी दुर्भाग्य से श्रीमती लिंकन के घर काम करने चली गई। कुछ ही दिन हुए कि श्रीमती लिंकन और उस नौकर में जबरदस्त झगड़ा हुआ और फिर वह चली आई। इसकी जानकारी मिलते ही जैक अपने चमचों को लेकर श्रीमती लिंकन के घर पहुँचा। उसने कहा, वह अपनी भतीजी का सामान लेने आया है। श्रीमती लिंकन डरी नहीं। उन्होंने खूब खरी-खोटी सुनाई और काम करनेवाली लड़की को कोसा। इतना ही नहीं, उन्होंने जैक से कहा कि अगर उसने दुबारा घर में कदम रखने की हिम्मत की तो अच्छा नहीं होगा। इस पर गुस्से से उबलता जैक लिंकन के दफ्तर पहुँचा।

लिंकन ने पूरा वाकया सुना और उस पर दुःख प्रकट करते हुए कहा, "यार, तुम कुछ मिनट सहन नहीं कर पाए, जिसे मैं पिछले पंद्रह सालों से झेल रहा हूँ।" इस

@Digitallibrary84

पर जैक और उसके साथी झेंप गए। उन्होंने वहाँ आकर लिंकन से ऊँची भाषा में बात करने पर क्षमायाचना भी की।

एक बार फिर इसी तरह कोशिश करते हुए श्रीमती लिंकन ने एक नौकर रख लिया। वह कम उम्र की एक छोटी लड़की थी। मगर पड़ोसी इस बार चौंक गए कि वह दो बरस तक टिक गई। बाद में पता चला कि इसकी वजह श्रीमती लिंकन नहीं, लिंकन खुद थे। उन्होंने उससे कहा कि घरेलू कामकाज के अलावा तुम्हें एक और काम करना होगा और वह यह—श्रीमती लिंकन का गुस्सा सहन करना। इसके बदले में मैं तुम्हें हर सप्ताह एक डॉलर अलग से दूँगा। लड़की मान गई। श्रीमती लिंकन जब भी भड़कतीं, वह सिर झुकाकर चुपचाप सुन लेती। न कभी पैर पटकती, न कुछ अपनी तरफ से कहती। जवाब देना तो जैसे उसने सीखा ही नहीं था। उसका नाम मारिया था। इससे भी श्रीमती लिंकन की आदत में कोई अंतर नहीं आया।

ऐसे ही एक दिन किसी और कमरे से श्रीमती लिंकन मारिया पर चीख रही थीं। मारिया किचन में अकेली थी। यह देखकर लिंकन उसके पास गए। उसका कंधा थपथपाया और कहा कि इसी तरह शांति से अपने काम में लगी रहो। अपना साहस कभी न खोना। कई बरस वह साथ रही। फिर उसका विवाह हो गया। एक बार फिर वह वाशिंगटन में लिंकन से मिली। लिंकन उससे मिलकर बहुत खुश हुए। अतीत की सैकड़ों बातें हुईं। वे चाहते थे कि वह रात के भोजन के समय साथ रहे, मगर मैरी टोड ने उसे फलों की टोकरी थमाकर चलता कर दिया।

श्रीमती लिंकन का व्यवहार कहीं से भी सदाशयी नहीं था। वे करीब-करीब झगड़ालू स्वभाव की थीं। एक हद तक निर्दयी। कभी-कभी तो उनका व्यवहार इतना असंयत होता था कि लगता, वह पागल हो गई हैं। इसी कारण हर्नडन ने उन्हें 'जंगली बिल्ली' कहा था। राष्ट्रपति के सचिव जॉन हे उन्हें एक भद्दी गाली से संबोधित करते। जेम्स गोर्ली सोलह साल तक उनके पड़ोसी रहे। वे कहते थे कि श्रीमती लिंकन के भीतर कोई शैतान रहता है। वे इतनी जोर से चीखती-चिल्लातीं कि कई घरों तक आवाज जाती। उन्हें लगता जैसे कोई भद्दी आकृतिवाला विशालकाय दैत्य उन्हें मारने आ रहा है। समय के साथ उनका यह बरताव बढ़ता ही गया। लिंकन के दोस्तों को उन पर दया आती। वे करते भी तो क्या? लिंकन आधी रात को भी बाहर टहलते दिखाई देते। निढाल, झुका हुआ सिर और उसमें ढेरों चिंताएँ। वे कई बार कहते, "मुझे घर जाने से नफरत हो गई है।"

@Digitallibrary84

हर्नडन ने इस बारे में लिखा—"अमूमन लिंकन न जल्दी उठते, न जल्दी दफ्तर आते थे। वे करीब 9 बजे दफ्तर आते और उनसे करीब एक घंटा पहले मैं पहुँचता था। एक बार तो वे दिन निकलने से पहले ही दफ्तर पहुँच गए। मैंने उन्हें बैठे देखा तो तत्काल समझ गया कि घरेलू समुद्र में ज्वार आया होगा। उन्होंने मेरे आने पर सिर भी नहीं उठाया, सिर्फ मेरे अभिवादन का जवाब दिया। उनके झुके हुए चेहरे और कमरे में पसरी हुई चुप्पी में मैं उनका दर्द पढ़ सकता था। काफी देर तक सन्नाटा नहीं टूटा तो यहाँ-वहाँ कागज बटोरते हुए मुझे लगा कि सन्नाटा मुझे दबोच रहा है। मुझे कहीं चले जाना चाहिए। मैं गया भी। करीब एक घंटे बाद भी लिंकन उसी तरह असहाय वेदना के चिह्न लिये बैठे रहे। रात घिर आई, मगर लिंकन दफ्तर में ही थे। पेड़ों के घने सायों के बीच लिंकन को तनहा निजी दर्द में डूबे तो शायद कम ही लोगों ने देखा है और यदि वे इसे झुठलाना चाहते हैं तो मैं कहूँगा कि वे सच को नहीं जानते।"

एक बार तो श्रीमती लिंकन ने सारी सीमाएँ तोड़ दीं। पहले तो किसी बात पर चिल्लाती रहीं, फिर अपने आपको न सँभालने पर उन्होंने लिंकन पर निर्दयता से प्रहार कर दिया। इस पर लिंकन सँभल नहीं पाए। अपमान और चोट के दर्द से वे तिलमिला गए। उन्होंने कहा, "अब बहुत हो गया। तुम इसी वक्त यहाँ से निकल जाओ।" उन्होंने मैरी टोड की बाँह पकड़ी और उसे खींचते हुए किचन से मुख्य दरवाजे तक ले आए और फिर कहा, "यह रहा दरवाजा और वह तुम्हारा रास्ता। निकल जाओ। तुम मेरे घर को नरक बना चुकी हो और जिंदगी को खत्म करती जा रही हो।" ऐसा व्यक्ति, जो जीवन में सबकी उन्नति और किसी के बारे में बुरे विचार नहीं रखता था, उसके सब्र का बाँध भी टूट गया था। उनका वैवाहिक जीवन कभी अच्छा नहीं रहा।

@Digitallibrary84

3

राजनीति के शिखर पर

सवाल यह है कि यदि लिंकन का विवाह आन रसेज से हो गया होता तो क्या होता? अर्थात् मैरी टोड के बजाय आन उनकी पत्नी बनी होतीं तो क्या होता? इस पर अनेक लोगों का विचार है कि बहुत संभव है कि लिंकन अपने घर में कहीं ज्यादा खुश होते। बहुत संभव है कि वे और रचनाशील हो जाते। लेकिन सभी की स्पष्ट राय है कि वे राष्ट्रपति नहीं बन पाते। शायद इसलिए भी कि लिंकन अपनी विचार-प्रक्रिया में धीमे थे। विचार करने और क्रियान्वित करने में वे पर्याप्त वक्त लेते थे। मैरी टोड इसके उलट थीं। उनमें ह्वाइट हाउस में रहने का लक्ष्य दिपदिपाता रहता था। अपने विवाह के समय से ही वे प्रयत्नशील थीं कि ह्विग पार्टी की तरफ से लिंकन कांग्रेस के लिए मनोनीत हो जाएँ। अर्थात् लक्ष्य और प्रयास दोनों में अद्भुत सामंजस्य था।

लिंकन प्रतिनिधि सभा में ह्विग पार्टी के मात्र प्रतिनिधि थे। उनके सामने तमाम चुनौतियाँ थीं। पार्टी के क्ले और वेबस्टर जैसे नेता समस्याओं के कुहरे में खो रहे थे। उनके पास नए नजरिए का अकाल नजर आ रहा था और पार्टी को चाहिए थे नए मुद्दे, नई तसवीर। उम्मीदों को सरसराती नए भविष्य की उजास तसवीर। वह भी दिखाई नहीं दे रही थी। लिंकन ने अपनी ओर से पार्टी के सिद्धांतों को फिर से व्याख्यायित करने की कोशिश की; लेकिन पुराने मुद्दों पर वे नया लिहाफ नहीं चढ़ा पाए। थोड़ी-बहुत प्रशंसा मिली तो वह उनकी वक्तृत्व शैली की वजह से थी।

वाशिंगटन में लिंकन श्रीमती स्प्रिंग के बोर्डिंग हाउस में रहने लगे थे। उनके साथ आठ और सांसद भी वहीं रहते थे। उनमें गिडिंग्स भी थे। गिडिंग्स ओहायो के सांसद थे और गुलामी प्रथा के प्रखर आलोचक। शहर बड़ा था और उस समय उसकी आबादी 40 हजार थी, जिसमें लगभग 4,000 गुलाम थे। लिंकन अपने परिवार के साथ ही आए थे। वैसे ज्यादातर सांसद वहाँ अकेले ही रहते थे। मैरी और उनके बच्चों को भी वहाँ रहने और वातावरण के अनुसार ढलने में कठिनाई

@Digitallibrary84

हुई। नतीजतन, वे कंटेकी चली गईं। इसके बाद लिंकन ने अपना पूरा समय प्रतिनिधि सभा को दिया। वे डाक विभाग और डाक मार्गों की कमेटी के सदस्य बनाए गए, फिर उन्हें उनकी कुशलता के चलते युद्ध विभाग की व्यय कमेटी में भी रखा गया। रेल लाइनें बिछाने संबंधी काम में उनकी इलिनॉय के जमाने से रुचि थी। उनका भौगोलिक अध्ययन भी व्यापक था। यही वजह थी कि उन्होंने दूसरे सांसदों को भी इस आशय के दस्तावेज तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतना ही नहीं, सरकार से बातचीत करने में ह्विग पार्टी के सांसदों की मदद भी करते थे। बावजूद इसके वे इतने सतर्क रहते थे कि उनके चुनाव क्षेत्र में उनका कहा जनता तक जस- का-तस पहुँचे। इसलिए भी कि वहाँ की जनता को पता चले कि उनका सांसद प्रतिनिधि सभा में क्या कर रहा है? वे स्वयं अपने भाषण लिखते, उनकी प्रतियाँ तैयार करते, दूसरे सांसदों और सरकार से होनेवाली बातचीत के मुद्दे तैयार करते। इस तरह उनका अधिकांश समय लिखने-पढ़ने में बीत जाता। इस काम के लिए उनके पास कोई सहायक नहीं था। लिहाजा वे हाथ से लिखते।

सन् 1848 में राष्ट्रपति का चुनाव होना था। ह्विग पार्टी की चिंता यह थी कि डेमोक्रेट को कैसे रोका जाए कि वे इस पद तक न पहुँच पाएँ। उनके पास सिर्फ एक मुद्दा था और वह था 'मेक्सिको युद्ध' का थोपा जाना। तत्कालीन राष्ट्रपति पोक थे और उन्हीं की नीतियों का नतीजा था वह युद्ध। मेक्सिको के स्पेनी साम्राज्य के विरुद्ध अमरीका का तनाव सन् 1836 से शुरु हुआ। मेक्सिको साम्राज्य टेक्सास से कैलिफोर्निया तक था। सन् 1836 में टेक्सास के लोगों ने स्पेनी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। वे जीते भी। सन् 1844 में टेक्सास संयुक्त राज्य अमरीका का सदस्य बन गया। अमरीका ने कैलिफोर्निया और न्यू मेक्सिको को भी अपनी परिधि में शामिल कर लिया। यह सही है कि मेक्सिको के निरंकुश साम्राज्य की तुलना में अमरीका कहीं अधिक स्वायत्त था।

खराब हालात में अमरीकी राष्ट्रपति पोक ने संसद् से युद्ध-समाप्ति के लिए अतिरिक्त धन की माँग की। उनका कहना था कि युद्ध की शुरुआत मेक्सिको ने टेक्सास पर हमला करके की। अमरीका को कैलिफोर्निया और न्यू मेक्सिको जैसा विशाल भूभाग मिला है। इसलिए आवश्यक है कि अतिरिक्त धन व्यवस्था और अन्य मदों के लिए दिया जाए। लिंकन ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि वास्तव में सारा विवाद अमरीकी सेना के कारण उपजा है। उसी ने मेक्सिको की एक बस्ती पर बेवजह हमला कर दिया था। उनके साथ मेसाचुसेट्स के सांसद जॉर्ज अंशमन भी जुड़ गए। उन्होंने बाजाप्ता प्रस्ताव रखा और कहा कि राष्ट्रपति ने अनावश्यक और असंवैधानिक रुप से यह युद्ध अमरीका की जनता पर थोप दिया है। इस प्रस्ताव के समर्थन में ह्विग पार्टी के 85 सांसदों ने हस्ताक्षर किए। अपनी बात की स्थापना के लिए लिंकन ने एक

@Digitallibrary84

लंबा और सारगर्भित भाषण देते हुए माँग की कि सरकार को चाहिए कि वह युद्ध से संबंधित हर जानकारी सदन को उपलब्ध कराए।

लिंकन के इस ध्वजावाही कदम का प्रेस और राष्ट्रपति ने यथोचित सम्मान नहीं किया। अर्थात् इसे नजरअंदाज कर दिया। ऐसा इस दुष्प्रचार के चलते हुआ कि युद्ध का कदम सरकार ने उठाया है, यानी अमरीका ने उठाया है और लिंकन इसका विरोध कर रहे हैं। इसका आशय मिसौरी के एक सांसद की राय में देशभक्ति का विरोध था। इसे मानते हुए लिंकन को तरजीह नहीं दी गई। उनके अपने प्रांत इलिनॉय के अखबारों ने अलबत्ता इस बाबत छापा। मजा यह कि ह्विग पार्टी ने भी लिंकन के युद्ध-विरोधी बयान को लोकतांत्रिक संदर्भों में अनुचित माना। उसका मानना था कि यह कदम राजनीतिक अदूरदर्शिता के तहत उठाया गया है। ऐसा करने से अमरीका की जनता में ह्विग पार्टी की छवि खराब हुई है। पार्टी का यह भी मानना था कि विदेशी हमलों की परिसमाप्ति के लिए यदि हमारे देश की सेना दुश्मन पर आक्रमण करती है तो न तो यह असंवैधानिक है, न अनावश्यक। पार्टी की भीतरी सतहों का विरोध लिंकन को साल गया। बाद में उन्होंने अपनी सफाई में कहा था कि यह सही है कि मैंने राष्ट्रपति पोक की आलोचना की थी, मगर इसलिए कि उन्हें युद्ध आरंभ नहीं करना चाहिए था। लेकिन युद्ध आरंभ होने के बाद उसकी आपूर्ति बाधित कर दी जाए, ऐसा मैंने नहीं कहा था। यूँ भी अब यह बीते समय की बात है। युद्ध का पटाक्षेप हो चुका है। शांति-समझौते की प्रक्रिया चल रही है। इन सारी बातों का अर्थ अब अगले राष्ट्रपति चुनाव से ज्यादा नहीं रह गया है।

इस सबके बाद भी ह्विग पार्टी में दरारें उभर आईं। एक धड़ा स्थापित मान्यताओं की वकालत करता था, जिसमें सभी वे लोग थे, जो उम्र एवं विचार से पक चुके थे और राजनीति के सिंहासन पर काबिज रहना चाहते थे। लेकिन पार्टी में सिर्फ ये ही लोग नहीं थे, युवा भी थे। अधिसंख्य युवा लिंकन को पसंद करते थे और उनकी तर्क शैली के कायल थे। उन युवाओं की सोच थी कि लिंकन अपने तर्कों पर सही साबित हों। इसलिए सोचा गया कि युद्ध तो वास्तव में जनरल जाचरी टेलर ने लड़ा है। अगर टेलर राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी हो जाएँ तो न केवल डेमोक्रेट लोगों को बेहतर उत्तर दिया जा सकेगा, बल्कि समूचे राष्ट्र को बताया जा सकेगा कि लिंकन और उनकी ह्विग पार्टी युद्ध-विरोधी नहीं है, बशर्ते वह युद्ध अपने देश की अस्मिता के लिए लड़ना अनिवार्य हो जाए। इसके लिए लिंकन राजी हो गए। मगर संसद् में वे पोक का विरोध करते रहे। उनकी रणनीति यह थी कि प्रतिनिधि सभा में युद्ध के मुद्दे को गरम रखा जाए और बाहर युद्ध के असली नायक टेलर की स्थापना की जाए। इसके लिए लिंकन ने भ्रमण किया और फिलाडेल्फिया के ह्विग पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में इस बात की मंजूरी ले ली कि अगले राष्ट्रपति के चुनाव में टेलर ही पार्टी के प्रत्याशी होंगे। इसके

@Digitallibrary84

साथ ही यह तय हो गया कि परंपरावादी ह्विग पार्टी के बूढ़ों से कमान छीनकर नौजवानों के हाथों में दी जाए। वहीं मंच से लिंकन ने घोषणा की कि टेलर की उपस्थिति से युद्ध का ढोल पीटने वाले डेमोक्रेट इस बार धराशायी होंगे। इसके साथ ही तय हुआ कि ह्विग पार्टी के लोग सभी जगहों पर स्थानीय मसलों पर राष्ट्रीय मुद्दों को तरजीह दें। इससे देश की एकता के साथ पार्टी की एकता और एकरूपता भी नजर आएगी। पार्टी के नौजवान भी यही चाहते थे कि पार्टी अपना पुराना आलापना बंद कर दे और नए राष्ट्रीय मुद्दों को लेकर आगे बढ़े। लिंकन का कहना था कि टेलर जनाकांक्षाओं के अनुरूप काम करेंगे। वे सरोकारी होंगे और छोटे-बड़े मुद्दों पर संसद् को साथ लेकर चलेंगे। इतना ही नहीं, टेलर के राष्ट्रपति बनने पर वे अपने विशेषाधिकार 'वीटो' का उपयोग भी कम-से-कम करेंगे। देश के नौजवानों की इच्छा के अनुरूप वे दासप्रथा को खत्म करने में कोई कसर नहीं उठाएँगे। लिंकन ने कहा कि युद्ध साम्राज्यवादी शोषण है। इसलिए जरूरी है कि पोक यह बताएँ कि जहाँ मेक्सिको में युद्ध का पहला खून बहा, क्या संयुक्त राज्य अमरीका वहाँ का मालिक है? लिंकन ने घोषणा की कि देश के किसी भी भाग में कहीं के भी लोगों को यह अधिकार होगा कि वे अपने मौलिक अधिकारों के लिए क्रांति कर सकें। क्रांति अर्थात् बदलाव। यदि वे चाहें तो अपने अनुकूल सरकार बनाने में अपनी भूमिका सुनिश्चित कर सकते हैं। क्रांति भी मनुष्य का अधिकार है।

27 जुलाई को प्रतिनिधि सभा में भावी राष्ट्रपति पर विचार व्यक्त करना था। सिर्फ चुनिंदा सांसदों को ही यह अवसर मिला था। सात सांसद बोल चुके थे और उन्हें सुनकर श्रोता ऊब चुके थे। लिंकन का नंबर आठवाँ था। उनकी बारी आने तक उन्हें इस बात का अहसास हो गया था कि लोग बैठे-बैठे उकता चुके हैं। उन्होंने अपनी तकरीर में चुटकुले और व्यंग्यों का ऐसा सहारा लिया कि सांसद मंत्रमुग्ध होकर उन्हें आधे घंटे तक गुदगुदाते हुए सुनते रहे। एक तरह से इससे लिंकन की वक्तृता की धाक जम गई। 14 अगस्त को संसद् का अधिवेशन पूरा हो गया और लिंकन राष्ट्रपति चुनाव में व्यस्त हो गए। लंबे अरसे से अकेले रहते-रहते लिंकन ने प्रचार अभियान के दौरों के समय परिवार को भी साथ ले लिया। वे उतना ही समय दे पाते थे जितना ऐसे समय में दिया जा सकता था। परिवार के साथ ही लिंकन न्यू बेडफोर्ड, टांटन, वारसेस्टर गए और वहाँ टेलर के समर्थन में जबरदस्त उत्साह पैदा किया। सभाओं में विपक्षी दलों पर धारदार हमले किए। उनके भाषण का ओज एक साथ डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रत्याशी के साथ निर्दलीय प्रत्याशी न्यूकेन की स्थापनाओं को उड़ा ले जाता। अखबारों ने भी अपनी-अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार कवरेज किया। ऐसे अखबार, जो ह्विग पार्टी में अमरीका का भविष्य देखते, वे लिंकन के भाषणों को अविकल प्रकाशित करते और जो लोग डेमोक्रेट का समर्थन करते, वे नुक्ताचीनी

@Digitallibrary84

करते हुए छापते। वह भी उनके भाषण के संपादित अंश और संभव होता तो उसकी अनदेखी भी करते।

इसी बीच परिवार के आग्रह के चलते लिंकन नियाग्रा प्रपात देखने गए और उससे बहुत प्रभावित हुए। उनके मन में इसी तरह ताजगी और शक्ति की आकांक्षा के कुसुम पल्लवित हो गए। एक ऐसी आकांक्षा, जो तमाम जद्दोजहद के बाद भी आपकी ताकत को कम नहीं होने देती। ऐसी आकांक्षा जिसका अनंत अमिय कभी खत्म नहीं होता—निरंतर अपनी निष्ठा, गति और संकल्प के साथ बहता रहता है। ऐसी आकांक्षा, जो अपने लक्ष्य को लेकर बदलती नहीं, सिर्फ उसकी ओर बढ़ती रहती है। ये आकांक्षाएँ नियाग्रा ने ही लिंकन को दीं। उन्होंने अपने साथी हर्नडन को लिखा भी था कि इस अनंत शक्ति के प्रति मैं न केवल आश्चर्यचकित हूँ, बल्कि सोच रहा हूँ कि ऐसी पुनीत शक्ति आती कहाँ से है? वहाँ से एकाध स्थान और घूमकर मैरी लिंकन और बच्चे लौट गए। लिंकन इसके बाद और ज्यादा समय टेलर के चुनाव प्रचार को देने लगे। उन्हें निरंतर यह विश्वास होता जा रहा था कि इस बार टेलर ही विजयी होंगे। फिर भी, उन्हें इलिनॉय को लेकर थोड़ी चिंता थी। इस बारे में वे हर्नडन को लिखते और उसके जवाब में आती चिट्ठियों से भरोसा पाते।

इस बीच पार्टी के पुराने एवं चुके हुए लोगों ने एक दाँव खेला और लिंकन की जगह इस बार लोगन को प्रतिनिधि सभा के लिए ह्विग पार्टी का उम्मीदवार बना दिया। उनका यह कदम इतना दरशाने के लिए पर्याप्त था कि वे सभी नई पीढ़ी को प्रतिनिधित्व का कोई अवसर यथासंभव नहीं देना चाहते। इलिनॉय से सिर्फ लिंकन ही ह्विग पार्टी से विजयी हुए थे। वहाँ डेमोक्रेट लोगों का वर्चस्व था। इसे समझते-बूझते हुए भी लोगन को टिकट दिया गया। नतीजतन, लोगन चुनाव हार गए। उसके बाद टेलर के चुनाव के लिए लिंकन ने इलिनॉय में मोरचा सँभाला। कहना शुरु किया कि अगर पार्टी में मतभेद बरकरार रहते हैं तो इस सिर-फुटव्वल का फायदा डेमोक्रेट को होगा, जैसा कि सन् 1844 में हुआ था। उस समय भी पार्टी की फूट की वजह से ही डेमोक्रेट उम्मीदवार जीता था। इस बार के चुनाव में डेमोक्रेट पार्टी की ओर से कास मैदान में थे। लिंकन ने दासप्रथा की समाप्ति से लोगों को एक करना शुरु किया और अंततः लोग लामबंद हो गए और टेलर चुनाव जीत गए। दिसंबर में लिंकन फिर वाशिंगटन चले गए। वे जान गए कि प्रतिनिधि सभा का नया अधिवेशन दासप्रथा के मुद्दे पर होगा। वे आरंभ से ही इसके खिलाफ थे। उनकी सोच थी कि इसका फैलाव रोकना ही अमरीका के हित में है और तभी यह कुप्रथा हमेशा के लिए खत्म हो सकेगी।

एक रोज श्रीमती स्प्रिंग के बोर्डिंग हाउस से पुलिस एक आदमी को पकड़कर ले गई। वह किसी का दास था और यहाँ आकर काम कर रहा था, ताकि

@Digitallibrary84

अपने मालिक को वह उसके खर्च की कीमत दे सके। तभी उसकी मुक्ति संभव थी। कुछ समय तो वह काम करके मालिक को पैसे देता रहा, लेकिन बीच में ही मालिक की नीयत बदल गई। वह भी तब जब सिर्फ 60 डॉलर बाकी रह गए थे। इस घटना से लिंकन और उनके कई साथी सांसद बेहद विचलित हुए। वाशिंगटन के पास गुलामों का व्यापार खुलेआम होता था। फ्रेंकलिन और आर्मफील्ड इसके सबसे बड़े सौदागर थे। वे अपने गोदामों में द. अफ्रीका के इन गुलामों को रखते। रखना क्या था, वे मवेशियों की तरह ठूँसकर रखे जाते। लिंकन इसे 'हब्शियों का अस्तबल' कहते थे। विदेशी जब इन सबको देखते तो उन्हें अचरज होता कि अमरीका जैसा देश कैसे इतने बड़े विरोधाभास से घिरा है। एक तरफ वह अपने को स्वतंत्रता का पुजारी कहता है, दूसरी तरफ मानवीय स्वतंत्रता का खुलेआम उल्लंघन कर रहा है।

यह सब अमरीका में पिछली दो शताब्दियों से हो रहा था। उत्तरी क्षेत्र में इस बारे में आक्रोश बढ़ रहा था। फ्री सॉइल नाम से एक अलग पार्टी भी बनी थी, जो सिर्फ इस मुद्दे पर काम करती थी। इस पार्टी के लोग निरंतर दासप्रथा समाप्ति से संबद्ध कोई-न-कोई विधेयक लाते रहते। बहुमत डेमोक्रेट का था और वे ही इसका विरोध करते थे। ह्विग पार्टी तो उसके समर्थन में थी। लिंकन को इस बारे में कोई संदेह नहीं था कि यह प्रथा ऐसे समाप्त नहीं होगी। इसलिए कि इसके विरोधी तो हैं, लेकिन समर्थक भी कम नहीं हैं। वे सभी सामंती हैं। लिहाजा इसके लिए पूरे देश में एक जरूरी वातावरण बनाना होगा। वे चाहते थे कि इस सिलसिले में क्रमागत बदलाव हो। एकदम से कोई कदम उठाया गया तो दास प्रथा समर्थक एक हो सकते हैं। संसद् में भी दक्षिण के सांसद यथास्थिति के पक्षधर थे, अर्थात् वे दासप्रथा का विरोध नहीं करते थे। मगर उत्तर के सांसद उग्र थे। इस वजह से लिंकन ने 'क्षतिपूर्ति मुक्ति' का प्रस्ताव रखा। इसका अभिप्राय यह था कि दास मालिकों को सरकार मुआवजा दे और उन लोगों को मुक्त कर दिया जाए। 10 जनवरी, 1849 को इस आशय का प्रस्ताव प्रतिनिधि सभा में रखा गया। लिंकन ने दासप्रथा के मसले पर वाशिंगटन में जनमत-संग्रह कराने की बात कही और चाहा कि इसमें सभी गोरे हिस्सेदारी करें। उस दौर में मताधिकार सभी को नहीं था। सिर्फ सीमित स्वतंत्र पुरुषों को ही यह अधिकार था। लिंकन का कहना था कि अगर रायशुमारी की भावना दासप्रथा के खिलाफ दिखाई देती है तो उसे तत्काल समाप्त कर दिया जाए। प्रस्ताव के अनुसार, अगर दास का मालिक चाहे तो सरकार से हर्जाना प्राप्त कर दास को मुक्त कर सकता है। यह भी कि सन् 1850 के बाद यदि कोई दास महिला किसी बालक को जन्म देती है तो वह अनिवार्य रूप से मुक्त होगा। उसे स्वाभाविक जीवन जीने का अधिकार होगा। आरंभ में लिंकन को दोनों धुरवों का समर्थन मिला। अर्थात्

@Digitallibrary84

समर्थक और विरोधी दोनों ने उनकी पीठ थपथपाई। मगर इस बारे में संसद् में बिल लाने की पहल का दोनों छोरों से विरोध हुआ।

उत्तर के दास-विरोधियों का कहना था कि सैद्धांतिक रूप से हम इससे सहमत हैं, लेकिन प्रस्ताव अनावश्यक रूप से दास मालिकों के प्रति उदार है। वहीं दूसरी ओर दक्षिण के सांसद दास मालिकों के हक में थे और उन्हीं के स्वर में बोल रहे थे कि वर्तमान कानून में किसी तरह का कोई हस्तक्षेप न किया जाए। लिंकन समझ गए और उन्होंने बिल को पटल पर रखना व्यर्थ मान लिया।

इस बीच मार्च 1849 में टेलर ने राष्ट्रपति का पदभार ग्रहण कर लिया। स्वाभाविक रूप से ऐसा होता है। लिंकन और ह्विग पार्टी की महत्ता बढ़ गई। सभी जानते थे कि यह चुनाव अपरोक्ष रूप से लिंकन ने ही जीता है। ऐसे में देश भर से उनके पास सरकारी नौकरी के लिए आवेदन आने लगे।

लिंकन का तैयारी करना, किसी विषय विशेष के प्रति संदर्भ तैयार करना और निरंतर अध्ययन करना कभी बंद नहीं हुआ। हर्नडन ने लिखा कि लिंकन जिस बिस्तर पर सोते थे, वह उनके कद के हिसाब से काफी छोटा था। उनके पैर बाहर लटके रहते। मगर फिर भी वे सिरहाने रखी कुरसी पर मोमबत्ती जलाकर घंटों अध्ययन करते रहते। अमूमन वे रोजाना रात दो बजे तक पढ़ते रहते। यही कारण था कि वे ज्यामिति, बीजगणित और खगोलशास्त्र में भी निपुण हो गए थे। बाद में उन्होंने भाषाओं के उद्भव और विकास पर एक भाषण भी तैयार किया था।

मगर इस दौर से उनके अंतिम समय तक उनकी मनोदशा एक विचित्र प्रकार के अवसाद की थी। शायद गिने-चुने शब्द ही उनकी व्यथा की तह तक पहुँच पाते। अर्थात् उस दशा को व्यक्त करने में कुछ शब्द ही पर्याप्त रहे होंगे। हर्नडन ने लिंकन के जीवन-चरित पर काम किया। उन्हें लगा कि इस बारे में लिंकन को लेकर जितनी बातें सामने आई हैं, उनमें सच्चाई कम और अतिरेक ज्यादा है। इसलिए वे लिंकन के साथी रहे स्टुअर्ट, ह्विटनी, जज डेविस से मिले। जेसी वीक ने बताया कि कोई भी नया आदमी उनसे मिलकर आसानी से समझ सकता था कि उनके भीतर गहरा दर्द छुपा हुआ है। इसके बाद हर्नडन खुद इस नतीजे पर पहुँचे कि पिछले बीस वर्षों में शायद ही एकाध दिन उन्होंने खुशी-खुशी बिताया होगा। उनके चेहरे पर दुःख की छाया स्थायी भाव की तरह चस्पाँ हो गई थी।

शाम को सिर झुकाए लिंकन टहल रहे होते, उस समय उनका दुःख सबसे घनीभूत हो जाता। इस बीच मिलनेवाले व्यक्ति से हाथ मिलाने के बावजूद उन्हें याद नहीं रहता था कि कौन उनसे मिलकर गया अथवा उसने उनसे क्या बातें कीं। वे अपने में खोए रहते। कुछेक लोगों का तो यहाँ तक मानना है कि हाथ

@Digitallibrary84

मिलाने की प्रक्रिया का भी उन्हें भान नहीं रहता था। यानी उन्हें उस समय यह भी मालूम नहीं रहता था कि वे कर क्या रहे हैं? जज डेविस उनके बड़े प्रशंसक थे। उनका व्यंग्यात्मक लहजा, छोटी-छोटी कहानियाँ चुनकर सुनाना, इस सब में एक अलग लिंकन दिखाई देता है। बावजूद इसके उनके भीतर के अवसादी मनोभाव और उनका प्रभावकारी स्वरूप दोनों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

लिंकन के पास सरकारी नौकरी के लिए जितने भी आवेदन आते, उन्हें वे अपनी अनुशंसा के साथ राष्ट्रपति टेलर के पास भिजवा देते। लिंकन महज इतनी बात देखते कि वह ह्विग है या नहीं, सरोकारी है या नहीं। उसके बाद उस आवेदन को भिजवा देते। कुछेक लोगों को नौकरियाँ मिलीं भी, लेकिन बड़े पदों पर नियुक्ति न हो सकी। यह बात लिंकन की कही हुई है। यानी टेलर राष्ट्रपति बनने के बाद बदल गए। इसके बाद एक और वाकया हुआ। इलिनॉय के लिए 'भूमि कमिश्नर' का पद निकला। लिंकन के मित्रों ने दबाव बनाया कि लिंकन इस पद के लिए आवेदन करें। पहला कारण आर्थिक बताया कि इसमें 3,000 डॉलर सालाना मिलेंगे। दूसरा कारण, इसके अधिकार काफी ज्यादा थे। इनमें कई विशेषाधिकार भी शामिल थे। तीसरा कारण यह था कि उनके दोस्त नहीं चाहते थे कि फिर से लिंकन वकालत का काम करें। इसमें जज डेविस का भी हाथ था। उनकी नजर में यह पद उनकी राजनीति का विराम-बिंदु नहीं था। अगर लिंकन चाहें तो अपनी राजनीति जारी रख सकते थे। वैसे लिंकन ह्विग पार्टी में इतने वरिष्ठ हो चुके थे कि वे टेलर से चर्चा कर कोई भी पद हासिल कर सकते थे। आरंभ में इस तरह की चर्चा हुई थी, लेकिन लिंकन ने कोई भी पद लेने से इनकार कर दिया था। वे तो मित्रों की दलीलें सुनने के बाद असमंजस में आ गए और उन्होंने 'भूमि कमिश्नर' के लिए आवेदन दे दिया। मगर इस पद पर बटरफील्ड नाम के एक व्यक्ति की नियुक्ति हो गई। लिंकन इससे बेहद क्षुब्ध हुए। उन्हें लगा कि इससे ह्विग पार्टी के कार्यकर्ताओं में घोर निराशा फैलेगी। इस पर लिंकन ने टेलर की आलोचना करते हुए उन्हें 'सजावट की वस्तु' तक कह दिया था। हालाँकि इसके बाद बहुत कोशिशें हुईं कि कहीं लिंकन पूर्वग्रह से ग्रस्त होकर ह्विग पार्टी के खिलाफ ही काम न करने लगें। इसके लिए उन्हें कई प्रलोभन भी दिए गए। उन्हीं में से एक प्रलोभन था ओरेगान के गवर्नर का सचिव बनना। लिंकन ने उसे विनम्रता से ठुकरा दिया। वैसे इस पद के जरिए भी लिंकन को एक विशेष परिधि में बाँधे रखने की साजिश ही थी। ऐसा हो जाता तो लिंकन राजनीति की मुख्यधारा से कट जाते और यही वे बूढ़े चाहते थे, जो लिंकन की लोकप्रियता से भयभीत थे। इसी निराशा के चलते लिंकन ने तय किया कि अब वे राजनीति को तिलांजलि दे देंगे और स्प्रिंगफील्ड में प्रैक्टिस करेंगे। उन्होंने यह बात अपनी पत्नी मैरी टोड लिंकन को

@Digitallibrary84

भी बताई। पहले तो गुस्से से, लेकिन बाद में अपनी बात में शहद घोलकर उन्होंने लिंकन को समझाया कि आज ही सबकुछ करना जरूरी नहीं है। एक अच्छे राजनीतिज्ञ को अपने अवसर के दरवाजों को सदैव खुला रखना चाहिए। उन्हें फिर से अपनी वकालत खड़ी करने में ज्यादा समय नहीं लगा। लिंकन अपने पुराने दोस्त हर्नडन के साथ ही वहाँ वकालत कर रहे थे। जिला और राज्य न्यायालय के साथ लिंकन सुप्रीम कोर्ट में भी मुकदमों की पैरवी करने लगे। सन् 1849 में उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में पहली पैरवी की थी। इस बीच इलिनॉय राज्य को न्याय-व्यवस्था के नजरिए से दो भागों में बाँट दिया गया। एक हिस्सा स्प्रिंगफील्ड और दूसरा शिकागो, इसलिए भी कि शिकागो तेजी से बढ़ता था।

शिकागो हाई कोर्ट में एक दिलचस्प मुकदमा लिंकन के हाथ लगा। झगड़ा पार्कर और हामट के बीच था। लिंकन हामट के वकील थे। पार्कर का कहना था कि उन्होंने पानी से चमकनेवाले पहिए का पेटेंट कराया था, जिसका इस्तेमाल नाजायज तरीके से हामट ने किया है। इस पर लिंकन की दलील थी कि यह जल-शक्ति का प्रयोग है और वह भी सदियों पुरानी तकनीक है। लिंकन की दलीलों से कोर्ट सहमत हो गई और हामट वह मुकदमा जीत गए। लिंकन और हर्नडन की सर्वाधिक प्रैक्टिस संगमन काउंटी के सर्किट कोर्ट में थी। इसी कारण उन्होंने फिर अपना दफ्तर बड़ा कर लिया। वहाँ दोनों ने सन् 1861 तक काम किया। इसी अंतराल में लिंकन स्प्रिंगफील्ड के वरिष्ठ अभिभाषक के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। शाम को टहलने के समय जज डेविस लिंकन का साथ देते थे। दोनों में वैचारिक साम्यता भी पर्याप्त थी। दोनों दासप्रथा के विरोधी थे, लेकिन क्रमागत बदलाव को क्रांति का कारगर तरीका मानते थे। दोनों राष्ट्रवादी विचारधारा के थे और देश की आर्थिक प्रगति के लिए संकल्पबद्ध भी। उस समय की प्रचलित रीति थी कि जज आवश्यक कार्य से अदालत न आ सके तो अपनी जगह वह वरिष्ठ अभिभाषकों में से जिसे चाहे जज की कुरसी पर बैठने के लिए कह सकता है। डेविस की वजह से लिंकन कई बार जज की कुरसी पर बैठे और उनके फैसलों को स्वीकार किया गया। डेविस स्वयं भी फैसला देते समय सिद्धांतों पर ध्यान देते थे। कोई बात सैद्धांतिक रूप से ठीक नहीं है तो उसके कैसे भी तर्क दिए जाएँ, डेविस पर उनका कोई असर नहीं होता था।

लिंकन की वकालत की कई खूबियाँ थीं। वे कोशिश करते कि तर्कों के जाल में वे असत्य की प्रस्थापना न करें। इससे हुआ यूँ कि नए वकीलों की नजर में भी उनका रुतबा और प्रतिष्ठा बढ़ गई। अदालत की बहस को वे निजी विरोध नहीं मानते थे। इसलिए विरोधी वकील भी उनके प्रशंसक बने रहते। गवाहों से सवाल पूछने में भी उनका कोई सानी नहीं था। वे ऐसे सवाल पूछते कि झूठ के कितने भी गुंजलक बनाकर सच को छुपाया गया हो, तो वह बाहर आ ही जाता

@Digitallibrary84

था। सन् 1860 तक लिंकन अपने पास 5,000 डॉलर ही जमा कर पाए थे। वैसे उनके पास करीब 12 हजार डॉलर की जमीन भी थी।

इस बीच उनके पिता थॉमस लिंकन अस्वस्थ रहने लगे। ऐसे में वे अपने दूसरे बेटे जॉनसन की वजह से और भी परेशान हो जाते। जॉनसन ने ही एक बार लिंकन को खबर की कि उनके पिता सख्त बीमार हैं और उन्हें देखना चाहते हैं। लिंकन वहाँ गए। पिता की तबीयत ठीक नहीं थी, मगर इतनी खराब भी नहीं थी जितना जॉनसन ने बताया था। इसका नतीजा यह हुआ कि एक बार फिर जॉनसन की इसी तरह की खबर आई, मगर लिंकन नहीं जा पाए या वे जाने का फैसला नहीं ले पाए। इस बार खबर सच थी। लिंकन अपने पिता के अंतिम समय में नहीं पहुँच पाए। एक वजह यह भी बताई जाती है कि मैरी टोड को प्रसव हुआ था और वे काफी बीमार थीं। इस पर उन्हें जॉनसन की खबर पर पूरा यकीन भी नहीं था। पिछली बार जॉनसन के बुलाने पर लिंकन अपने पिता के पास गए थे। उसी समय उन्हें भूमि कमिश्नर के पद के लिए आवेदन करना था। आवेदन भेजने में देरी भी एक कारण था, जिसकी वजह से उनका चयन नहीं हुआ।

उन्नीसवीं सदी का मध्य एक ऐसा समय था, जब अमरीका में रेल की पटरियाँ बिछ रही थीं। विकास का नया अध्याय कभी निरापद नहीं होता। इलिनॉय में भी समस्याएँ उपजने लगीं। जमीन अधिग्रहण एक बड़ा मसला था। इसके लिए मुआवजे की व्यवस्था थी; लेकिन वह संबंधित व्यक्ति को समुचित मिल सके, इसलिए ज्यादातर कोर्ट की शरण ले रहे थे। लिंकन भी इसमें व्यस्त हो गए। लिंकन यातायात साधनों के प्रबल समर्थक थे। वे मानते थे कि इससे अंततः आम जनता को ही लाभ होता है। लिंकन के एक प्रकरण पर इलिनॉय के हाई कोर्ट ने फैसला सुनाया था कि जनता और कंपनी को कम खर्चवाला रास्ता चुनने से कोई नहीं रोक सकता। दरअसल, इस काम में स्थानीय शेयर होल्डर भाँजी मार रहे थे। अदालत के फैसले ने स्थापना दी कि जनहित सदैव निजी हितों से ऊपर होता है, और नहीं होता है तो होना चाहिए। इस मुकदमे की बहुत चर्चा हुई। नतीजतन, लिंकन को रेल कंपनियाँ अपना वकील बनाने लगीं। स्वाभाविक रूप से उनकी आमदनी भी बढ़ने लगी। इसके साथ-साथ कई मुकदमे और उनके पास आने लगे। नदी पर रेल पुल बने और इससे नाव यातायात बाधित होने पर कानूनी पचड़े खड़े हो जाते। इसके समाधान के लिए अदालत ही मात्र सहारा था। लिंकन कभी रेल कंपनी की ओर से, कभी दूसरे पक्ष की ओर से वकालत करते। स्थिति चाहे जो हो, लिंकन का पक्षकार ही विजयी होता था।

चार साल विधायक और दो वर्ष सांसद रहने के बाद भी लिंकन के मन में अपने राष्ट्र के प्रति कुछ कर गुजरने की तमन्ना बाकी थी। सन् 1850 के बाद से

@Digitallibrary84

वे वकालत में डूबे रहते, लेकिन उनका मन जन-सरोकारों के प्रति लगा रहता। अपने पेशे में भी वे ऐसे ही प्रकरण लेते, जिनका जनता से सीधा संबंध होता था। वैसे जरूरी होने पर ह्विग पार्टी में अपनी भूमिका निभाते रहते थे। दासप्रथा के उन्मूलन के मामले में वे थोड़े उदार थे। उदार इस तरह कि वे इस मुद्दे पर भी देश को बँटने देना नहीं चाहते थे। दक्षिण के सांसद आरंभ से ही दासप्रथा के समर्थक थे। वे दरअसल, वे यथास्थितिवादी थे। उन्हें बदलाव पसंद नहीं था। वे चली-चलाई अवधारणा को परंपरा में बदल देते थे। उन्हीं की धमकियाँ थीं कि इस मुद्दे पर देश बँट भी सकता है। और लिंकन नहीं चाहते थे कि एक बेहतर काम के लिए भी देश की अखंडता को दाँव पर लगाया जाए। इसी मसले पर वे फिर से ह्विग पार्टी में सक्रिय हो गए। सन् 1852 के राष्ट्रपति चुनाव में लिंकन ने अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई। मगर वे अपने इस अवसाद को झटक नहीं पाते थे कि उनके साथी राजनीति की कई सीढ़ियाँ तय कर चुके थे और वे पीछे रह गए थे। उन्हें अपने कद, योग्यता का पूरा भरोसा था। यही वह बात थी, जो उन्हें ज्यादातर निराश बनाए रखती या यों कहें कि वे अपनी इसी निराशा में से भविष्य के लिए आशा की किरणें ढूँढ़ते रहते थे। दासप्रथा की समाप्ति के लिए भी उनके पास कोई प्रायोगिक विकल्प नहीं था। वे चाहते थे कि अफ्रीकी मूल के लोगों को वहीं वापस भेज दिया जाए। यह इसलिए संभव नहीं था कि ज्यादातर अफ्रीकी अमरीकावासी हो चुके थे। कुछ इस तरह कि उनका जन्म ही अमरीका में हुआ था। वे वापस जाने को किसी भी तरह राजी नहीं थे। दूसरी बात यह थी कि दक्षिण के लोग उन्हें मुक्त करने को तैयार नहीं थे और उत्तर के लोग इस बात से अगर राजी थे कि उन्हें मुक्त किया जाना चाहिए, तो वे किसी भी तरह का मुआवजा देने में असमर्थ थे। इस तरह दासप्रथा की परिसमाप्ति एक आदर्श विचार तो था, लेकिन उसका तत्काल कार्यान्वयन संभव नहीं था।

इसी दौर में राष्ट्रपति टेलर का निधन हो गया। पार्टी के वरिष्ठतम सदस्य और लिंकन के आदर्श हेनरी क्ले पर लिंकन के यहाँ-वहाँ भाषण हुए। लिंकन उनसे जुड़े भी रहे और उनकी अवधारणा को विस्तार देने का काम भी किया। शिकागो की एक सभा में लिंकन ने कहा था कि क्ले दासप्रथा के विरोधी थे। मगर वे इस बात से अवगत थे कि कोई भी कुप्रथा रातोरात खत्म नहीं की जा सकती। वे अनेक वर्ष अमरीकी औपनिवेशिक समिति के सदस्य भी रहे, जिसका मानना था कि मुक्त अफ्रीकियों को उनके देश वापस भेजा जाना चाहिए। इसमें लिंकन का आनुषंगिक सुझाव यह था कि इस कार्य में जबरदस्ती नहीं की जानी चाहिए। जो लोग अपनी इच्छा से लौटना चाहते हैं, केवल उन्हें ही वापस भेजा जाना चाहिए।

इस बीच एक साथ दो घटनाएँ घटीं—पहली, लिंकन इलिनॉय सेंट्रल रेल रोड बनाम मैक्लीन काउंटी नामक मुकदमे की तैयारी में व्यस्त हो गए। दूसरी घटना

@Digitallibrary84

राजनीतिक थी। सीनेटर डगलस ने नेंब्रास्का क्षेत्र में सरकार की स्थापना के लिए एक बिल पेश किया। दासप्रथा समर्थकों के दबाव में डगलस ने इस क्षेत्र के लिए मिसौरी समझौते को रद्द करने की व्यवस्था दी। मिसौरी समझौता सन् 1820 में हुआ था और उसके चलते ही यहाँ दासप्रथा पर प्रतिबंध था। नए कदम की वजह से डगलस ने वह कर दिया, जो दासप्रथा समर्थक चाहते थे। ऐसा डगलस ने इसलिए भी किया, क्योंकि मिसौरी और इओवा से प्रवासी यहाँ आ रहे थे और एक अंतरप्रांतीय रेलमार्ग यहाँ से होकर गुजरना था। संसद् में इस पर बहुत बहस हुई। फिर भी 30 मई, 1854 को इसे पारित कर दिया गया। लिंकन ने अपनी व्यस्तताओं के कारण इस सब पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। यही वह वर्ष था, जिसमें प्रतिनिधि सभा के लिए भी चुनाव होना था। पूरे देश में, खासकर उत्तरी इलाके में, कैंसाज-नेंब्रास्का कानून का उल्लंघन हो रहा था। लिंकन पर भी ह्विग पार्टी का दबाव पड़ रहा था। इस बार पार्टी ने येट्स को चुनाव मैदान में उतारा था और लिंकन को जिम्मेदारी दी गई थी कि वे उनका प्रचार करें। उनका प्रचार करते हुए ही लिंकन ने सबसे पहले कहा कि यह कानून गलत है। अमरीका मनुष्यमात्र की स्वतंत्रता का पक्षधर है। इसलिए हमारे यहाँ 'गुलामी' जैसा शब्द भी संविधान में नहीं लिखा गया। उनका कहना था कि स्वतंत्रता का घोषणा-पत्र हमें सिखाता है कि योग्यता में अंतर मनुष्य को मनुष्य से अलग नहीं करता, बल्कि योग्यता सिखाती है कि हर मनुष्य समान है। उन्होंने कहा कि अमरीकी लोकतंत्र का मूलमंत्र है कि कोई भी मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य को शासित न करे। लिंकन ने कहा कि एक ओर आप स्वतंत्रता के पुजारी होने का दावा करते हैं और दूसरी ओर दासप्रथा के पक्ष में खड़े होते हैं, यह पाखंड है। यह भाषण उन्होंने स्प्रिंगफील्ड के प्रतिनिधि सभा हॉल में दिया था। यहीं डगलस ने भी भाषण दिया था। लेकिन लिंकन के भाषण के बाद स्थिति बदल गई। इस भाषण को लिंकन का श्रेष्ठतम भाषण कहा गया।

प्रतिनिधि सभा के चुनाव के साथ ही प्रांतीय विधानसभा के चुनाव भी होने थे। लिंकन प्रतिनिधि सभा के लिए येट्स के पक्ष में धुआँधार प्रचार कर रहे थे। जनता लिंकन के साथ थी। उसी समय दासप्रथा-विरोधियों ने दबाव बनाया कि लिंकन विधानसभा चुनाव लड़ें। वे प्रतिनिधि सभा के सदस्य रह चुके थे। इसलिए उन्होंने इनकार कर दिया। इस पर नई पीढ़ी के लोग इकट्ठे हो गए और उन्होंने लिंकन से साफ कहा कि यदि आप चाहते हैं कि ह्विग पार्टी से येट्स चुनाव जीतें तो आपको इसी पार्टी से विधानसभा चुनाव लड़ना होगा। इसके बाद लिंकन के पास कोई चारा नहीं था। उन्होंने यह माँग मान ली। डगलस वहाँ प्रचार करने आए तो लिंकन ने उन पर आरोप लगाया कि उन्होंने डेमोक्रेट समर्थकों को शराब पिलाई। इतना ही नहीं, डगलस ने उनसे भी पीने का आग्रह किया था। मगर वे पीते नहीं हैं, इसलिए उन्होंने उनके आग्रह को ठुकरा

@Digitallibrary84

दिया। इसका काफी प्रचार हुआ। इलिनॉय में शराबबंदी के पक्ष में रहनेवालों के पर्याप्त वोट थे। ऐसा उन्होंने इसलिए किया कि डगलस ने पहले येट्स पर आरोप लगाया कि वह शराबी हैं। इसकी काट में लिंकन ने यह ब्रह्मास्त्र चलाया था। डगलस समझ गए कि इस पैंतरे से उन्हें नुकसान उठाना पड़ेगा। फिर भी वे दृढ़ संकल्पित थे कि डेमोक्रेट प्रत्याशी को यहाँ से जिताया जाए। दूसरी तरफ लिंकन मोरचा बाँधे खड़े थे और उन्होंने तुर्की-ब-तुर्की डगलस के हर तर्क को काटकर रख दिया। उनके प्रचार विज्ञान का भी फालूदा बना दिया। इस पर लिंकन ने दासप्रथा-विरोधियों का एक मोरचा गठित किया और उसमें समान विचारधारावाले डेमोक्रेट को भी जगह दी। एक तरह से समान विचारों के साथ काम करने का यह पहला लोकतांत्रिक प्रयोग था। डगलस दासप्रथा समर्थक होने के आरोप का खंडन नहीं कर पाए। वे जहाँ जाते, यह आरोप उनका पीछा करता। उन्होंने तरह-तरह से जनता को लुभाने की कोशिश की और कहा कि वे दासप्रथा समर्थक नहीं हैं, केवल सीनेटर के रूप में उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा किया। मगर जनता ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

इसी समय लवज्याय ने 'रिपब्लिकन पार्टी' के गठन का ऐलान कर दिया। लवज्याय दासप्रथा-उन्मूलन के प्रबल समर्थक थे। वे किसी भी सूरत में इस कुप्रथा से देश को मुक्ति दिलाना चाहते थे। उन्होंने लिंकन को रिपब्लिकन पार्टी की राज्य केंद्रीय समिति का सदस्य बना दिया। इसके लिए उनकी स्वीकृति भी नहीं ली गई। ह्विग पार्टी ने लिंकन को पूरी तरह से डगलस का पीछा करने में लगा दिया। नतीजा यह हुआ कि डगलस ने पनाह माँग ली। उसने अपने एक साथी से कहा भी कि इस तरह के विरोध के बाद उसके साथ एक मंच से वे सभा संबोधित नहीं कर पाएँगे। यह एक तरह से लिंकन की जीत थी—वैयक्तिक भी और दलीय भी।

सन्' 54 के अंत में नतीजे आए और जैसी कि अपेक्षा थी, डगलस और उनके कानून को जनता ने पूरी तरह से अमान्य कर दिया। न्यूयॉर्क राज्य प्रतिनिधि सभा की 31 में से 29 पर नेंब्रास्का कानून विरोधियों का कब्जा हो गया। पेन्सिलवेनिया की 25 में से 21 सीटें भी डगलस-विरोधियों के हाथ लगीं। ओहायो की सभी सीटें और इंडियाना की भी लगभग सभी सीटें डगलस के विरोध में खड़ी थीं। इंडियाना की महज एक सीट उनके हाथ लगी थी। इलिनॉय के नतीजे भी कुछ इस तरह के ही थे। वोटों का विभाजन हो जाने से येट्स विजयी नहीं हो पाए थे। इलिनॉय में बहुमत डगलस-विरोधियों का था। इन्हें अमरीकी सीनेट के लिए प्रतिनिधि चुनना था। लिंकन भी उसके प्रत्याशी थे। मगर उस समय नियम था कि कोई भी विधायक सीनेट का चुनाव नहीं लड़ सकता। इस पर लिंकन ने विधानसभा में जाने से इनकार किया, ताकि सीनेटर के लिए उनकी दावेदारी विधिसम्मत हो। इससे लिंकन वैधानिक रूप से सीनेट

@Digitallibrary84

के पात्र तो हो गए, लेकिन जिन लोगों ने उन्हें चुना था या जिन लोगों ने चाहा था कि वे विधानसभा में रहकर उनका प्रतिनिधित्व करें, उन्हें इससे बहुत सदमा पहुँचा। वह सदमा इतना तीव्र था कि उन्होंने सीनेट के चुनाव में लिंकन को हरा दिया। उनकी जगह डेमोक्रेट उम्मीदवार चुनाव जीत गया। हुआ यह कि 100 सदस्यों की विधानसभा में नए सीनेटर को चुनने के लिए 51 वोट चाहिए थे। अर्थात् जिसे 51 वोट मिलते वही विजेता होता। लिंकन के पास 26 वोट थे, उन्हें 25 और चाहिए थे। अंतिम समय तक उनके पास 22 समर्थक और हो गए। उन्हें 3 विधायक और चाहिए थे। चुनाव 31 जनवरी को होना था, लेकिन बर्फबारी की वजह से चुनाव थोड़ा टले। इस बीच डगलस-विरोधी मगर डेमोक्रेट पार्टी के 5 विधायकों ने ट्रंबुल को अपना प्रत्याशी बना दिया। 8 फरवरी को पहले दौर में लिंकन को 45, डेमोक्रेट पार्टी के उम्मीदवार शील्ड को 41 और ट्रंबुल को 5 वोट मिले। डेमोक्रेट समझ गए कि शील्ड का जीतना मुश्किल है। इनकी जगह किसी धन्नासेठ को खड़ा किया जाए, ताकि वह कुछ वोट खरीद सके। इसलिए उन्होंने गवर्नर मेंटेसन का समर्थन कर दिया। नौवें दौर में ट्रंबुल को 35 वोट मिले। इस पर लिंकन ने अपने कमजोर होते हुए भी नया पत्ता फेंका और अपने विधायक ट्रंबुल को दे दिए, ताकि डेमोक्रेट समर्थक मैटेसन चुनाव न जीत सकें। लिंकन की युक्ति काम कर गई और ट्रंबुल सीनेटर चुन लिये गए।

इस नतीजे ने स्वाभाविक रूप से लिंकन को और हताश कर दिया। उन्हें गम हारने का तो था, मगर इससे ज्यादा इस बात का था कि उनके अपने लोग ट्रंबुल के पक्ष में कैसे चले गए। इससे मैरी लिंकन भी आहत हुईं। वैसे लिंकन को अपने भाव छुपाने खूब आते थे। इसीलिए वे ट्रंबुल के सम्मान और विजय की खुशी में दिए गए रात्रिभोज में शामिल हुए थे। हालाँकि बाद में उन्होंने यह भी कह दिया था कि वे आगे से किसी पद की कोशिश नहीं करेंगे। उन्हें संतोष था तो इतना कि उन्होंने मैटेसन को जीतने नहीं दिया। उनकी जगह ट्रंबुल सीनेट में पहुँचे हैं। वे ओजस्वी वक्ता हैं और दासप्रथा के मुद्दे पर डगलस को नकेल डाले रहेंगे।

सन् 1855 में लिंकन फिर से अपनी वकालत में लग गए। फिर भी राजनीतिक हालात पर वे निगाह रखे थे। दक्षिण और उत्तर में दासप्रथा को लेकर वैसा ही वातावरण था जैसा पहले था। यानी दक्षिण पूरी तरह आमादा था कि किसी भी तरह यह व्यवस्था चलती रहे और उत्तर इसे जल्दी-से-जल्दी निपटाना चाहता था। कैंसास और नेंब्रास्का हाल ही में ही अमरीका में शामिल हुए थे। मगर कैंसास पर दासप्रथा समर्थकों ने हमले कर दिए। इससे हर्नडन तक उत्तेजित हो गए थे कि यह कोई तरीका नहीं है। लिंकन ने किसी तरह उन्हें रोका कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। वह तात्कालिक समाधान दिखता अवश्य है। वे दासप्रथा के लोकतांत्रिक राजनीतिक समाधान के पक्षधर थे। वातावरण उबल रहा था और लिंकन की अब तक की पार्टी ह्विग धीरे-धीरे

@Digitallibrary84

अस्ताचल की ओर जा रही थी। उसके पास ऑक्सीजन की कमी हो रही थी। नए मुद्दों और नई ऊर्जा का अभाव साफ दिखाई दे रहा था। लिंकन ऊहापोह में थे कि क्या करें; लेकिन उनकी ऊहापोह बहुत दिन तक कायम नहीं रही। सन् 1855 के अंत तक रिपब्लिकन पार्टी ने अपने लिए पर्याप्त जनाधार खड़ा कर लिया। रिपब्लिकन पार्टी वैचारिक रूप से लिंकन के हर उस मुद्दे का समर्थन करती थी, जिसे लिंकन मनुष्यता के लिए अनिवार्य समझते थे। यूँ भी वे अमरीका के इस दासप्रथा समर्थक रवैए से बेहद खिन्न थे। एक बार तो उन्होंने कहा भी कि हालात ऐसे ही रहे तो अमरीका एक दिन अपनी पहचान खो देगा। उन्होंने कहा कि रूस में जारशाही है। वहाँ सामंत, कैथोलिक पादरी और जार मिलकर सरेआम शोषण कर रहे हैं। लेकिन वे लोग स्वतंत्रता का पाखंड नहीं करते। इसके बाद लिंकन ने फिर से प्रयास किया कि सभी दासप्रथा-विरोधी एक पार्टी के झंडे तले इकट्ठा हो जाएँ।

इलिनॉय रिपब्लिकन पार्टी को राज्य में संगठित करने के लिए स्प्रिंगफील्ड में एक सम्मेलन हुआ था। उसमें यह बात सार्वजनिक हुई कि अब लिंकन ह्विग पार्टी से बहुत दूर निकल आए हैं। नई पार्टी में लिंकन का वजूद मानते हुए उन्हें अंतिम वक्ता की हैसियत से बुलाया गया। मंच से उनका भाषण पर्याप्त प्रहारक था। मुद्दा दासप्रथा का था। उन्होंने कहा कि दक्षिण के लोगों का अव्वल तो यह कहना कि द. अफ्रीका के काले लोगों को दास बनना चाहिए, नितांत अमानवीय है। वे इतना ही नहीं चाहते, बल्कि मजदूरी में लगे ज्यादातर लोगों को दास बनाना चाहते हैं। इनमें गोरे मजदूर भी शामिल हैं। लिंकन ने कहा कि डगलस की तरह उत्तर के डेमोक्रेट भी इस तरह की माँग उठा रहे हैं। उन्होंने देश की एकता को बरकरार रखने की अपील की और रिपब्लिकन पार्टी को स्वतंत्रता व एकता के प्रति पूर्ण समर्पित पार्टी बताया। उनके इस भाषण पर हर्नडन का कहना था कि इससे लिंकन का राजनीतिक कद और बढ़ गया। उनके भाषण में जरूरी आग, ताकत और जोश था; समानता, सच्चाई और सामाजिक न्याय की बातें थीं। उनका भाषण सचमुच आंदोलित कर देनेवाली एक पुकार था।

सन् 1856 का वर्ष लिंकन की वक्तृता और रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य के रूप में उनकी स्थापना का वर्ष तो था, लेकिन दूसरी राजनीतिक पराजय की तरह यह समय भी कुछ अलग नहीं रहा। उनके मन की निराशा इस वर्ष भी जारी रही। इस साल डेमोक्रेट ने बुचा को प्रत्याशी बनाया। रिपब्लिकन पार्टी ने जॉन सी. फ्रीमौंट को उम्मीदवार बनाया। दूसरे उम्मीदवार थे फिलमोर। इसी समय जून में रिपब्लिकन पार्टी का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। उसमें लिंकन शामिल नहीं हो पाए थे। फिर भी उपराष्ट्रपति पद के लिए दो नाम उभरे, जिसमें एक नाम लिंकन का भी था। दूसरा नाम डेटन का था। लेकिन अमरीका में तो पार्टी आलाकमान

प्रत्याशी तय नहीं करता, वहाँ पार्टी में चुनाव होता है। इस चुनाव में डेटन को लिंकन से ज्यादा मत मिले। राष्ट्रपति चुनाव के बारे में लिंकन की सोच यह थी कि फ्रीमौंट और फिलमोर के बीच वोट बँट जाएँगे। इनका वोट बैंक भी दासप्रथा-विरोधियों का वोट बैंक था। वही हुआ भी, जो लिंकन सोच रहे थे। उनका विश्लेषण एक बार फिर सही साबित हुआ।

इस बीच रिपब्लिकन पार्टी की जड़ें जमाने के लिए लिंकन ने बहुत सारे प्रयास किए। न केवल भाषण दिए बल्कि अपने निजी मित्रों को भी पत्र लिखकर पार्टी की प्रतिबद्धता और मूल सिद्धांतों से अवगत कराकर प्रेरित किया कि वे रिपब्लिकन पार्टी के हाथ मजबूत करें। हर बार निराशा हाथ लगने पर एक वर्ष वे अपने पेशे वकालत को देते थे। इस बार भी उन्होंने ऐसा ही किया। इसका प्रतिफल यह हुआ कि उन्हें अपने पेशे में प्रसिद्धि मिली और धन भी। फिर भी, वे इस काम में लगे रहे कि रिपब्लिकन पार्टी की नींव मजबूत हो। उसका सांगठनिक ढाँचा शक्तिशाली हो, ताकि उस पर एक बुलंद इमारत खड़ी की जा सके। अर्थात् सन् 1858 के चुनाव में किसी भी स्थिति में डगलस फिर से जीतकर न आ सकें। लिंकन अपने काम के प्रति उसमें समाहित निष्ठा के प्रति अतुलनीय थे।

एक रात लिंकन के एक साथी ने देखा कि लिंकन रात में अपने बिस्तर पर अकेले बैठे हैं—इससे अनजान कि कोई उन्हें देख रहा है या उनका संज्ञान ले रहा है। वे कह रहे थे या कि एकालाप कर रहे थे कि यह देश आधी-आधी मानसिकता के साथ नहीं जी सकता। इस देश का आधा हिस्सा गुलामों का और आधा स्वतंत्र लोगों का हो, ऐसा नहीं चल सकता। गुलामी को विदा होना ही होगा। उस श्रोता ने जो भी सोचा हो, अपनी प्रतिबद्धता के प्रति ऐसा जुनून जरूरी है।

लिंकन उनचास वर्ष के हो गए। उनके खाते में जमा था—

व्यापार	असफलता
विवाह	असंतोष और दुःख
कानून	जबरदस्त सफलता, आय 3 हजार डॉलर सालाना
राजनीति	कुंठा, निराशा और असफलता।

सन् 1858 की गरमियाँ आ गईं। लिंकन ने इसी वर्ष जीवन की पहली सबसे बड़ी लड़ाई लड़ी। लिंकन के विरोध में रहनेवाले अब तक राष्ट्रीय ही नहीं, वैश्विक छवि के नायक हो चुके थे। मिसौरी समझौते के बाद से घटी घटनाओं

@Digitallibrary84

ने डगलस को परेशान किया, उनकी छवि धूमिल की; लेकिन जल्दी ही उन्होंने इससे निजात पा ली।

इधर कैंसास में हालात तेजी से बदल रहे थे। वह अमरीका में दास-राज्य के रूप में शामिल होना चाहता था। लेकिन क्या उसे इस रूप में शामिल होना चाहिए? इस पर डगलस ने इनकार कर दिया। डेमोक्रेट चाह रहे थे कि कैंसास को जल्दी से राज्य का दर्जा मिल जाए। ऐसा हो जाए तो कम-से-कम खून-खराबे की नौबत न आने पाए। यह डेमोक्रेट्स की सोच थी। फरवरी 1857 में संविधान समिति के चुनाव की घोषणा हुई। कुल 9,000 मतदाताओं में से 2,200 ने ही इसमें हिस्सेदारी की। अक्तूबर में कैंसास का संविधान बन गया। यह एक ऐसा दस्तावेज था, जिसमें दासप्रथा का खुला समर्थन था। उसे वैधानिक जामा पहनाने की कोशिश थी। उसमें प्रावधान था कि कैंसास के दास दास ही बने रहेंगे। उनकी संतानें भी दास ही कहलाएँगी। यह भी कि इसे सात वर्षों तक बदला नहीं जा सकेगा। राष्ट्रपति ने उसे मंजूर करके कांग्रेस के पास भेज दिया, मगर कांग्रेस ने उसे पारित करने की बजाय रायशुमारी के लिए फिर से कैंसास भेज दिया। डगलस को बेहतर तरीके से ज्ञात था कि उसे सीनेट के लिए फिर खड़ा होना है और वह भी इलिनॉय राज्य से। वह पूरा राज्य ही दासप्रथा पर बड़ा रुख रखता था। उनकी सोच थी कि यह सब अमानवीय है और इस पर तत्काल अंकुश लगाया जाना चाहिए। डगलस ने एक और चाल चली। उन्होंने कहा कि कैंसास के लोगों को दोनों ही स्थितियों में वोट देने का अधिकार दिया जाना चाहिए। यानी चाहे वे दासों के राज्य के रूप में स्वीकारे जाएँ अथवा स्वतंत्र रूप में। वोट देने पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाना चाहिए। मोटे तौर पर डगलस की यह माँग कोई आपत्तिजनक नहीं थी। इस पर भी राष्ट्रपति बुचानन को यह सब ठीक नहीं लगा। इस मसले पर बुचानन और डगलस में झड़प हो गई। वास्तव में डगलस अगले चुनाव के लिए अपनी जमीन और जनाधार तैयार कर रहे थे।

कैंसास को दास-राज्य के रूप में अमरीका में स्वीकार न किए जाने के बयान के पीछे डगलस की राजनीतिक इच्छा यह थी कि इससे तेजी से बढ़ते रिपब्लिकन का प्रभाव थम जाएगा; इतना ही नहीं, ये लोग राजनीतिक चेतना के रूप में प्रौढ़ नहीं हैं। ऐसे में डगलस के इस बयान को लोग सचमुच उनके रूपांतरण की प्रक्रिया समझ लेंगे। डगलस ने गलत नहीं सोचा था। रिपब्लिकन उनके झाँसे में आ भी गए। कुछेक रिपब्लिकन लोगों ने तो डगलस की इस बारे में प्रशंसा भी करनी शुरु कर दी थी। डगलस और बुचानन में विवाद कुछ इस कदर बढ़ा कि तू-तू, मैं-मैं में डगलस यहाँ तक कह गए कि ईश्वर की कसम मैंने जेम्स बुचानन को यहाँ तक पहुँचाया है और मैं फिर से उन्हें जमीन पर ला सकता हूँ। यह केवल डगलस की धमकी भर नहीं थी, ऐसा कहकर उन्होंने एक तरह का इतिहास रच दिया।

@Digitallibrary84

दूसरी तरफ लिंकन ने रिपब्लिकन पार्टी को आपसी फूट से बचाने का काम किया और डगलस के इरादों को ठीक-ठीक समझाया। 16 जून, 1858 को स्प्रिंगफील्ड में रिपब्लिकन पार्टी का अधिवेशन हुआ। इसका उद्देश्य सीनेट के लिए अपने प्रत्याशी का चुनाव करना था। सम्मेलन में लोगों ने समवेत स्वर में लिंकन का नाम लिया और उन्हें प्रत्याशी बना दिया गया।

डगलस अब तक अपनी सन् 1854 की धूमिल छवि को फिर से चमका चुके थे। जिस शिकागो शहर ने उनके खिलाफ झंडे झुकाकर भर्त्सना की थी, वही शहर उनके पैरों में फूल बिछा रहा था। सैकड़ों-हजारों लोगों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। कुछ ही समय में इलिनॉय को नया सीनेटर चुनना था। स्वाभाविक रूप से उसके प्रत्याशी डगलस बने। चुनावी रणभेरी से पहले रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार चुने जाने पर लिंकन ने मार्मिक भाषण दिया। उनका कहना था कि दासप्रथा और स्वतंत्रता को एक साथ नहीं रखा जा सकता, इसलिए हमारे देश में भी ये एक साथ नहीं चल सकते। डगलस दासप्रथा का राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं।

लिंकन ने दासप्रथा के मसले पर सुप्रीम कोर्ट के रवैए की भी निंदा की। उन्होंने कहा कि इलिनॉय जैसे स्वतंत्र राज्य की हालत दास-राज्य की तरह हो गई है और इसके लिए सुप्रीम कोर्ट पूरी तरह से जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि इससे निपटने के लिए जरूरी है कि हम नई राजनीतिक व्यवस्था के बारे में गहराई से सोचें, ताकि हम नई न्याय प्रक्रिया में भी हस्तक्षेप कर सकें। इसलिए भी कि सामाजिक न्याय सामाजिक चेतना के बाद की कड़ी है। उन्होंने दक्षिण के लोगों के षड्यंत्र में उत्तर के डेमोक्रेट को भी बराबर का जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि डगलस चाहते हैं कि रिपब्लिकन पार्टी में फूट पड़ जाए। इसके लिए वे अपनी घिसी-पिटी कूटनीति को चाकू की तरह चला रहे हैं।

लिंकन को शंका थी कि लंबित मामलों के फैसले में सुप्रीम कोर्ट दासप्रथा को जिंदा रखने में मदद करेगा। इससे दासप्रथा अमरीका की स्थायी संस्था बन जाएगी। उन्होंने कहा कि डगलस जैसा नेता गिरगिट की तरह रंग बदलता है। उन्होंने डगलस की तुलना एक ऐसे शेर से की, जिसके दाँत नहीं हैं। लिंकन ने उनके लिए एक मुहावरा गढ़ा 'जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है'। उन्होंने कहा कि दासप्रथा जैसी कुप्रथा को समाप्त करने का काम डगलस जैसे दोगले व्यक्ति को नहीं सौंपा जाना चाहिए। उन्होंने अपील की कि यदि सभी लोग अपनी एकता को बनाए रखने में कामयाब रहे तो विजयी होकर इस काम को हम लोग करेंगे।

@Digitallibrary84

चुनाव के आते ही डगलस और लिंकन को आमने-सामने होना ही था। डगलस जान चुके थे कि लिंकन न केवल ईमानदार हैं, बल्कि चतुर वक्ता भी हैं। बावजूद अपने यश और वक्तृता शैली के वे लिंकन के लोहा लेने की ताकत से बखूबी वाकिफ थे। डगलस जुलाई में शिकागो आ गए। वहाँ से उन्होंने अपने चुनावी युद्ध का शंखनाद यह कहते हुए किया कि कैंसास का दासप्रथा समर्थक संविधान पास हो जाता, उसे कांग्रेस से रामशुमारी के लिए मैंने ही भिजवाया था। साफ है कि वे नहीं चाहते थे कि इस तरह का कोई कानून पारित हो। उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि इसका मतलब साफ-साफ समझा जाए। इसका मतलब यह है कि लोग अपना फैसला करना सीखें। इसी तरह से स्व-शासन का जन्म होता है। लिंकन भी वहीं थे। उन्हें बोलना नहीं था। उनके बारे में डगलस ने कहा कि वे एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। लेकिन वे उत्तर और दक्षिण में युद्ध की बातें करते हैं। हमारी सरकार गोरों ने चुनी है, उन्होंने बनाई है। यह उन्हीं के आधार पर बनी है, गोरों के अपने लाभ के लिए। दूसरे दिन वहीं उसी स्थान पर लिंकन ने डगलस को बिंदुवार जवाब दिए। उन्होंने कहा कि डगलस का आशय यह है कि एक नस्ल दूसरी नस्ल से हीन है। यदि ऐसा है तो वे स्वतंत्रता के घोषणा पत्र का उल्लंघन कर रहे हैं। डगलस शब्दों के गुंजलक में लोगों को फाँस रहे हैं, उन्हें गुमराह कर रहे हैं।

इस तरह दोनों के बीच अनेक बहसें हुईं, जिससे लिंकन को पर्याप्त यश प्राप्त हुआ। दोनों के वाक्युद्ध में भावना का विस्फोट हो रहा था और जनता उत्तेजना में तप रही थी। धीरे-धीरे लोगों की रुचि के साथ मीडिया भी इसमें दिलचस्पी लेने लगा। लोग इतने अधिक आने लगे कि हॉल में बहस करवाना नामुमकिन हो गया। लिहाजा कई बहस खुले में की गईं। बहस में लिंकन ऐसे ही नहीं कूद गए। उन्होंने इसके लिए जबरदस्त तैयारी की। विचारों और मुहावरों को गढ़ने के बाद लिंकन नोट कर लेते। चाहे वह लिफाफे का पीछे का भाग हो या अखबारों के हाशिए, जहाँ जगह दिखाई देती, वे लिखकर रख लेते। वे सारी पर्चियाँ अपने हैट में रखते। बाद में उन्होंने उसे एक बड़े कागज पर उतार लिया था। पहले भाषण से पूर्व की संध्या पर लिंकन ने अपने कुछेक बुद्धिजीवी मित्रों को स्टेट हाउस के वाचनालय में बुलवाया। बंद कमरे की बैठक में लिंकन अपना भाषण पढ़ रहे थे। वे एक-एक पैरा पढ़कर रुक जाते। उस पर प्रतिक्रिया लेते और जरूरी समझने पर उसमें संशोधन भी करते। उस समय उनके कुछेक वाक्य सूत्र-वाक्यों की तरह चर्चित हो गए थे। जैसे—

- ❑ किसी भी सदन को अपने ही द्वारा विभाजित होने पर खड़ा नहीं रखा जा सकता।

@Digitallibrary84

❑ मेरा विश्वास है कि यह सरकार स्थायी रुप से आधे दास और आधे स्वतंत्र लोगों के साथ नहीं चल सकती।

लिंकन के भाषणों के ये वाक्यांश जिसने भी सुने, उसने प्रशंसा में प्रशस्ति पढ़ी। लोगों की राय थी कि इससे मतदाताओं को रिझाने में मदद मिलेगी।

पहली बहस शिकागो से 75 मील दूर ओहावा शहर में हुई थी। मगर इस बीच बुचानन और डगलस के बीच पड़ी दरार भरी नहीं जा सकी और बुचानन ने कमर कस ली कि डगलस को चुनाव में निपटाना है। आपसी कतरब्योंत और कुहनीबाजी के चलते इलिनॉय के वे अफसर बदल दिए गए, जो डगलस समर्थक हो सकते थे। डेमोक्रेट पार्टी दो-फाड़ हो गई। स्वाभाविक रुप से इससे रिपब्लिकन पार्टी को लाभ पहुँचा। एक राष्ट्रीय डेमोक्रेटिक पार्टी गठित हो गई। लेकिन चुनावी गरमी के बढ़ने के साथ वे रिपब्लिकन पार्टी के नजदीक आ गए। इसलिए भी कि उनका उद्देश्य भी डगलस के विजय अभियान को रोकना था।

डगलस बहस के लिए कहीं जाते तो विशेष रेलगाड़ी से जाते थे। शानदार नीले सूट और पत्नी के साथ गाड़ी से उतरते और बहस जहाँ रखी जाती, सीधे वहाँ पहुँचते। इसके विपरीत लिंकन साधारण दर्जे में सफर करते और उनकी वेशभूषा भी आम आदमी की तरह होती। इससे वे मतदाताओं को ज्यादा प्रभावित करते। वे उन्हें अपने ही परिवार का सदस्य समझते। मित्रों का दबाव था कि लिंकन डगलस को चुनौती दें, उनसे बहस करें और उन्हें निरुत्तरित करें।

ओहावा शहर में जहाँ पहली भाषण प्रतियोगिता थी, वहाँ समय से पहले कारें आकर थम गईं, सीटें भर गईं। लोग शिकागो से चलकर आए थे। समूचे क्षेत्र में एक तरह की उत्तेजना थी। लोग परेड की शक्ल में ड्रम बजाते हुए पैदल उधर जा रहे थे, जहाँ बहस होनी थी। कुछ शहरों से डगलस भी गुजरे। छह सफेद घोड़ों की बग्घी में डगलस के समर्थकों की संख्या कम नहीं थी। इसके जवाब में लिंकन समर्थकों से रहा नहीं गया। उन्होंने सफेद खच्चरों की दो गाड़ियाँ दौड़ा दीं। एक गाड़ी में 32 लड़कियाँ थीं। उन पर अमरीकी राज्यों के नाम लिखे थे और नारे लिखे थे।

वास्तव में दोनों वक्ता दो विपरीत ध्रुव की तरह थे। डगलस महज पाँच फीट चार इंच के थे तो लिंकन छह फीट चार इंच के। डगलस सुंदर और विनम्र दिखाई देते थे, जबकि लिंकन कुरुप और भद्दे। लिंकन में शारीरिक आकर्षण नहीं था, चुंबकीय तत्त्व का अभाव था, जबकि डगलस में यह सब कूट-कूटकर भरा था।

@Digitallibrary84

डगलस अवसरवादी थे। उनकी कोई राजनीतिक नैतिकता नहीं थी। ऐसा लिंकन का कहना था। सिर्फ जीतना ही उनका लक्ष्य था। मगर लिंकन सिद्धांत के लिए लड़ रहे थे। इसलिए कौन जीतेगा, यह उनके लिए ज्यादा मतलब नहीं रखता था। उन्होंने कहा भी था कि अमरीकी सीनेट के लिए डगलस विजयी हों या मैं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। लेकिन हमने जो मुद्दे आपके सामने रखे, वे किसी भी आदमी की जीत या उसके राजनीतिक भविष्य से कहीं ज्यादा बड़े और महत्त्वपूर्ण हैं। चुनाव के बीच डगलस का दासप्रथा के बारे में कहना था कि हर राज्य को अपना फैसला अपने आप करना चाहिए। साफ था कि यदि वे दासप्रथा चलाना चाहते हैं तो जारी रखें। लिंकन इसके एकदम विरोध में थे। उनका मानना था कि डगलस दासप्रथा को सही ठहराते हैं। मैं ऐसा नहीं मानता। यही वह आधारभूमि है, जिस पर पूरी बहस अवलंबित है। उनका कहना था कि यदि कोई समुदाय दासों को रखना चाहता है तो उन्हें रखने की इजाजत देनी चाहिए, यदि यह गलत नहीं है, यदि गलत है तो वे लोगों को गलत काम करने की इजाजत नहीं दे सकते। दासत्व एक बड़ी नैतिक भूल है। डगलस यदा-कदा बीच-बीच में हस्तक्षेप करते थे, मगर लिंकन नीग्रो के पक्ष में बोलते थे।

लिंकन कहते थे कि मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ कि यदि तुम उन्हें नापसंद करते हो तो उन्हें अकेला छोड़ दो। ईश्वर ने उन्हें थोड़ा दिया है तो उन्हें थोड़े का आनंद उठाने दो। उनके पास जीवन, स्वतंत्रता और सुखोपभोग का अधिकार तो किसी भी दूसरे आदमी से कम नहीं है। डगलस कहने लगे कि लिंकन चाहते हैं कि गोरों को नीग्रो से वैवाहिक संबंध बनाने चाहिए। सभी गोरों को चाहिए कि वे कालों का न सिर्फ आलिंगन करें, बल्कि उन्हें अपने घर में जगह भी दें। लिंकन ने इसका कई स्थानों पर खंडन किया। उन्होंने कहा कि मैं कह रहा हूँ कि काले लोगों को दास नहीं बनाया जाना चाहिए तो इसका आशय यह नहीं है कि मैं यह कह रहा हूँ कि नीग्रो स्त्री से वैवाहिक संबंध बनाने चाहिए। हमारे यहाँ पर्याप्त गोरे पुरुष हैं, जो गोरी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं और उनके यहाँ भी पर्याप्त नीग्रो हैं, जो नीग्रो महिलाओं के साथ घर बसा सकते हैं। ईश्वर के लिए उन्हें ऐसा करने दीजिए।

करीब छह हफ्ते तक चली इस बहस का अंतिम दौर 15 अक्तूबर, 1858 को मिसीसिपी नदी के किनारे आराटन शहर में हुआ। यहाँ डगलस ने प्रतियोगिता की शुरुआत की। रुँधे कंठ से उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता का घोषणा पत्र जब उन्होंने जारी किया तब उसका आशय न हब्शियों से, न जंगली रेड इंडियंस से, न किसी दूसरी असभ्य जाति से था। स्वतंत्रता की बात सिर्फ गोरों के लिए की गई थी। इस पर लिंकन ने कहा कि मुख्य मुद्दा दो वर्गों के बीच संघर्ष का है। एक वर्ग दासप्रथा को सही मानता है और दूसरा गलत। यह कभी न थमनेवाला

@Digitallibrary84

संघर्ष है, जो पूरी दुनिया में चल रहा है। यह हमेशा से चल रहा है। एक तरफ मनुष्यों के सामान्य अधिकार हैं और दूसरी तरफ सामंतों के दैवी अधिकार।

लिंकन की यह भाषा और इसके राजनीतिक बिंब बताते हैं कि वे सामाजिक समझौते के हाब्स, लॉक, रूसो के सिद्धांत, मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और नीत्शे की भाषा व भाव से परिचित थे।

विधानसभा चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी ने दक्षिण की सीटें जीतीं और रिपब्लिकन ने उत्तर की। सेंट्रल इलिनॉय में दोनों ही लगभग बराबर थे। इसी आधार पर सीनेटर का भी चुनाव होना था और डगलस यहाँ से एक बार फिर छह साल के लिए सीनेट के लिए चुन लिये गए। इसकी एक बड़ी वजह तो यह थी कि इलिनॉय का उत्तर का हिस्सा बड़ा तो था, लेकिन उसकी सीटें कम थीं। इसके उलट दक्षिण का हिस्सा छोटा था, मगर उसकी सीटें ज्यादा थीं। कहा तो यह भी जाता है कि डगलस एक अमीर आदमी थे—पर्याप्त चालाक और अपनी जीत के प्रति सतर्क- सजग। लिंकन मात्र 8 वोटों से सीनेट का चुनाव हारे थे। उनकी निराशा घनीभूत थी, फिर भी उन्होंने लोगों से कहा कि नागरिक स्वतंत्रता हमारा लक्ष्य है। हम इसमें कुछ कदम आगे भी बढ़े हैं।

इस जीत-हार के बाद भी न डगलस शांत थे, न लिंकन चुपचाप। लिंकन को निश्चित ही अपेक्षा थी कि दिखाई देता समर्थन वोटों की शक्ल भी लेगा। मगर ऐसा नहीं हुआ। इससे उन्हें गहरी वेदना हुई। इस बीच नवगठित रिपब्लिकन पार्टी चरमरा गई। कोई बड़ा आर्थिक प्रबंध तो था नहीं। पार्टी पर करीब 4,000 डॉलर का कर्ज हो गया। अध्यक्ष जड ने लिंकन से चर्चा भी की। इस पर लिंकन ने पार्टी को अपनी ओर से 250 डॉलर का आर्थिक सहयोग दिया। इतना ही नहीं, उन्हें और सहयोग दिलाने की चेष्टा भी की। रिपब्लिकन पार्टी में सभी लोग एक ही स्थान के नहीं थे। पार्टी अध्यक्ष जड शिकागो के थे और वहीं के दूसरे रिपब्लिकन नेता थे वेंटबर्थ। दोनों का आपसी संबंध सिर-फुटौवल में बदल गया था। वेंटबर्थ ने आरोप लगाया कि सन् 1855 एवं 1858 के चुनाव में लिंकन को हरवाने में जड की महती भूमिका थी और आज वे इलिनॉय का गवर्नर बनना चाहते हैं।

विवाद जब भी बढ़ता है, मध्यस्थता की माँग भी उतनी ही तेजी से उठती है। दोनों लिंकन से मध्यस्थता चाहते थे, मगर लिंकन ने ऐसा करने की बजाय दूसरे राज्यों से भी अपील की कि पार्टी गहरे संकट में है। उसकी एकता को बनाए रखने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा प्रयासों की जरूरत है। इस बीच डगलस अपनी रोटियाँ सेंकने में लगे थे। वे चाहते थे कि रिपब्लिकन पार्टी के झगड़े इतने बढ़ें कि यह दो फाड़ हो जाए। इसलिए वे एक धड़े को कमोबेश मदद करते रहते थे।

@DigitalLibrary84

लिंकन इस डगलसवाद से भिज्ञ थे। उन्हें मालूम था कि डगलस एक षड्यंत्रकारी राजनीतिज्ञ है। वह अगले चुनाव में राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनने की सोच रहे थे। उनके लिए पार्टी की प्रतिबद्धता कोई मुद्दा नहीं थी। इसलिए अगर डेमोक्रेट पार्टी ने प्रत्याशी नहीं बनाया तो उन्हें रिपब्लिकन से हाथ मिलाने में देरी नहीं लगेगी। उन्होंने अपने 'जन स्वायत्तता' के मुहावरे को चर्चित करने की भरसक कोशिश की। डगलस का कहना था कि राज्य जनता से होता है और जनता को इसका अधिकार होना चाहिए कि वह क्या चाहती है। लिंकन का कहना था कि डगलस अपने इस सिद्धांत की आड़ में दासप्रथा के कलंक को अमरीका के भाल पर स्थायी रूप में मढ़ देना चाहते हैं। वे ऐसा मानते थे कि अगर यह सिद्धांत जीवित रहा तो दासप्रथा का उन्मूलन असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाएगा।

वैसे डगलस के पास एक अन्य रास्ता था और वह था एक और नई पार्टी का गठन। उन्हें अच्छी तरह से पता था कि रिपब्लिकन समर्थकों में अनेक ऐसे हैं, जो उन्हें सही मानते हैं। डेमोक्रेट वे खुद थे और उन्हें पता था कि उनकी पार्टी के अधिसंख्य लोग उनके व्यक्तित्व की परिधि से बाहर नहीं जा सकेंगे। वे इसी सिलसिले में ओहायो गए भी। मगर इसकी भनक लिंकन को लग गई कि डगलस के दिमाग में क्या सुगबुगाहट चल रही है? उन्होंने भाँप लिया कि वे एक नई पार्टी बनाने की कोशिश में जनाधार बढ़ाने की जुगत कर रहे हैं। लिंकन ने अनेक सभाएँ संबोधित कीं और कहा कि डगलस का जन स्वायत्तता का सिद्धांत कोरी लफ्फाजी और पाखंड है। वे हब्शियों को इनसान नहीं, जंगली जानवर समझते हैं। उनकी इच्छा है कि बड़ी संख्या में हब्शियों को यहाँ लाकर दास बनाया जाए। वे इस तरह धंधा करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि वर्षों पहले मैंने वैलेंड की पुस्तक में पढ़ा था कि 'श्रम ही उत्पादन का मुख्य स्रोत है।' आशय साफ है कि श्रम पूँजी से पहले है और एक पृथक् इकाई भी है। पूँजी भी श्रम का उत्पादन है—अर्थात् श्रमिक पूँजीपति से बड़ी इकाई हुआ। स्वतंत्र समाज में पूँजी का अपना महत्त्व जरूर है। पूँजी उस इनसान को रोजगार देती है, जिसके पास अपना पेट भरने के लिए ईश्वर ने दो हाथ दिए हैं। उन्होंने ओहायो की जनता से कहा कि स्वतंत्र समाज एक श्रमिक से सदैव श्रमिक बने रहने की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि उसे अवसर देता है कि यदि वह और कुछ करने की इच्छा व योग्यता रखता है तो वह करे। उन्होंने कहा कि वे स्वयं भी मजदूर रहे हैं।

आयोवा, ओहायो, इंडियाना, विस्कोसिन और कैंसास में हुए लिंकन के भाषणों के बाद 'इलिनॉय गजट' नामक अखबार ने सबसे पहले लिखा कि लिंकन को राष्ट्रपति बनना चाहिए। उत्तरी भाग से अखबारों की राय में अब यह जरूरी हो गया कि लिंकन राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति में से कोई पद सँभालें। इस समय तक लिंकन अपने सपने से पूरे देश को अवगत करा चुके थे। पूँजीवाद का अभ्युदय

@Digitallibrary84

और रूढ़िवादी सामंतवाद की जर्जरावस्था अमरीका की ताजा आर्थिक हालत बताती थी।

लिंकन अपने को राष्ट्रपति पद के योग्य नहीं समझते थे, अलबत्ता उनकी पत्नी मैरी टोड लिंकन को जरूर भरोसा था कि लिंकन एक दिन अवश्य राष्ट्रपति बनेंगे। जब कभी मैरी उनसे इस बारे में कहतीं तो वे ठठाकर हँसते और कहते कि उनके जैसा आम आदमी भला कभी राष्ट्रपति बन सकता है। सैमुअल गेलोबे तो लिंकन के लिए 'राष्ट्रपति पद के लिए लिंकन' जैसा आंदोलन चलाना चाहते थे। लिंकन का सबको एक ही विनम्र उत्तर होता कि वे खुद को इस योग्य नहीं समझते। मगर उन्हें यह भी लगता था कि रिपब्लिकन पार्टी में उनके लिए जरूर संभावनाएँ हैं। आखिर वे उसके संस्थापक सदस्य थे। उन्होंने इसके लिए निजी और चुपचाप चलनेवाले प्रचार का हथकंडा बनाया। वे इससे तो परिचित थे ही कि डगलस के साथ हुए उनके वाद-विवाद को भरपूर सराहना मिली थी। लोग उनके साथ वैचारिक रूप में खड़े थे। इसलिए बेहतर होगा कि उसका संकलन कर समग्र रूप से छपवाया जाए। उन्होंने अपने भाषण इकट्ठे किए, उन्हें चिपकाया। इस बीच उन्हें ओहायो की एक संस्था मिल गई, जिसने 268 पृष्ठों की एक पुस्तक प्रकाशित कर दी। अपेक्षित रूप से पुस्तक को सफलता मिली। लोग उसे ढूँढ़कर पढ़ते थे। इसी से प्रेरित होकर लिंकन ने 'आत्मकथा' का करारनामा किया। उसमें अपने निजी गीत गाने की बजाय उन्होंने सार्वजनिक जीवन, उसके अनुभव, विचारों को ज्यादा तरजीह दी। उसे भी खूब सराहा गया। इसी के चलते उन्हें न्यूयॉर्क में फरवरी 1860 को एक भाषण देने का निमंत्रण मिला। लिंकन बोलने से पहले काफी तैयारी करते थे। इस बार उन्होंने नया सूट भी सिलवाया था। मैनहटन के कूपर यूनियन में लिंकन ने कहा कि कौन कहता है कि केंद्र सरकार को राष्ट्रीय क्षेत्रों में दासप्रथा रोकने का अधिकार नहीं है। उन्होंने संविधान निर्माताओं से अपनी बात के समर्थन में उद्धरण लिये और फिर डगलस की जमीन खिसका दी। उन्होंने बताया कि तर्क सिर्फ पदेन लोगों का मोहताज नहीं होता। पूरब के लोग ऐसे ही तर्कों से प्रभावित हो सकते थे, जो सिरे से दूसरी निष्पत्तियों को निरस्त कर सके। लिंकन से सभी लोग मंत्रमुग्ध थे और चकित भी। उन्होंने कहा कि रिपब्लिकन पार्टी ही अकेली पार्टी है, जिसका दासप्रथा उन्मूलन का रास्ता किसी से भी बेहतर है। यह रास्ता न अतिवाद से घिरा है, न डेमोक्रेट की तरह इतना नरम है कि उससे समस्याएँ फिर बच जाएँ। लिंकन ने दावा किया कि भरोसा रखना चाहिए कि अंतिम विजय सिर्फ सत्य की होती है।

न्यूयॉर्क के इस भाषण की जनता में सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। इसे समकालीन राजनीति का आवश्यक दस्तावेज बताया गया। अखबारों ने इसे अविकल प्रकाशित किया। श्रोताओं ने न केवल कई मिनट तक तालियाँ बजाईं, बल्कि खड़े होकर, हैट उतारकर लिंकन का अभिवादन भी किया। रिपब्लिकन पार्टी

@Digitallibrary84

भी जोश से भर गई और उसने इस भाषण को अपने घोषणा-पत्र की शक्ल दे दी। दरअसल, यह सेवर्ड के घर में ही अपनी श्रेष्ठता साबित करना था। सेवर्ड न्यूयॉर्क से पार्टी प्रत्याशी थे। इस सबसे उनकी माँग बढ़ गई। लोग उन्हें यहाँ-वहाँ बुलाने लगे। लिंकन धीरे-धीरे पार्टी में किसी दूसरे प्रत्याशी से आगे हो रहे थे। मगर परंपरानुसार कोई भी प्रत्याशी अपने लिए इस तरह की माँग नहीं कर सकता था। पार्टी ही उसे नामांकित करती थी। इसलिए लिंकन अपने संदर्भ में उतने गंभीर नहीं थे।

विलियम एच. सीवर्ड न्यूयॉर्क के एक अच्छे राजनीतिज्ञ थे। उनकी लोकप्रियता पर्याप्त थी। उस समय उनकी उम्र उनसठ वर्ष की थी और वे यह मान रहे थे कि इस बार जन्मदिवस के उपहार के रूप में रिपब्लिकन पार्टी उन्हें राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाएगी। वे इतने आत्मविश्वास से भरे थे कि उन्होंने सीनेट के अपने साथियों को अलविदा कहा और अपने घर विदाई पार्टी भी आयोजित की। तयशुदा दिन और समय पर यदि रिपब्लिकन पार्टी का आंतरिक मतदान होता तो संभवतया इतिहास बदल गया होता। मगर प्रिंटर की मेहरबानी से ऐसा नहीं हो पाया।

राजनीति उतनी सीधी होती नहीं, जितनी दिखाई देती है। इतिहास के किसी भी कालखंड में इसमें सरल रेखा स्वीकारी नहीं गई। एक ओर सीवर्ड अति विश्वास से भरे थे तो दूसरी ओर होरेस ग्रीन ले एक नई इबारत लिख रहा था। ग्रीन ले विलक्षण सा दिखनेवाला व्यक्ति था, जिसका सिर खरबूजे की तरह गोल दिखाई देता था। वह बहुत बुद्धिमान था। उसने सीवर्ड को न्यूयॉर्क का गवर्नर बनने और सीनेटर बनने में खासी मदद की थी। यही नहीं, सीवर्ड के प्रबंधक थरलो वीड के लिए काफी काम किया था, जिसकी वजह से लोग वीड को राज्य का राजनीतिक 'बॉस' मानने लगे थे। कड़वाहट की वजह छोटी सी थी। ग्रीन ले स्टेट का प्रिंटर बनना चाहता था, लेकिन वीड ने वह जगह हथिया ली। इस तरह दो-एक अवसर और आए, जब ग्रीन ले वीड से मदद पाने की उम्मीद में था, जो उसे नहीं मिली। इसकी बदले में उसे अनादर मिला। ग्रीन ले से रहा नहीं गया, उसने सीवर्ड को एक कड़ी चिट्ठी लिख भेजी। चिट्ठी क्या थी, सीधे-सीधे विष-वमन था। वह 11 नवंबर, 1854 का दिन था। ग्रीन ले इंतजार में था कि मौका लगे तो इन्हें सबक सिखाए और उसने बेकरारी के बावजूद छह वर्ष तक बारी की बाट देखी। गुरुवार के दिन, जिस दिन शिकागो में राष्ट्रपति पद के नामांकन के लिए सम्मेलन होना था, ग्रीन ले सोया नहीं। वह पूरी रात जुगत बैठाता रहा कि उसे क्या करना है और सीवर्ड को कैसे शिकस्त देनी है। वह लिंकन के लिए सिर्फ मानसिक स्तर पर सोच ही नहीं रहा था, बल्कि मन में दृढ़ निश्चय कर चुका था कि उसी का नाम राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित हो। वह अनेक प्रतिनिधिमंडलों से मिला, उनसे बहस की, उन्हें समझाया। अखबार

@Digitallibrary84

'न्यूयॉर्क ट्रिब्यून' का पूरे उत्तरी क्षेत्र में खासा प्रसार था। जनता की राय तैयार करने में उस अखबार की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। ऐसा किसी अन्य अखबार ने नहीं किया। ग्रीन ले एक यशस्वी व्यक्ति था। उसका आदर होता था। उसके आते ही लोग उसके क्रिया-कलापों पर नजर रखने लगते थे। उसने सीवर्ड के बारे में बताया कि वह प्रतिबद्ध व्यक्ति नहीं है। न्यूयॉर्क के गवर्नर के पद पर रहते हुए उसने सामान्य विद्यालय के राजस्व को खत्म किया और उससे विदेशियों के लिए अलग स्कूल बनवाया। उसने कहा, यदि रिपब्लिकन पार्टी को जीतना है तो किसी भी हालत में इसे प्रत्याशी नहीं बनाया जाना चाहिए। लिंकन समर्थक प्रत्येक प्रतिनिधि से संपर्क कर रहे थे, ताकि सीवर्ड के बाद अगर लोगों में सहमति बने तो वह लिंकन के नाम पर ही हो। उनका मानना था कि डेमोक्रेट्स की ओर से डगलस की उम्मीदवारी तय है। ऐसे में उनका मजबूत प्रतिद्वंद्वी अगर कोई हो सकता है तो वह लिंकन हैं। एक ऐसा व्यक्ति, जिसने उत्तर-पश्चिम के विकास में वर्षों कार्य किए हैं, ऐसा व्यक्ति जो आम आदमी को समझता है, उनके साथ अपने मनुष्य होने को बाँटता है। उन्हें लगा होगा कि राजनीति की बाजी सिर्फ भावुक वक्तव्यों से नहीं जीती जाती, इसमें सीधा-सादा परिकलन भी जरूरी है। इन लोगों ने—यानी लिंकन समर्थकों ने—इंडियाना के प्रतिनिधियों का मन यह कहकर जीत लिया कि वे बी. स्मिथ को काबीना में जगह दिलाएँगे। इसी तरह पेनसिल्वेनिया के 56 वोटों को महज इस भरोसे पर अपने खेमे में कर लिया कि वे सीमेन केमेरान को लिंकन का दाहिना हाथ बना देंगे। शुक्रवार की सुबह मतदान हुआ। करीब 10 हजार लोग सम्मेलन हॉल में और 30 हजार लोग सड़कों पर प्रतीक्षारत थे। पहले दौर में तो सीवर्ड ने बाजी मारी, लेकिन दूसरे दौर में पेनसिल्वेनिया के 52 वोट लिंकन के पक्ष में दिखे और तीसरे दौर की घोषणा ने तो भगदड़ मचा दी। हॉल में खड़े-बैठे लोग शोर मचाने लगे। उत्तेजना, अविश्वासी विश्वास और उत्तेजना में वे अपनी हैट हाथ में हिला रहे थे। लोग एक-दूसरे को गले लगा रहे थे, नृत्य कर रहे थे और कुछेक की आँखों में आँसू थे। करीब 24 घंटे तक जश्न चलता रहा। 'शिकागो ट्रिब्यून' ने लिखा—'ऐसा हंगामा कभी नहीं हुआ।' ग्रीन ले ने देखा कि कभी राष्ट्रपति बनानेवाला वीड खून के आँसू पी रहा है। आखिर ग्रीन ले ने अपने समय की प्रतीक्षा करते हुए बदला ले लिया।

लिंकन की उम्मीदवारी

इस बीच स्प्रिंगफील्ड में लिंकन अपने कार्यालय चले गए और किसी प्रकरण की तह तक पहुँचने में तल्लीन हो गए। मगर यह तल्लीनता ज्यादा समय तक रह न सकी। वे अन्यमनस्क हो गए। थोड़ी देर बाद लिंकन उठे और बिलियर्ड खेलने चले गए, मगर मन लग ही नहीं रहा था। वह शायद जानना चाहता था

@Digitallibrary84

कि रिपब्लिकन पार्टी ने किसे उम्मीदवार बनाया है। वे वहाँ तो थे नहीं। लिहाजा वे 'स्प्रिंगफील्ड जर्नल' लेने गए, ताकि ताजा खबर को जान सकें। वहीं के दफ्तर में एक ऑपरेटर चिल्लाता हुआ आया कि मि. लिंकन, आपका नामांकन हो गया। खबर सुनते ही लिंकन का निचला होंठ थरथराया और उनके गाल विवर्ण हो गए। कुछ पलों के लिए उन्होंने अपनी साँस रोक ली। यह उनके जीवन का सबसे नाटकीय पल था।

लगातार उन्नीस वर्ष तक जूझते रहने के बाद आज विजयश्री उनके कदम चूम रही थी। लोग तेजी से घरों से निकलकर इस खबर पर बात कर रहे थे और देखते-ही-देखते खबर आग की तरह चारों ओर फैल गई। लिंकन के पुराने दोस्तों की हालत देखते ही बनती थी। कुछेक तो रोने लगे, कुछेक आधी बात हँसते हुए बताते, फिर रोने लगते। कुछेक अपने हैट उतारकर एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे।

चहुँ ओर खुशी का माहौल

लिंकन ने अपने दोस्तों का अभिवादन स्वीकारते हुए कहा—प्रिय दोस्तो, आठवीं स्ट्रीट पर एक महिला है, जो शायद इस खबर को सुनने के लिए बेकरार है। यह उनके घर का पता था और वे मैरी टोड लिंकन अर्थात् अपनी पत्नी को यह खबर सुनाना चाहते थे। इससे पहले शिकागो के अखबार लिंकन के पक्ष में प्रचार कर रहे थे। शिकागो प्रेस ऐंड ट्रिब्यून ने एक लेख छापा, जिसका शीर्षक था— 'जीतनेवाला उम्मीदवार अब्राहम लिंकन'। सेवर्ड ने अपने समर्थकों को विशेष रेलगाड़ी से पहुँचाया था। इधर इलिनॉय की रेल कंपनियों ने लिंकन की खूब मदद की। उन्होंने लिंकन समर्थकों को शिकागो पहुँचाने के लिए टिकट की दरें घटा दीं। सभाकक्ष में भी लिंकन समर्थक पहले पहुँच गए थे। मैरी को खुश खबरी देना लिंकन के लिए सबसे आवश्यक था, शायद इसलिए भी कि मैरी जीवन की पहली ऐसी स्त्री थीं, जिन्होंने लिंकन के राष्ट्रपति बनने की घोषणा ताल ठोंककर की थी। लिंकन पार्टी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त के लिए शिकागो जाना चाहते थे, लेकिन डेविस ने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि मुझसे मिले बिना कोई वादा न करना। 19 मई, 1860 को पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल उनके स्प्रिंगफील्ड स्थित आवास पर आया और उन्हें आधिकारिक रुप से सूचित किया कि वे राष्ट्रपति चुनाव के लिए पार्टी प्रत्याशी चुन लिये गए हैं। परंतु मैरी और उनके बीच की प्रसन्नता थोड़ी ही देर में विवाद में बदल गई। विवाद की वजह थी 'ड्रिंक्स'! मैरी चाहती थीं कि अब ऐसे मौके पर हमें भी 'ड्रिंक्स' सर्व करनी चाहिए। मगर लिंकन इससे सहमत नहीं थे।

@Digitallibrary84

उनका कहना था कि आदर व्यक्त करने के लिए शराब परोसना आवश्यक नहीं है।

विरोधी पार्टी की गतिविधियाँ

पार्टी के प्रतिनिधि प्रतीक्षा कर रहे थे कि वे अपनी स्वीकृति दें। इसके लिए लिंकन ने चार दिन का समय माँगा। एक ऐसा पद, जिसका सपना देखना भी बड़प्पन माना जाता है। एक ऐसा पद, जिसकी साध लिंकन के मन में भी वर्षों से थी, उसके लिए पार्टी की तरफ से चयनित होने पर लिंकन ने चार दिनों का समय माँगा। हालाँकि चौथे दिन उन्होंने अपनी मंजूरी दे दी थी। राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी घोषित होने पर उनका कामकाज इतना बढ़ गया कि उन्हें एक निजी सचिव रखना पड़ा। गवर्नर ने उन्हें अपने दफ्तर में काम करने की अनुमति दे दी। नौक्स महाविद्यालय ने उन्हें मानद एल-एल.डी. की उपाधि प्रदान की। स्वाभाविक रूप से अखबारों में उनकी जीवनी छपने लगी। लगातार जीवनी की माँग आने पर उन्होंने एक संक्षिप्त जीवन-वृत्त अपने सचिव को लिखवाया, जिसे वह माँग आने पर भेज देता था। उनकी जीवनी की करीब दो लाख प्रतियाँ बिकीं। अनेक फोटोग्राफर स्प्रिंगफील्ड पहुँचने लगे। ज्यादातर उनसे फोटो सेशन चाहते थे। कई कलाकार भी उनकी तसवीर बनाने के लिए उनके घर दस्तक देने लगे। उस दौर में स्केच और पेंटिंग का बड़ा प्रचलन था। ऐसा व्यक्ति की उपस्थिति में ही किया जाता था। लिंकन शांत भाव से सभी से मिलते, चाहे वह पेंटर हो या फोटोग्राफर।

मगर विरोधी शांत नहीं थे। वे किसी भी तरह लिंकन को फिर शिकस्त देने की कोशिश में लगे थे। इसके लिए पहला काम यह था कि उन्होंने लिंकन के विरुद्ध जी भरकर दुष्प्रचार किया। मेक्सिकन युद्ध का मसला पुनरुज्जीवित किया गया। डेमोक्रेट इसमें लगे थे। मई में इसी सब उधेड़बुन और आपसी कतर-ब्योंत के बढ़ने की वजह से पार्टी अपना प्रत्याशी नहीं चुन पाई और जून में तो वह विभाजित हो गई। उत्तर और दक्षिण में बँटी इस पार्टी के प्रत्याशी भी दो हो गए। उत्तर ने डगलस को और दक्षिण ने रिज को अपना उम्मीदवार बनाया। रिज का गणित मजबूत था। उन्हें पता था कि यदि रिपब्लिकन पार्टी की एकता यथावत् बनी रही तो लिंकन की जीत को कोई रोक नहीं सकता। इसलिए वे इस काम में लग गए कि रिपब्लिकन पार्टी भी दो-फाड़ हो जाए। लिंकन को लेकर ओहायो, इंडियाना, पेनसिल्वेनिया में अपार उत्साह था। जगह-जगह जनसभाएँ और मशाल जुलूस लिंकन के चुनाव को बुलंदी दे रहे थे। इस बीच अक्तूबर में विधानसभा चुनाव हुए और रिपब्लिकन पार्टी ने अपना परचम लहरा दिया। यह प्रमाण था कि आगामी चुनाव में लिंकन की जीत सुनिश्चित हो रही

@Digitallibrary84

है। विधानसभा चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर साबित किया कि प्रोटेस्टेंट पूरी तरह से लिंकन के साथ हैं, उनकी रिपब्लिकन पार्टी को अपना समझते हैं। कैथोलिक आरंभ से ही लिंकन-विरोधी थे और उन्होंने इस बार भी अपना मन नहीं बदला।

इधर डगलस की उम्मीदवारी घोषित हो गई थी। रणनीतिकारों में डगलस बड़ा नाम था ही। उन्होंने वे सारे दाँव चले, जिससे लिंकन चुनाव न जीत पाएँ। उन्होंने डेमोक्रेट पार्टी के धड़े बनाकर उसके अलग-अलग धड़ों से लिंकन के खिलाफ प्रत्याशी खड़े कर दिए। कोई कोणीय मुकाबला हो तो विभाजित वोट कई बार जीतनेवाले प्रत्याशी को हरा देते हैं। इसी आधार पर डगलस ने यह चाल चली। विपक्ष के विभाजन का लिंकन का विश्लेषण यह था कि उनका विजय अभियान आरंभ हो गया है। उन्हें चिंता थी तो अपने गृहनगर की। इसके लिए एक समिति बनाई गई, जो घर-घर जाकर पता लगाने की कोशिश करे कि वे लोग किसके पक्ष में मतदान कर रहे हैं। व्यक्तिगत संपर्कों के आधार पर लोकतांत्रिक पद्धति में किया गया वह अपनी तरह का पहला सर्वे था। लिंकन ने जब उसका परिणाम देखा तो चौंक गए। उनकी आशंका ठीक साबित हुई। तेईस मंत्रियों और कुछ अध्यात्मवादी विद्यार्थियों में महज तीन उनके पक्ष में थे। इस पर लिंकन ने बड़ी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की—"ये लोग अपने को बाइबिल में आस्था रखनेवाला निरूपित करते हैं; लेकिन इन्होंने अपने मतों से यह जाहिर किया कि इन्हें इससे कोई सरोकार नहीं है कि इस सबसे दासत्व बढ़ेगा या घटेगा। मगर मैं जानता हूँ कि ईश्वर और मानवता को दासत्व की चिंता है। उन्हें इसकी परवाह है और यदि वे सब इस बात से अनभिज्ञ हैं कि ईश्वर को सभी की फिक्र है तो उन लोगों ने 'बाइबिल' को ठीक से पढ़ा नहीं है।"

चुनाव परिणाम

आश्चर्य तो इस बात का है कि लिंकन की माँ और पिता तथा उनके सभी नाते-रिश्तेदारों ने लिंकन के खिलाफ मत दिया था। मात्र एक वोट छोड़कर सभी लिंकन के विरोध में थे। इसकी एक वजह यह भी थी कि वे सभी डेमोक्रेट थे। चुनाव 6 नवंबर को हुआ। हवा लिंकन की थी। लिंकन ने अपना वोट स्प्रिंगफील्ड में दिया था। वहाँ उनका अद्भुत स्वागत हुआ। उस दिन लिंकन शाम को अपने समर्थकों के साथ तारघर पहुँचे थे, जहाँ जनता चुनावी नतीजे जानने के लिए इकट्ठा थी। पहले इलिनॉय और इंडियाना में रिपब्लिकन पार्टी का विजयी ध्वज फहराया। पश्चिमी राज्यों की खबरें भी जनता का उत्साह बढ़ा रही थीं। लग रहा था, सड़क पर केवल रिपब्लिकन बस गए हैं। डेमोक्रेट या तो हैं नहीं या वे अपने घरों में चले गए हैं। करीब रात दस बजे खबर आई कि

@Digitallibrary84

रिपब्लिकन पार्टी पेनसिल्वेनिया में भी जीत गई है। फिर खबर करीब दो बजे आई कि न्यूयॉर्क में भी रिपब्लिकन पार्टी ने डेमोक्रेट को करारी शिकस्त दी है। इसके बाद लगभग तय हो गया कि लिंकन जीत रहे हैं। अंतिम नतीजों के बाद की स्थिति इस प्रकार रही—

प्रत्याशी	वोट	निर्वाचन क्षेत्रों में जीत
लिंकन	18,66,452	180
डगलस	13,76,957	112
रिज	8,49,781	72
बेल	5,88,879	39

स्पष्ट था कि दक्षिणी राज्यों ने लिंकन को वोट नहीं दिया। दक्षिण के उत्तरी भाग में अर्थात् वर्जीनिया, टेनेसी और कंटकी में बेल ने लिंकन को पीछे छोड़ा और बाकी के दस राज्यों में रिज ने अपना दावा ठोंका। डगलस मात्र मिसौरी में जीत पाए। न्यूजर्सी में उन्हें काफी वोट मिले, मगर वे यहाँ लिंकन के बराबर ही पहुँच पाए, आगे नहीं बढ़ सके। सोचने की बात है कि अलाबामा, अर्कांसास, फ्लोरिडा, जॉर्जिया, लुइसियाना, मिसीसिपी, उत्तरी केरोलिना, टेक्सास—इन जगहों से एक भी वोट अब्राहम लिंकन को नहीं मिला। लिंकन के चुनाव के तत्काल बाद की परिस्थितियों को समझने से पहले एक नजर उत्तर में आए उस झंझावात पर भी डालनी जरूरी है, जिसने ऐसी हालत पैदा की। करीब पिछले तीस वर्षों से हठधर्मी लोगों का समूह धार्मिक चोले में दासप्रथा की समाप्ति के लिए देश को युद्ध के लिए तैयार कर रहा था। वे लोग समूचे उत्तर के क्षेत्रों में भड़काऊ परचे बाँटते, उसी भाषा में लिखी पुस्तकें प्रचारित करते और शहर-शहर भाषण देते। इतना ही नहीं, दासों के पहने चीथड़े उन्हें पहनाए जाते, हथकड़ियों को भी यहाँ-वहाँ प्रदर्शित करते। वे उन हथियारों को भी दिखाते, जिससे दासों को पीटा जाता था और भयावह यातनाएँ दी जातीं। सन् 1839 में अमरीकन एंटी स्लेवरी सोसाइटी ने एक बुकलेट भी जारी की थी। उसका नाम था 'अमरीकन स्लेवरी एज इट इज—द टेस्टीमोनी ऑफ 1000 विटनेसेस'। इसमें दासों के साथ होनेवाली हर उस ज्यादती का जिक्र था जो उनके साथ घटती थी। उनके हाथों को खौलते पानी में डाल दिया जाता। इस पर भी बात न बनने पर लोहे की गरम सलाखों से उन्हें दाग दिया जाता। हब्शी औरतों को गोरे 25 डॉलर में अपने साथ सहवास करने को बाध्य करते।

लिंकन ने खुद डगलस के साथ हुई एक बहस में सन् 1850 में घोषित किया था कि अमरीका में 4,05,751 गोरे-कालों के बच्चे हैं। इनमें सबकी माँ हब्शी हैं

@Digitallibrary84

और पिता गोरा। इसलिए कि संविधान दास रखनेवालों को सुरक्षा देता था। उन्मूलनवादी साहित्य का चरम तब आया, जब एक अध्यात्मवादी प्रोफेसर की पत्नी हेरियर बीचर स्टोव ने 'अंकल टाम्स केबिन' नाम का उपन्यास लिखा। इस उपन्यास ने लाखों पाठकों की आँखें भिगो दीं। यथार्थ के घनत्व पर समय के केंद्र में मनुष्य की चिंता के साथ लिखा गया सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास था 'अंकल टाम्स केबिन'। होना तो यह था कि इसके बाद दक्षिण का मिजाज बदलता, मान्यता बदलती; मगर ऐसा नहीं हुआ। लिंकन की सन् 1860 की विजय के बाद दक्षिण के प्रांतों में बसनेवाले मानने लगे कि अब दासप्रथा को जाना ही होगा।

एक बार लिंकन ने कहा था कि किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह यदि न चाहे तो वर्तमान सरकार की एवज में अपना विरोध दर्ज करते हुए नई सरकार को चुन सकता है, जो उसे बेहतर लगती हो। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण और पवित्र नागरिक अधिकार है। एक ऐसा अधिकार, जो दुनिया को और अधिक उदार बना देगा।

चुनाव के बाद की अव्यवस्था

एक ओर लिंकन राष्ट्रपति पद की शपथ लेने की तैयारी में थे तो दूसरी ओर देश टूटने के कगार पर। 3 दिसंबर को तत्कालीन राष्ट्रपति बुचानन की विदाई थी। उसमें बुचानन ने अलगाववादियों की भर्त्सना की, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि इतिहास के कुछ कार्य ऐसे होते हैं, जिनमें सीधे हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता। 20 दिसंबर को दक्षिण कैरोलिना की विधानसभा ने घोषणा कर दी कि राज्य अब संघ का हिस्सा नहीं है। जनवरी के अंत तक फ्लोरिडा, मिसीसिपी, अलाबामा, जॉर्जिया और लूसियाना ने भी इसी आशय की घोषणा कर दी। इतना ही नहीं, फरवरी में इन लोगों का एक सम्मेलन अलाबामा, मोंटगुमरी में हुआ। उन्होंने घोषणा कर दी कि वे एक अलग देश हैं, जिसका नाम है 'सम्मिलित राज्य अमरीका'। अलग होने की घोषणा के साथ ही उन्होंने वहाँ के किले और केंद्रीय शस्त्रागार को अपने कब्जे में ले लिया। वाशिंगटन और उत्तरी राज्य संयुक्त राज्य अमरीका में बने रहे। वर्जीनिया निरपेक्ष भाव से देख रहा था।

वाशिंगटन में इस मामले से निपटने के लिए तैंतीस लोगों की समिति बनाई गई। उसका काम सरकार को सलाह देना था। समिति प्रतिनिधि सभा की थी। उसमें डेमोक्रेट का बहुमत था। राष्ट्रपति भी डेमोक्रेट था। समिति में हर राज्य का सदस्य था। लंबी बहस के बाद कमेटी ने प्रस्ताव पास किया कि न्यू मेक्सिको को राज्य का दर्जा दे दिया जाए, भगोड़े गुलामों के कानून का सख्ती से पालन किया जाए, उत्तरी राज्यों में भगोड़े गुलामों को शरण देने पर पाबंदी लगाई जाए और भविष्य

@digitallibrary84

में दासप्रथा के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ पर रोक लगाने के लिए संविधान में संशोधन किया जाए। सीनेट ने भी इसी तरह की कमेटी बनाई। इसने उत्तर और दक्षिण के लिए पृथक् दास कानून बनाने की अनुशंसा की। इस समिति ने भी भगोड़े दास कानून को सख्ती से लागू करने की बात कही। वर्जीनिया विधायकों के शांति सम्मेलन ने भी भाषा का हेर-फेर कर इसी तरह की बातें कहीं। तीनों का आग्रह था कि दक्षिण के लोगों से समझौता किया जाए।

मगर इसमें से किसी भी प्रस्ताव का दो पक्षों ने समर्थन नहीं किया। लिंकन ने इन प्रस्तावों को अलगाववादियों को रिश्वत देने का प्रस्ताव निरूपित किया। उन्होंने कहा कि वे निजी रूप से किसी भी प्रकार के संविधान संशोधन के पक्ष में नहीं हैं। फिर भी, यदि जनता ऐसा चाहती है तो वे अवरोध खड़ा नहीं करेंगे। लिंकन ने कहा कि दूसरा तरीका है सरकार बदलना। वे आरंभ से ही क्रांति के समर्थक थे। उनकी नजर में क्रांति का अर्थ था अधिक जागरूक होना, मौजूदा सरकार को हिला देना और फिर ऐसी सरकार की स्थापना करना, जो जनाकांक्षाओं को पूरा करे। लिंकन का कहना था कि क्रांति का अधिकार एक नैतिक अधिकार है, न कि कानूनी, इसलिए इसे नैतिक दृष्टि से न्यायोचित होने पर ही उपयोग में लाना चाहिए। अनैतिक क्रांति क्रांति नहीं है, बल्कि सामूहिक ताकत का भोंडा और घृणित प्रदर्शन है। ऐसी क्रांति सिर्फ अराजकता पैदा करती है और उसे किसी भी स्थिति में बरदाश्त नहीं किया जा सकता। लिंकन ने कहा कि राष्ट्रपति का कर्तव्य है कि वह कानून का पालन सुनिश्चित करे और सरकार बनाए रखने के लिए ठोस कदम उठाए। राष्ट्रपति विघटन या बँटवारे पर अमल नहीं कर सकता। उनका यह भी कहना था कि बिना दूसरे राज्यों की अनुमति के कोई भी राज्य कानूनी रूप से अलग नहीं हो सकता।

इन तमाम हालातों में लिंकन रात को सो नहीं पाते थे। देश की चिंता और एकता पर मँडराते संकट ने उनका 40 पाउंड वजन कम कर दिया। लिंकन थोड़े अंधविश्वासी भी थे। जीतने की घोषणा के बाद वे घर लौटे तो सोफे पर लेट गए। सामने आईना लगा था। उसमें उन्होंने अपना प्रतिबिंब देखा। उसमें दो चेहरे दिखे। एक चेहरा कांतिहीन, निस्तेज और पीला था। वे उठे तो भ्रम टूट गया। दुबारा लेटे तो उन्हें भूत जैसा कुछ दिखा। उन्होंने मैरी (उनकी पत्नी) को बुलाकर बताया कि मैंने ऐसा-ऐसा देखा। इस पर पत्नी की राय यह थी कि आप दूसरी बार भी विजयी होंगे, लेकिन उसके आगे शायद आपका जीवन नहीं है। लिंकन को पूरी आशंका थी कि वे वाशिंगटन से लौट नहीं पाएँगे।

चुनाव के बाद उन्होंने अपने एक मित्र को लिखा कि अब वाशिंगटन में रहना होगा; मगर मैं स्प्रिंगफील्ड के इस मकान के लिए चिंतित हूँ। मैं इसको बेचना नहीं चाहता। लेकिन यदि यह किराए पर चला जाए तो इसकी साज-सँभाल

@Digitallibrary84

ठीक से हो पाएगी। उन्हें ऐसा आदमी मिला, जिसे उन्होंने 90 डॉलर सालाना पर अपना मकान किराए पर दिया था। मकान के सामान के संबंध में उन्होंने 'स्प्रिंगफील्ड जर्नल' में एक विज्ञापन भी दिया था। उसे पढ़कर कई लोग आए। ग्रेट वेस्टर्न रेलवे के अधीक्षक ने उनका ज्यादातर फर्नीचर खरीद लिया था।

सन् 1861 में स्प्रिंगफील्ड के लोगों को यह अहसास हुआ कि लिंकन एक क्षमतावान और योग्य व्यक्ति हैं। वर्षों वे उन्हें वहीं टहलते हुए, गले तक शॉल डाले, घरेलू सामान की बास्केट थामे देखते थे, मगर किसी ने कभी सोचा नहीं था कि यह वह व्यक्ति है, जो अमरीका का राष्ट्रपति बन सकता है। वाशिंगटन रवाना होने से तीन सप्ताह पहले लिंकन ने अपने उद्घाटन भाषण की तैयारी कर ली थी। अकेलेपन और एकांत की तलाश में उन्होंने अपने को एक कमरे में कैद कर लिया था। उनके अपने पास ज्यादा पुस्तकें नहीं थीं। उन्होंने हर्नडन से कहा था कि वे उन्हें संविधान की प्रति उपलब्ध कराएँ। इसके अलावा सन् 1850 में दिए हेनरी क्ले के चर्चित भाषण के अलावा कुछ और संदर्भ भी मँगवाए।

लिंकन की मूर्ति

जनवरी 1861 में स्प्रिंगफील्ड में विश्वविख्यात मूर्तिकार डी. जोंस ने लिंकन की मूर्ति बनानी शुरू की। नतीजतन, उन्हें अधिक समय कमरे में ही बिताना पड़ता। मगर यह उनके लिए ज्यादा प्रीतिकर था। थोड़ा एकांत, भीड़ से अलग। वे भीड़ से घिरे रहकर उकता गए थे। इसलिए भी कि वे राष्ट्रपति पद की जिम्मेदारियों के लिए अपने को तैयार करने में लगे थे। मैरी लिंकन भी बेहद उत्साहित थीं। उनका कहना और देखा सपना साकार हो रहा था—ह्वाइट हाउस का सपना। उस सपने के लायक वे खुद को और अपने परिवार को बनाने में जुट गईं। इसके लिए जरूरी थी शॉपिंग और वह उन्होंने न्यूयॉर्क जाकर की। लिंकन तो भेंट स्वीकार करते नहीं थे, मगर मैरी लिंकन ने आरंभ में अनेक उपहार स्वीकार किए। इतना ही नहीं, खरीदारी भी उन्होंने अपनी चादर की लंबाई से कहीं ज्यादा की। इससे कुछ उधार भी हो गया। मगर दुकानदार खुश थे, उन्होंने मुक्त हाथ से उन्हें उनकी प्रिय वस्तु उपलब्ध कराई। राष्ट्रपति की शपथ लेने से पहले लिंकन अपनी सौतेली माँ से मिलने कोल्स काउंटी गए थे। वह जगह बहुत दूर थी, इसलिए लिंकन को पहले रेल से, फिर मालगाड़ी से और घोड़ागाड़ी से यात्रा करनी पड़ी। वे अपनी माँ को 'मम्मा' कहते थे। सत्तर वर्षीया उनकी माँ ने उनसे गले लगते हुए कहा था, "मैंने कभी नहीं चाहा था कि तुम राष्ट्रपति का चुनाव जीतो। पता नहीं क्यों, मुझे लगता है कि कोई अनहोनी घटना घटनेवाली है। शायद अब हम फिर कभी न मिलें। अगली मुलाकात शायद स्वर्ग में होगी।" हालाँकि लिंकन

@Digitallibrary84

ने सुबकती माँ की पीठ पर हाथ रखकर भरोसा दिलाया, "कुछ नहीं होगा। हम फिर मिलेंगे।"

स्प्रिंगफील्ड से विदाई

6 फरवरी को लिंकन परिवार के स्प्रिंगफील्ड स्थित निवास पर एक भव्य समारोह आयोजित हुआ। इसमें लिंकन और मैरी लिंकन ने स्प्रिंगफील्ड और इलिनॉय के निवासियों से विदाई ली। कार्यक्रम सुबह 7 बजे से आधी रात तक चला। कार्यक्रम में इलिनॉय की लगभग सभी बड़ी हस्तियों ने भागीदारी की। लिंकन परिवार अपने हर उस मित्र के घर भी गया, जिनसे अब तक उनका थोड़ा-बहुत भी रिश्ता रहा। वे अपने भागीदार हर्नडन के घर भी गए। लौटते समय उनसे उन्होंने कहा कि बाहर लगे इस बोर्ड को ऐसे ही रहने दीजिएगा। बोर्ड पर 'लिंकन ऐंड हर्नडन' लिखा था। उन्होंने कहा था कि अगर वे जीवित रहे तो लौटेंगे और यहीं से फिर वकालत शुरू करेंगे। वैसे उनके मन में यह अंधविश्वास बैठा हुआ था कि वे लौटकर आ नहीं पाएँगे।

हर्नडन के अनुसार जिस दिन लिंकन आखिरी बार अपने वकालत के दफ्तर से लौट रहे थे, तब रह-रहकर अतीत की स्मृतियों में उतर जाते। उन्होंने तब मुझसे पूछा था कि हम लगातार कितने समय से यहाँ साथ रह रहे हैं? मैंने बताया कि करीब सोलह वर्षों से। इस पर वे तपाक से बोले कि यह बताओ दोस्त, कभी एक-दूसरे से किसी मुद्दे पर व्यर्थ बहस की नौबत आई? मैंने कहा—नहीं, कभी नहीं। फिर वे प्रैक्टिस शुरू करने के समय की कुछेक घटनाओं में खो हो गए। उनके पास कुछ पुस्तकें थीं, जिन्हें वे अपने साथ ले जाना चाहते थे। तभी उन्होंने एक आग्रह किया कि 'लिंकन-हर्नडन' वाले बोर्ड को नहीं हटाना, ताकि मुवक्किलों को लगे कि राष्ट्रपति चुनाव का कोई फर्क इस फर्म पर नहीं पड़ा। यदि मैं लाटा तो यकीनन हम फिर साथ-साथ प्रैक्टिस करेंगे।

11 फरवरी को लिंकन परिवार स्प्रिंगफील्ड छोड़ रहा था। वाशिंगटन जाने के लिए वे रेलगाड़ी पकड़ रहे थे और लोग उनकी एक झलक पाने के लिए बेताब थे। पूरा स्टेशन लोगों से अटा पड़ा था। ट्रेन में चढ़ने से पहले लिंकन भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि मैंने यहाँ अपने जीवन के पच्चीस वर्ष बिताए। मैं अपनी तरुणाई में यहाँ आया था, अब बूढ़ा होकर जा रहा हूँ। यहाँ सभी लोगों ने मुझे जरूरत से ज्यादा स्नेह दिया। मुझे नहीं पता, मैं अब लौटूँगा भी या नहीं; मगर मैं एक बड़े काम के लिए जा रहा हूँ। ईश्वर के आशीर्वाद और जन-समर्थन से इसमें कामयाब भी होऊँगा। ट्रेन में तीन डिब्बे थे—एक में पत्रकार, दूसरे में लिंकन के सहायक और तीसरे में लिंकन का परिवार। रेलगाड़ी इंडियाना पोलिस होते हुए उत्तर में क्लीवलैंड गई। वहाँ से न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया होते हुए वाशिंगटन

@Digitallibrary84

पहुँची। इस यात्रा में बारह दिन लगे थे। जगह-जगह लिंकन का जोरदार स्वागत हुआ। ओहायो में बैंड बजाकर लोगों ने लिंकन का अभिवादन किया और तोपों की सलामी भी दी। कोलंबस जैसे छोटे शहर में 60 हजार की भीड़ इकट्ठा हो गई थी। बड़े शहरों में स्वागत करनेवालों का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। बफैलो में तो इतनी भीड़ थी कि लिंकन के एक सुरक्षा अधिकारी का कंधा व्यवस्था बनाते हुए टूट गया।

यात्रा के दौरान भव्य स्वागत

लिंकन ने जान-बूझकर इस लंबे रास्ते को चुना था। इसकी एक वजह यह थी कि वे ज्यादा-से-ज्यादा लोगों के संपर्क में आएँगे। उनका मानना था कि संवाद की प्रारंभिक पीठिका संपर्क है। विरोधियों को इससे एक सबक देना भी एक कारण था। उनकी सोच यह थी कि जितने अधिक लोग इकट्ठे होंगे, विपक्षियों की हालत उतनी खराब होगी। एक बड़े काम के लिए जनशक्ति का नैतिक समर्थन जरूरी है। उन्होंने कहा था कि रास्ते भर के स्वागत समारोह पार्टी द्वारा आयोजित न किए जाएँ। वे सब जनता द्वारा ही किए जाएँ। जनता के अभिवादन के उत्तर में अब्राहम लिंकन ने कहा कि यह उनकी व्यक्तिगत जीत नहीं, बल्कि जनता की जीत है। हर जगह जहाँ भी वे रुके, उन्हें बोलना पड़ा। लोग उन्हें सुनना चाहते थे। लगातार बोलते रहने से उनका गला इतना खराब हो गया कि कई बार तो वे बोल भी नहीं पाते थे। अभी यात्रा चल ही रही थी कि खबर आई कि जोफर्सन डेविस को सम्मिलित राज्य अमरीका का कार्यवाहक राष्ट्रपति बना दिया गया। डेविस ने उसी दिन संयुक्त राज्य अमरीका की सभी सैनिक चौकियों को अलगाववादियों के हवाले कर दिया। लिंकन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने संघ को बचाने के अपने संकल्प को दोहराया। न्यूयॉर्क में उन्होंने अमरीकी ध्वज को हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की कि वे सदा इसके साथ खड़े रहेंगे। उन्होंने अपील की कि जनता भी इसके साथ खड़ी रहे। न्यूजर्सी की राजधानी टेंटन में उन्होंने विधायकों को संबोधित करते हुए कहा कि वे समस्या का शांतिपूर्ण हल निकालना चाहते हैं। फिर भी बात अराजकता की ओर बढ़ी और रास्ता न निकला तो बल-प्रयोग भी किया जा सकता है।

अब यात्रा दक्षिण की ओर बढ़ रही थी कि खुफिया तंत्र को सूचना मिली कि बाल्टीमोर में लिंकन की हत्या का षड्यंत्र रचा जा रहा है। बाल्टीमोर में दक्षिणी उग्रवाद के समर्थक अधिसंख्य थे। लिंकन इस तरह की चेतावनी से घबराते नहीं थे। उनसे कहा गया कि वे यात्रा का समय परिवर्तन कर लें या रास्ता बदल लें तो अच्छा रहेगा। लिंकन ने इससे इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि न तो रास्ता बदला जाएगा और न ट्रेन के बाल्टीमोर से गुजरने का समय। मैं तयशुदा

@Digitallibrary84

कार्यक्रम के अनुसार फिलाडेल्फिया के स्वतंत्रता हॉल में 22 फरवरी को भाषण दूँगा। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के घोषणा-पत्र के अनुसार हमें देश की रक्षा करनी चाहिए। अगर हम राष्ट्र को घोषणा-पत्र के सिद्धांतों के अनुरूप बचा नहीं सकते तो हमें शर्म आनी चाहिए।

खुफिया तंत्र के मुखिया पिंकर्टन थे। उन्हें एक बार फिर इस बात की पुष्टि हुई कि षड्यंत्रकारी घात लगाए बैठे हैं। पिंकर्टन ने लिंकन से पुनः चर्चा की और सुझाया कि वे दूसरी ट्रेन से अकेले वाशिंगटन पहुँचें। थोड़े विचार-विमर्श के बाद लिंकन मान गए और वे अपना हैट बदलकर हैरिसबर्ग से फिलाडेल्फिया के लिए रवाना हुए। वहाँ की तार-संदेशवाहक लाइनों में अवरोध डाला गया, ताकि षड्यंत्रकारी किसी भी प्रकार का संदेश कहीं भेज न सकें। इस योजना को अत्यंत गोपनीय रखा जाना था, मगर ऐसा नहीं हुआ। लिंकन का असाधारण कद इसमें बाधा बन गया और लोगों ने उन्हें पहचान लिया। इससे उन्हें कायर और न जाने कितने विशेषण सुनने पड़े। इससे लिंकन को बहुत पीड़ा हुई कि आखिर उन्होंने पिंकर्टन की योजना क्यों मानी।

वाशिंगटन में लिंकन

बहरहाल, वाशिंगटन पहुँचने के बाद लिंकन बेहद व्यस्त हो गए। वे वहाँ राष्ट्रपति बुचानन से मिलने ह्वाइट हाउस गए। उन्होंने उन्हें काबीना के दूसरे सदस्यों से मिलवाया। सड़क पर एक घंटा घूमकर लिंकन होटल लौटे तो उनसे मिलने के लिए भावी काबीना सदस्य आ गए। रात्रिभोज राज्य सचिव बननेवाले सेवर्ड और निर्वाचित उपराष्ट्रपति हेमलिन के साथ किया। वाशिंगटन की सड़कों पर उन्होंने घोड़ागाड़ी से सैर की। होटल पहुँचने पर उनसे मिलने और बधाई देने वालों का ताँता लग गया। उनमें कई सांसद भी थे। न्यूयॉर्क के प्रसिद्ध व्यापारी डॉज थे। उन्होंने लिंकन से मिलकर चेतावनी भरे अंदाज में कहा कि दक्षिण के लोगों को कसने से कोई लाभ नहीं होगा, बल्कि इसका हमें नुकसान उठाना पड़ेगा। देश दिवालिया हो सकता है। दक्षिण में खेती अधिक होती थी। यदि ये सभी कृषि-प्रधान क्षेत्र हमसे अलग हो गए तो क्या हम न्यूयॉर्क की सड़कों पर घास उगाएँगे? लिंकन ने इसका समुचित उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि वे संविधान की रक्षा के लिए कृतसंकल्प हैं और ऐसा करते हुए वे चाहेंगे कि घास वहीं उगे जहाँ उगती है। बावजूद इसके फिर वह जहाँ चाहे उगे, मेरा संकल्प संविधान है।

लिंकन से भेंट करनेवालों में उनके घोर विरोधी डगलस भी थे। मगर इस बार की भेंट अनूठी थी। यह बहस का मौका नहीं था। डगलस की राय थी कि दक्षिणी प्रांतों को समझाते हुए देश की एकता को किसी भी तरह बचाया जाए। उन्होंने लिंकन को भरोसा दिया कि देश की एकता के लिए यदि उन्हें जरूरत हो तो

@Digitallibrary84

वे कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे इसका कभी राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश भी नहीं करेंगे।

लिंकन से जो लोग भी मिलने आते थे, उन्हें पहले स्कॉट से मिलना होता था। उम्रदराज स्कॉट सदैव फौजी वरदी में लिंकन के कक्ष के बाहर तैनात रहते। होटल के कक्ष या हॉल में मैरी और अब्राहम लिंकन लोगों से मिलते। स्वाभाविक रूप से जितने मुँह उतनी बातें। कुछ लोग लिंकन को सहज, संप्रेषणीय और सरोकारी मानते थे तो कुछ उनके चेहरे-मोहरे को देखकर मखौल उड़ाते। उनके अनुसार लिंकन में वैसी चमक नहीं है जैसी अमरीकी राष्ट्रपति में होनी चाहिए। लिंकन को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने कहा था कि विरोध स्वाभाविक वृत्ति है। लोग

काम करते देखेंगे तो धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। देश वित्तीय संकट से गुजर रहा था। लिहाजा, उनके पास हर तरह के लोग आ रहे थे। लोगों की मान्यता यह भी थी कि अब तक डेमोक्रेट शासन कर रहे थे, पहली बार रिपब्लिकन पार्टी की सरकार बनेगी तो ये लोग उनके द्वारा पदस्थ सभी लोगों को हटा देंगे। उनमें ऐसे लिपिक भी शामिल होंगे, जो प्रति सप्ताह 10 डॉलर अर्जित करते थे। हालाँकि ऐसा नहीं हुआ।

लिंकन से मिलनेवालों में सैकड़ों ऑटोग्राफ लेनेवाले और भिखारी भी शामिल थे। एक ने तो उनसे पैंट की माँग कर दी। ज्यादातर उनके पास नौकरी के लिए आते थे अपने साथ अपने प्रमाण-पत्रों को बटोरे। हजारों की संख्या में आए कागजातों में से लिंकन उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं देख पाते। यहाँ तक कि भोजन करने में देरी होने लगी। लोग छोड़ते ही नहीं थे। फिर भी उन्होंने जनता से मिलना बंद नहीं किया।

लिंकन को अपनी कैबिनेट की घोषणा करनी थी। वे सेवर्ड को राज्य सचिव बनाना चाहते थे; मगर उनकी राय से काबीना का गठन करना नहीं चाहते थे। इसलिए भी कि यह उनका विशेषाधिकार था और इसलिए भी कि ऐसा करने से सेवर्ड अपने को अपरिहार्य समझने लगता। इसलिए उन्होंने चेज को वित्त सचिव बना दिया। सेवर्ड चेज को पसंद नहीं करते थे। उन्होंने चेज का नाम आने पर यहाँ तक कह दिया कि यदि उन्हें मौका दिया जाता है तो वह हट जाएँगे। यानी काबीना में शरीक नहीं होंगे। इससे लिंकन थोड़े परेशान हुए। इसकी वजह यह थी कि सेवर्ड रिपब्लिकन में लोकप्रिय थे और कद्दावर भी। लेकिन वे यह भी नहीं चाहते थे कि सेवर्ड की जिद के आगे वे घुटने टेकें। इसलिए उन्होंने एक साथ दो बातें कीं। पहली यह कि कोई भी अपरिहार्य नहीं होता, दूसरी यह कि सेवर्ड की जगह डेटन के नाम को चला दिया। इससे सेवर्ड को धक्का लगा; मगर वे जल्दी

@Digitallibrary84

ही समझ गए कि इस तरह टकराने से उन्हें हमेशा के लिए बाहर रहना पड़ेगा और वे यह नहीं चाहते थे।

राष्ट्रपति पद की शपथ

4 मार्च, 1861 को लिंकन ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली। उन्हें शपथ चौरासी वर्षीय मुख्य न्यायाधीश टैनी ने दिलवाई। इसके लिए लिंकन निवर्तमान राष्ट्रपति बुचानन के साथ एक खुली बग्घी में सवार होकर ह्वाइट हाउस पहुँचे। जबरदस्त सुरक्षा इंतजाम था, जिसकी अगुआई स्कॉट कर रहे थे। शपथ ग्रहण के बाद लिंकन ने कहा, "किसी भी स्थिति में संघ को बरबाद नहीं होने दिया जाएगा। अलगाववाद गैर-कानूनी है और वे कानूनसम्मत रास्ता अपनाएँगे।" उन्होंने कहा कि कानून के परिवृत्त में जितनी भी ताकत है, उसका उपयोग वे उन सारी संपत्ति को वापस लेने में करेंगे, जिस पर दूसरे लोगों ने कब्जा कर लिया है। उन्होंने कहा कि निश्चिंत रहें। तब तक कोई खून-खराबा नहीं होगा जब तक राष्ट्र की संप्रभुता को चुनौती नहीं दी जाएगी। अलगाववादियों को उन्होंने कहा कि गृहयुद्ध होगा या नहीं, यह उन्हें तय करना है। आप लोगों को ही तय करना है कि समस्या का समाधान शांतिपूर्ण बातचीत के जरिए होगा या तलवार के जोर से। अपने भाषण के समापन में लिंकन ने कहा कि हम सब दोस्त हैं, दुश्मन नहीं।

लिंकन का भाषण दक्षिण के अलगाववादियों को संबोधित तो करता था, लेकिन उसमें राष्ट्रपति की संपूर्ण नीति का पता नहीं लगता था। उन लोगों ने इसका अनुवाद कुछ इस तरह किया कि अब गृहयुद्ध को टाला नहीं जा सकता। वह होकर रहेगा। लिंकन-विरोधी अखबारों ने भी इसे कमोबेश इसी भावार्थ के साथ प्रकाशित किया। सिर्फ रिपब्लिकन अवधारणा रखनेवालों ने इसे विधायी रूप में देखा और सराहना की।

समटर का संकट

इधर शपथ हुई और दूसरे दिन से संकट दिखाई देने लगा। ऐसा संकट, जिसका हल लिंकन को जल्दी-से-जल्दी खोजना था। समटर के किले से संदेश आया कि वहाँ की सेना की टुकड़ी के पास राशन बहुत कम बचा है। संदेश रॉबर्ट एंडरसन का था। एंडरसन उस सेना की टुकड़ी के प्रभारी थे। किले को अलगाववादियों ने घेर रखा था। उसे बचाने के लिए करीब 25 हजार सैनिकों की जरूरत थी और अमरीकी सेना में नियमित थल सैनिकों की संख्या महज 16 हजार थी। लिंकन नए-नए राष्ट्रपति बने थे। उन्हें सभी प्रक्रियाओं का पता न था, इसलिए भी दिक्कत ज्यादा थी। उन्होंने इस काम के लिए सीधे नौसेना से बात की तो पता चला कि ऐसे किसी आदेश को देते समय राष्ट्रपति को संसद्

@Digitallibrary84

की मंजूरी लेनी चाहिए। इसी तरह युद्ध अमल में अर्द्धसैनिक बल तैयार करने के मसले में भी लिंकन को अपने कदम रोकने पड़े। समटर के मामले की गंभीरता को देखते हुए लिंकन ने काबीना बैठक बुलाई। इसमें आम राय नहीं बन सकी। सेवर्ड इस मामले में असहयोग का रुख अपनाए हुए थे। लिंकन जो भी विकल्प सुझाते, सेवर्ड उसका विरोध करते। हालाँकि डगलस ने घोषणा की थी कि राष्ट्र के सवाल पर वे लिंकन के साथ हैं और उन्हें हर किस्म की मदद देने के लिए तैयार हैं। समटर के मामले में लिंकन ने एक दूत एंडरसन के पास भेजा, ताकि वह वहाँ जाकर जनाकांक्षाओं का पता लगा सके और दूसरा समूह कैरोलिना भेजा। कैरोलिना समुद्र तटीय स्थान है और वहीं समटर का किला था। इसके साथ ही पिकोस के किले को भी बचाने की कारवाई चल रही थी। मगर 34 घंटे में ही एंडरसन और उनकी सैनिक टुकड़ी ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस तरह अमरीका में गृहयुद्ध की शुरुआत अलगाववादियों ने की। लिंकन चाहते थे कि एंडरसन स्वानुगत रूप में समर्पण का रास्ता न चुनें, बल्कि वे ऐसा तभी करें, जब अलगाववादी हमले का मार्ग अपना लें। इससे जनता को संदेश यह जाएगा कि लिंकन की सरकार व्यर्थ के रक्तपात को बढ़ावा नहीं दे रही। वैसे यह सलाह ब्राडनिंग ने दी थी। ब्राडनिंग का कहना था कि ऐसा करने पर सरकार अपने कदमों को न्यायोचित ठहरा सकेगी। लिंकन की इस मुहिम से देश में नागरिकों के बीच एकता मजबूत हुई और उनमें राष्ट्रीय भावना का प्रसार हुआ। राज्य, जो अपनी-अपनी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर सोचते थे, उन्होंने संघ के रूप में फिर से सोचना शुरू कर दिया। इस बीच लिंकन को युद्ध के लिए संसद् की आवश्यक अनुमति भी मिल गई। इसका आशय स्पष्ट है कि विपक्ष ने भी राष्ट्रीय आपदा की स्थिति में लिंकन का साथ देने का वादा किया। यह स्वस्थ लोकतंत्र के लिए जरूरी भी है।

@Digitallibrary84

4

दासप्रथा का उन्मूलन

लिंकन ने पूरे देश में राष्ट्रभक्ति का जज्बा पैदा कर दिया। हजारों स्थानों में जनसभाएँ हुईं, ध्वजारोहण हुआ और लोग सेना में शामिल होने लगे। समटर के किले को न बचा पाने में सैनिकों की कमी भी तो एक कारण थी। दस सप्ताह में करीब दो लाख युवक भरती हुए। मगर सिर्फ सेना की संख्या से काम नहीं चलता। काम चलता है उसकी अगुआई से, नेतृत्व से। और उस समय सेना में केवल एक नाम था—रॉबर्ट इ. ली। रॉबर्ट दक्षिणी प्रांत का रहने वाला था, मगर उसकी देश-भक्ति पर किसी को शक नहीं था, खासकर लिंकन को तो बिलकुल नहीं। इसलिए उन्होंने संघीय सेना की कमान ली को सौंपने की बात कही। अगर ली ने इस बात को मान लिया होता तो युद्ध का इतिहास एकदम अलग होता। कुछ समय तक उसने सचमुच गंभीरता से सोचा, बाइबिल पढ़ी और घुटने के बल बैठकर प्रभु से प्रार्थना भी की कि वे उसे सही निर्णय लेने में मदद करें।

ली लिंकन से अनेक मुद्दो पर सहमत था। जैसे दासप्रथा को लिंकन अमानवीय मानते थे, ली भी इसे पाशविक बताता था। उन्होंने उनके पास काम कर रहे कुछेक नीग्रो को सालों पहले मुक्त कर दिया था। संघ के प्रति लिंकन को जितना प्यार था, लगभग उतना ही प्रेम ली को भी था। वर्जीनिया के होने के नाते उसमें भी वहाँ की एक अवधारणा कूट-कूटकर भरी थी। वर्जीनिया के लोग अपने राज्य को राष्ट्र से ऊपर रखते थे। ठीक यही विचार ली का था। उसमें भी स्थानीयता के प्रति समर्पण ज्यादा था। इस वजह से उसने सेना की कमान सँभालने से इनकार कर दिया। ली का कहना था कि मैं अपने ही घर, परिवार और रिश्तेदारों के खिलाफ कदम उठाने का मन नहीं रखता।

लिंकन के पास अब जनरल विनफील्ड स्कॉट के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जिनसे वे इस बारे मे परामर्श कर सकें। स्कॉट बेहद अनुभवी थे, उम्रदराज थे। सन् 1812 के युद्ध में स्कॉट ने पर्याप्त यश बटोरा था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची थी। हर कोई यही सोचता कि जितनी जल्दी हो सके, संघीय सेना को हमला

@Digitallibrary84

कर एक ही झटके में अलगाववादियों के हौसले पस्त कर देने चाहिए। 'ट्रिब्यून' अखबार के संपादकीय स्तंभ बड़े-बड़े अक्षरों में युद्ध की वकालत कर रहे थे। व्यापार-व्यवसाय चौपट हो रहा था। बैंक और क्रेडिट बढ़ाने से कतरा रहे थे। आम जनता परेशान थी। लोग चिल्ला रहे थे कि और मूर्ख बनाने का चक्कर बंद करो और जल्दी-से-जल्दी हमला कर एक बार में ही मामला साफ करो। लगभग सभी इस पर एकमत हो रहे थे; लेकिन सेना के अफसर सहमत नहीं थे। वे जानते थे कि सेना अभी पूरी तरह से तैयार नहीं है। लेकिन लिंकन जन-दबाव के आगे झुकते जा रहे थे, उन्होंने अंततः सेना को कूच करने को कह दिया।

सैन्य कारवाई

वह अजीब सी सेना थी। आधे लोग तो प्रशिक्षित भी नहीं थे। कुछ रेजिमेंट पिछले दस दिनों में आए थे। उनमें तो अनुशासन की भी समस्या थी। उस जमाने में योद्धाओं में टरकोस और जुबेस के नाम चर्चा में थे। ज्यादातर सैनिक उनकी तरह की वेशभूषा पहनने को गौरव समझते थे। वे सभी वैसे ही दिखना भी चाहते थे। इससे पहले अर्थात् समटर किले के समर्पण के दूसरे दिन 15 अप्रैल, 1861 को राष्ट्रपति ने एक घोषणा-पत्र जारी किया था। उसमें कहा गया था कि दक्षिण के सात राज्यों में कानून का उल्लंघन हुआ है। यह सबकुछ इस तरह हुआ है कि उस पर साधारण कानून के तहत कारवाई भी नहीं हो सकती। संसद् के विशेष अधिवेशन में डगलस ने लिंकन का साथ बिना शर्त देने की बात कही। इलिनॉय के डेमोक्रेट का कहना था कि शांति का सबसे आसान तरीका युद्ध की व्यापक तैयारी है। पूरे देश में राष्ट्रप्रेम की बयार चल रही थी। लेकिन वर्जीनिया, टेनेसी, अर्कांसास और उत्तरी कैरोलिना संघ का साथ छोड़कर पृथकतावादियों के साथ आ गए। इन्होंने अपनी राजधानी रिचमौंड को बनाया। रिचमौंड वर्जीनिया की राजधानी थी। इससे दक्षिण राज्यों की जनसंख्या 90 लाख हो गई। वैसे यह 50 लाख थी। वर्जीनिया के पृथकतावादियों के पक्ष में करवट लेने से उनका कब्जा वाशिंगटन की सीमा तक हो गया। कंटकी और मिसीसिपी के गवर्नर भी लिंकन से किनारा कर गए। उन्होंने साफ कहा कि वे इस मामले में कोई मदद नहीं कर सकते। डेलावेयर के गवर्नर ने अर्द्धसैनिक बल भेजने से मना कर दिया। मगर यह भी कहा कि जो लोग अपनी मरजी से जाना चाहते हैं, वे जा सकते हैं। देश की राजधानी वाशिंगटन उत्तर में मैरीलैंड से घिरी थी। बाल्टीमोर अरसे से पृथक्तावादियों की जगह थी। सेना को यहीं से होकर वाशिंगटन जाना था। फिर वही हुआ जिसका अंदेशा था। बाल्टीमोर में भीड़ ने सेना पर हमला कर दिया। इसी के बाद फैसला लेना पड़ा था कि सेना की टुकड़ी बाल्टीमोर से सीधे गुजरने की बजाय उसके पास से होकर गुजरेगी।

@Digitallibrary84

मैरीलैंड के गवर्नर हिक्स किसी भी तरह लिंकन को सफल होने देना नहीं चाहते थे। उन्हें भी मालूम था कि सेना की संख्या कम है। किंतु यदि एक बार सेना खड़ी हो गई तो पृथकतावादियों से लिंकन अच्छी तरह निपट लेंगे। इसलिए वे उनके मार्ग में बाधाएँ खड़ी करते रहते। इसी के चलते उन्होंने लिंकन से कहा कि कोई भी सेना की टुकड़ी उनके राज्य से होकर न गुजरे। इसके लिए बाल्टीमोर का एक प्रतिनिधिमंडल लिंकन से मिला और उसने कहा कि मैरीलैंड के रास्ते से सेना न गुजरे। इतना ही नहीं, पृथकतावादियों से शांतिपूर्ण समझौता किया जाए। इस पर लिंकन भड़क गए। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। वाशिंगटन की रक्षा करना मेरा धर्म और संकल्प है। आप लोग जाएँ और अपने लोगों से कह दें कि वे सेना की टुकड़ियों पर हमला न करें, वरना उन्हें करारा जवाब दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सेना में न तो पंछी होते हैं और न चूहे। लिहाजा वे न तो उड़कर जा सकते हैं, न जमीन में रास्ता बनाकर गुजर सकते हैं। वे मैरीलैंड से ही होकर जाएँगे। इस पर मैरीलैंड के लोगों ने उत्तर को जानेवाली रेल लाइन की पटरियाँ उखाड़ दीं। स्वाभाविक रूप से इससे आगमन रुक गया। संचार साधन ठप कर दिए गए। लेकिन ऐसा करके भी वे बाजी को अपने हाथ में ज्यादा देर तक नहीं रख पाए। 25 अप्रैल को सातवीं न्यूयॉर्क रेजीमेंट पहुँच गई। वह चेसापीक खाड़ी से नावों के द्वारा एनापोलिस पहुँची और वहाँ से रेल के जरिए वाशिंगटन। यह सब जनरल बटलर की सूझ-बूझ का नतीजा था। मैरीलैंड के लोग उत्तर में चौकस थे और सेना ने पूर्वी भाग अपनाकर 13 मई तक सारा काम तमाम कर दिया। 13 मई को ही जनरल बटलर ने पूरे बाल्टीमोर पर कब्जा कर लिया।

इसी के साथ लिंकन पहले की अपेक्षा और सख्त हो गए। उन्होंने आदेश पारित कर दिया कि कोई भी व्यक्ति पृथकतावादियों का साथ देता पाया गया या इस बारे में फौज को कोई सूचना मिली कि किसी का संबंध इन लोगों से है, तो उसे तत्काल गिरफ्तार कर लिया जाएगा। यह भी कि ऐसी स्थिति में गिरफ्तार व्यक्ति को अनिश्चित काल तक हिरासत में रखा जा सकता है। इतना ही नहीं, गिरफ्तार करनेवाला फौजी अफसर किसी भी अदालत के आदेश को इस बारे में मानने के लिए बाध्य नहीं होगा। इस आदेश के बावजूद न्यायाधीश परंपरागत रूप से आदेश देते रहे। जॉन मैरीमैन नाम के एक व्यक्ति को फौजी अधिकारी ने पकड़ा। वह न्यायालय गया। वहाँ से उसे रिहा करने के आदेश हो गए। फिर भी उसे छोड़ा न गया। इस पर मुख्य न्यायाधीश और लिंकन के बीच कटुता बढ़ गई। मुख्य न्यायाधीश न्यायालय के वर्चस्व की पैरवी कर रहे थे और लिंकन का कहना था कि अभी हालात ठीक नहीं हैं। इसके बाद न्यायालय के आदेशों की बिलकुल परवाह नहीं की गई।

@Digitallibrary84

कंटेकी तटस्थ राज्य था, लेकिन उसकी स्थिति बड़ी दयनीय थी। वैचारिक दृष्टि से वे दक्षिण के लोगों के साथ थे। इसलिए कि कंटेकी में भी दासप्रथा थी, जिसे अपने वर्चस्व का जरूरी हिस्सा मानते थे। लिहाजा, वे दासप्रथा को जारी रखने के सामंती तर्कों के हक में थे। यही लिंकन की चिंता का मुख्य विषय था। वे नहीं चाहते थे कि ओहायो नदी का दक्षिणी किनारा विद्रोहियों के हाथ में चला जाए। इसके लिए लिंकन ने एंडरसन को कंटेकी का कमांडर बनाकर भेजा। इस बीच संघीय विचारधारा और पृथक्तावादी दोनों ने कंटेकी में अपनी स्थिति मजबूत करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। बावजूद इन हालातों के एंडरसन ने जल्दी ही पूरे प्रांत को अपने कब्जे में ले लिया।

मिसौरी भी शांत नहीं था। यह राज्य इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था कि यहाँ से मिसीसिपी, मिसौरी और ओहायो नदियों के जलमार्ग के आवागमन पर नियंत्रण रखा जाता था। मिसीसिपी नदी के पश्चिम में बसे सेंट लुइस का सामरिक महत्त्व था। नतीजतन, पृथकतावादी लोग शहर के बाहर जमा हो गए और संघ समर्थक शहर के भीतरी हिस्से में एकत्र हो गए। संघ की सेना के कमांडर नाथनील लेयान ने पृथकतावादियों से समर्पण करने को कहा। इस पर सेंट लुइस की सड़कों पर झड़प शुरु हो गई और मिसीसिपी राज्य पर कब्जे के लिए युद्ध शुरु हो गया। वर्जीनिया के लोग इन सबमें सबसे ज्यादा समझदार थे। इन लोगों में भी दोनों ही तरह के लोग थे। अर्थात् पृथकतावादी भी और संघीय विचारधारा को माननेवाले भी। इन लोगों ने ठीक-ठीक बँटवारा कर पूर्वी वर्जीनिया और पश्चिमी वर्जीनिया बना लिया। पूर्वी वर्जीनिया के लोग पृथकतावादियों के साथ थे और पश्चिम के लोग संघीय व्यवस्था के साथ। दोनों की अलग-अलग राजधानी बनीं। लिंकन ने पश्चिमी वर्जीनिया को पूर्ण राज्य की तरह मान्यता दी। वर्जीनिया का उत्तरी भाग वाशिंगटन से लगा हुआ था, लिहाजा उस पर पहले से ही संघीय व्यवस्था का हाथ था।

सेना का विस्तार

इसके बाद लिंकन उत्तरी राज्यों की ओर मुड़े। सीमांत राज्यों के बाद इस ओर देखना लाजिमी भी था और जरूरी भी। इसके लिए उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना का विस्तार किया। उसमें 18 हजार नौ सैनिकों की भरती की। 8 बंदूक रेजीमेंट, 1 घुड़सवार रेजीमेंट और 1 तोप रेजीमेंट को भी बढ़ाया। इसके लिए लिंकन ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए संसद् की मंजूरी की प्रतीक्षा भी नहीं की। 19 अप्रैल को लिंकन सात सम्मिलित राज्यों के बंदरगाहों की नाकेबंदी कर चुके थे। उत्तरी कैरोलिना और वर्जीनिया के बंदरगाहों की नाकेबंदी के आदेश भी जारी कर दिए गए। जलमार्ग की सुरक्षा के लिए लिंकन ने बोस्टन,

@Digitallibrary84

न्यूयॉर्क और फिलाडेल्फिया की नौसेना को पाँच जंगी जहाज खरीदने के आदेश दिए। इसी बीच कैलिफोर्निया से सोने से लदे दो जहाज भारी सुरक्षा इंतजाम के साथ वाशिंगटन पहुँच गए। सेना के बढ़ते खर्च के लिए यह आवश्यक था। लिंकन धीरे-धीरे आघातों के बादलों से मुक्त हो रहे थे। यह वह दौर था, जब कभी-कभार कहीं बिजली तड़क जाती, लेकिन बावेला नहीं मचता। उन्होंने बताया कि वे युद्ध को सभी औपचारिकताओं और कानून से ऊपर रखते हैं तो इसकी वजह है राष्ट्र। राष्ट्र सबसे ऊपर है। वह है तो हम हैं।

ऐसा नहीं कि यह सब लिंकन ने कागज पर एक प्रशासक की हैसियत से फैसले लेते हुए किया। एक रविवार को लिंकन चर्च में थे। प्रार्थना चल रही थी। लिंकन ने शोर सुना, प्रत्याशित शोर था—युद्ध के बारे में। वे सीधे युद्ध अमले की ओर गए और वहाँ बड़ी संख्या में आए तो देखे, जो आधी-अधूरी जानकारियों से भरे थे। लिंकन के सब्र का बाँध टूट गया। वे जल्दी-से-जल्दी जनरल स्कॉट से इस बारे में चर्चा करना चाहते थे। वे सीधे स्कॉट के क्वार्टर की तरफ चले गए। स्कॉट झपकी लेते मिले। बमुश्किल वे आँखें मिचमिचाते किसी तरह खड़े हुए। उन्होंने कहा कि मुझे कुछ नहीं मालूम कि कितने आदमी कहाँ तैनात हैं। उनके पास किस तरह के शस्त्र हैं। 'कोई मेरे पास आता नहीं। मुझे बताता नहीं।' यह हालत संघ के सेना प्रमुख की थी। उन्होंने अपने पैरों के पास पड़े कतिपय तारों की ओर देखते हुए कहा कि ये कुछ युद्ध के मैदान से आए हैं, लेकिन इनमें चिंताजनक कोई बात नहीं है और वे फिर सोने के लिए चले गए। ऐसी हालत में लिंकन को बिखर जाना था। लेकिन उन्होंने अपना सिर नहीं धुना। वे लगातार इसमें लगे रहे कि विजय कहीं है तो उसे यहीं होना होगा। असफलता और पराजय लिंकन के लिए नए अनुभव नहीं थे; लेकिन वे हर बार नई विजय के संकल्प के साथ अपने को तैयार कर लेते थे। अंतिम विजय में जीत के प्रति उनका विश्वास कभी डिगा नहीं। यानी उन्हें लगता था कि ऐसी विजय कहीं है ही नहीं, जो उनसे अपनी सगाई तोड़ ले। उस दौर में भी जब सेना बिखराव झेल रही थी, पराजय के दंश झेल रही थी, लिंकन स्वयं सैनिकों से व्यक्तिगत रूप से मिले, 'गॉड ब्लेस यू' उनकी जुबाँ पर होता था और हाथ सैनिक के हाथ में। स्पर्श की इस कीमिया से लिंकन ने अमरीकी सेना में पुरजोर विश्वास रोपा, उनके साथ बैठकर खाया-पिया और सुनहरे कल की बातें कीं। उनके वाक्यों में सपना होता, शब्दों में अक्षत विश्वास। इस सबसे लिंकन का विजय अभियान आरंभ हुआ।

पश्चिमी वर्जीनिया में एक नए नायक मैक्लेन को भेजा गया। वह खूबसूरत मगर बड़बोला सेनानायक था। बमुश्किल तोप के बीस गोलों के साथ एक छोटे और अव्यवस्थित युद्ध को लड़ने के बाद उसने पर्याप्त बड़बोलापन किया। उत्तरी क्षेत्र में यह पहला युद्ध था। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण था। मैक्लेन को लगा कि यह

@Digitallibrary84

सही मौका है तो उसने प्रेस के जरिए इस युद्ध के बारे में बढ़-चढ़कर बातें बनाईं, ताकि देश जान सके कि वह कमाल का योद्धा है। हालाँकि कुछ बरस बाद जब लोग सच जान गए तो वे इस पर हँसे बिना नहीं रह पाए; लेकिन उस दौर में तो असमंजस की स्थिति थी। ऐसे में वे चाहते भी थे कि कोई तो नायक के रूप में उभरे और इस हालत से मुक्ति दिलाए। लिंकन ने मैक्लेन को पोटोमेक की सेना का कमांडर बना दिया। वह मेहनतकश भी था। इस बीच अक्तूबर आ गया। उसकी सेना के सामने भी प्रशिक्षित लोग आ रहे थे। सभी कह रहे थे कि अब हमला होना ही चाहिए। लिंकन भी कह रहे थे, मगर मैक्लेन परेड करवाता और वह क्या करने जा रहा है, इस बारे में बड़ी-बड़ी बातें करता तथा कार्यान्वयन के स्तर पर कुछ न होता। उससे पूछा गया तो उसने कहा कि मैं पहले कदम इसलिए नहीं उठा सका कि सेना उस समय विश्राम कर रही थी।

मैक्लेन नौजवान थे, उत्साही और लिंकन के विश्वासपात्र थे, फिर भी वे अतिशय जल्दबाजी में कोई भी कदम नहीं उठाते थे। वाशिंगटन की सुरक्षा करके उन्होंने साबित भी किया कि वे असाधारण हैं। उन्होंने 90 दिन पुराने सैनिकों को हटाकर तीन सालवालों को वरीयता दी, उन्हें प्रशिक्षण दिया और मजबूत टुकड़ी में बदल दिया। वे सैनिकों के मात्र शारीरिक प्रशिक्षण पर ही ध्यान नहीं देते थे, बल्कि नैतिक बल पर भी ध्यान देते थे। सैनिकों का नैतिक बल बढ़ाने के लिए वे उनकी खास परेडों पर राष्ट्रपति, युद्ध सचिव या सीनेटरों को बुलवाते। लिंकन भी उनके बुलावे पर गए थे। इसी से प्रभावित होकर बूढ़े स्कॉट के स्थान पर मैक्लेन को अमरीकी सेना का सर्वोच्च कमांडर बना दिया गया। मगर यहाँ भी समस्या हल नहीं हुई। लिंकन के लिए जीवन-पथ कभी इतना आसान नहीं रहा। उनके हर फैसले पर अवरोध आते रहे। सदैव की तरह अमरीकी सेना का सर्वोच्च कमांडर बनने के बाद मैक्लेन अपने को ब्रह्मज्ञानी समझने लगे। बजाय इसके कि वे लिंकन और उनके काबीना के आदेशों को कार्यान्वित करें, वे उन्हें उचित-अनुचित की परामर्श देने लगे। सभी लिंकन से कहने लगे कि शुरु से ही इस व्यक्ति की प्रतिबद्धता संदिग्ध थी। इसे हटा दिया जाना चाहिए। इस पर भी लिंकन उसे तत्काल हटाने के पक्ष में नहीं थे।

मैक्लेन की मनमानी

पेनिनसुला के समय जनरल मेग्रडर ने मात्र 5 हजार सैनिकों की मदद से मैक्लेन को घेर लिया। मैक्लेन इतने डर गए कि वे हमला नहीं कर सके। इतना ही नहीं, वे लिंकन से लगातार और सैनिकों की माँग करते रहे। लिंकन ने इस पर कहा भी कि अगर जादुई तरीके से मैं हजारों सैनिक उनके पास उपलब्ध करा दूँ तो मैक्लेन वहाँ से कहेंगे—आप निश्चिंत रहें, राष्ट्रपति! मैं कल रिचमंड पहुँच

@Digitallibrary84

जाऊँगा। मगर वह कल कब आएगा, कोई नहीं जानता। युद्ध सचिव स्टेनटन का कहना था कि वह अजीब इनसान था। यदि उसके पास 10 लाख सैनिक हों तो भी वह कहेगा कि दुश्मन के पास 20 लाख सैनिक हैं। मैक्लेन अपने अहंकार और बड़बोलेपन में लिंकन और उनके काबीना को 'शिकारी कुत्ते' तथा 'नराधम' कहने लगा। वह निश्चित रूप से लिंकन को अपमानित कर रहा था। एक बार तो उसने सारी सीमा लाँघ दी। लिंकन उससे मिलने गए तो उसने उन्हें आधे घंटे तक इंतजार करवा दिया। इसके बाद की एक घटना में उसने लिंकन को न केवल इंतजार करवाया बल्कि उनके सामने से होकर गुजरा—उनको अनदेखा करता हुआ और सीढ़ियाँ चढ़ गया। ऊपर से खबर भिजवा दी कि वह सोने चला गया है। खबर प्रेस के हाथ लगी और वह देश का सबसे चर्चित घटना बन गई। उसे पढ़कर मैरी लिंकन रो उठीं। उन्हें समझाते हुए लिंकन ने कहा था, "मैं बावजूद इसके उसे पद पर बनाए रख सकता हूँ, बशर्ते वह हमारे लिए जीत लेकर आए।"

मैक्लेन का मिजाज दिन-ब-दिन खराब होने लगा। ली के साथ हुए संघर्ष में पराजय के बाद उसने सारा ठीकरा वाशिंगटन के सिर फोड़ते हुए कहा कि वहाँ बैठे लोग डरपोक हैं। वे फैसला करना नहीं जानते। मुझे सैनिकों की जरूरत थी और उन लोगों ने मुहैया नहीं करवाए। मैक्लेन ने अपनी माँग 40 हजार सैनिकों से शुरू की और 1 लाख सैनिकों तक ले गया। उसे पता था कि इतने सैनिकों की आपूर्ति संभव नहीं है।

मैक्लेन के श्वसुर पी.पी. मारसी चीफ ऑफ स्टॉफ थे। उन्होंने मैक्लेन के कारनामे देखे तो निराश होकर बोले, अब हमारे पास शत्रु के सामने समर्पण करने के सिवा कोई रास्ता नहीं है। लिंकन ने इस बारे में सुना तो उन्होंने मारसी को तलब किया। वे आगबबूला हो गए। उन्होंने कहा कि मुझे पता चला है कि आपने शत्रु के सम्मुख बिना शर्त आत्मसमर्पण की बात कह दी। उन्होंने कहा कि जहाँ तक मुझे पता है, इस तरह के शब्द का इस्तेमाल हमारी सेना के संदर्भ में नहीं किया जा सकता।

अलगाववादियों से संघर्ष

4 जुलाई, 1861 को लिंकन ने संसद् में अपना भाषण देते हुए युद्ध शुरू करने के लिए दक्षिण के पृथकतावादी तत्त्वों को दोषी ठहराया और संघ की रक्षा करने के लिए उठाए गए कदमों को तार्किक और न्यायोचित ठहराया। उन्होंने इसे गृहयुद्ध की बजाय विद्रोह करार दिया और युद्ध की आगे की योजना भी बताई। युद्ध के दौरान गिरफ्तार लोगों के लिए अलग से शिविर बनाए गए थे। उन्हें आम जेलों में नहीं रखा गया था। लिंकन का यह कदम भी उन्हें एक अलग किस्म

@Digitallibrary84

के लोकतांत्रिक राजनेता का दर्जा दिलाता था, जो अपने संकल्प में किसी तरह के हस्तक्षेप को बेमानी मानता है, फिर भी आपकी हरकत की वजह से आपका नागरिकता का अधिकार नहीं छीना जाता। उनका कहना था कि विद्रोह सभी लोग नहीं करते, इसलिए समूचे राज्य को कुछ लोगों की हरकत का दोषी नहीं माना जा सकता। युद्ध में जीत के बाद दक्षिणी राज्य भी संयुक्त राज्य अमरीका का हिस्सा बने रहेंगे। उनके साथ कोई भेदभाव नहीं होगा।

लिंकन ने संसद् के संवैधानिक अधिकारों के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए और उसके प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए कहा कि युद्ध में जो भी कदम उठाए गए, वे सभी जनाकांक्षाओं के अनुरूप थे। उन्हें जनहित में, जनता के लिए आपातकालीन परिस्थिति में लिया गया। मुझे उम्मीद है कि संसद् उन सभी कार्यों का अनुमोदन करेगी, जिसे उसकी पूर्वानुमति के लिए लेना पड़ा। बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका के अधिकार को स्थगित किए जाने का फैसला भी एक कड़ा कदम था। इस पर अन्यमनस्क भाव से उन्होंने कहा था कि इसका अधिकार संसद् को है; लेकिन राष्ट्रपति को भी यह अधिकार है या नहीं, इस पर विवाद हो सकता है। लिंकन का कहना था कि कतिपय विशेष परिस्थितियों में, ऐसे में जबकि संसद् का अधिवेशन न चल रहा हो, राष्ट्रपति जनहित में ऐसा कोई भी कदम उठा सकता है। उनका मानना था कि अकेले बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका के अस्तित्व को बचाए रखने से सरकार गिरने का खतरा पैदा हो जाता और यदि सरकार न बचती तो जनता के दूसरे अधिकार अपने आप ही समाप्त हो जाते। इनका मानना था कि एक कानूनी अधिकार को नजरअंदाज कर दूसरे सभी कानूनों की रक्षा करना कोई गलत काम नहीं है।

शुरुआती दौर में तो बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका को कुछेक क्षेत्रों में ही लागू किया गया था, लेकिन बाद में इसे पूरे देश में लागू करना पड़ा था। बताते हैं कि युद्धारंभ के पहले नौ महीनों में 864 लोगों को बिना मुकदमा चलाए बंद किया गया। उस समय यह अधिकार राज्य सचिव को था। फरवरी 1862 के बाद यह अधिकार युद्ध सचिव के अधिकार-क्षेत्र में आ गया। इसके अंतर्गत जो लोग गिरफ्तार हुए, उनमें दुश्मनों के जासूस, तस्कर, अनधिकार प्रवेश करनेवाले विदेशी नागरिक थे। संसद् के पहले भाषण में ही लिंकन ने स्पष्ट कर दिया था कि उनकी पहली प्राथमिकता युद्ध जीतना है। नागरिक अधिकारों का मसला इसके बाद आता है। उन्होंने कहा कि देश का भाग्य यदि दाँव पर लगा हो तो नागरिक अधिकारों का सम्मान करना गौण हो जाता है और उसे गौण हो जाना चाहिए। इस युद्ध को उन्होंने लोकतंत्र और लोकतंत्र की रक्षा करनेवाला लोकयुद्ध बताया। एक ऐसा लोकतंत्र जो जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए है।

@Digitallibrary84

डगलस की मृत्यु

3 जून, 1861 को लिंकन के घोर विरोधी रहे डेमोक्रेट नेता डगलस की मृत्यु हो गई। दक्षिणी राज्यों के सांसदों ने संसद् का बहिष्कार कर दिया। इस तरह दोनों सदनों में रिपब्लिकन पार्टी का बहुमत हो गया। राष्ट्रपति के भाषण को करतल ध्वनि से सराहा गया। लिंकन ने संसद् से गुजारिश की कि वह 4 लाख की सेना खड़ी करने के लिए 40 करोड़ डॉलर की मंजूरी दे। इस पर उत्साहित सांसदों ने उन्हें 5 लाख की सेना के लिए 50 करोड़ डॉलर की अनुमति दे दी। इसकी वजह थी। और वह यह कि हर सांसद चाहता था कि सरकार किसी भी तरह युद्ध जीते। मात्र अर्थाभाव के कारण सरकार युद्ध में परास्त हो जाए, यह कोई नहीं चाहता था। इतना ही नहीं, संसद् ने लिंकन के हर फैसले को, जिस पर संसद् की पूर्वानुमति नहीं थी, उस पर अनुमति देकर उसे संवैधानिक जामा पहना दिया। लिंकन यह चाह भी रहे थे कि संसद् अपनी स्वीकृति से उनके हर कदम को न्यायोचित ठहरा दे।

युद्ध की रणनीति पर सभी जनरलों में एकमत नहीं था। वे अलग-अलग नजरिए से इसे देख रहे थे। शुरू के कुछ महीनों में संघीय सेना ने कुछेक झटके खाए, इसलिए बिना किसी ठीक-ठाक तैयारी के लिंकन भी बड़े हमले से कतरा रहे थे। बावजूद इसके वर्जीनिया में युद्ध को रोका नहीं जा सका। हमला मनासाज पर बोला गया, जहाँ से वाशिंगटन के लिए खतरे की खबरें आ रही थीं। इसका नेतृत्व युवा जनरल इरविन मैकडॉवेल कर रहे थे। उनसे कहा गया कि वे 9 जुलाई तक हमला कर दें। इसमें उन्होंने एक सप्ताह की देरी कर दी। तब तक दुश्मन तक खबर पहुँच गई और वह चौकन्ना हो गया। उसने कुछ और सेना भेज दी, नतीजा वही ढाक के तीन पात। लिंकन परेशान हो गए; मगर अगले दिन पता चला कि मैकडॉवेल ने सेना को पीछे हटा लिया था, ताकि बरबादी टाली जा सके। इतना ही नहीं, उन्होंने दक्षिण में किलेबंदी भी कर दी थी। इससे वाशिंगटन के लिए कोई खतरा न रहा।

इस सबके बाद संसद् ने एक बार फिर राष्ट्रपति लिंकन में अपना समर्थन और विश्वास व्यक्त किया। एक सांसद ने प्रस्ताव रखा कि युद्ध केवल संविधान और संघ की अस्मिता के लिए लड़ा जा रहा है। वाशिंगटन के रक्षार्थ खड़े चौकस सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए लिंकन स्वयं वहाँ गए।

देश की इस अवस्था में देश पर मर मिटनेवालों की जरूरत आ पड़ी थी। अखबारों और पत्रिकाओं में देशप्रेम की रचनाएँ छपी रहती थीं। उसी समय एडमंड क्लेरेंस स्टडमैन की एक लोकप्रिय कविता प्रकाशित हुई। उसका हर अंतरा इस पंक्ति पर खत्म होता था—'अब्राहम लिंकन, हमें एक आदमी दो'।

@Digital.library84

यह महज एक कविता नहीं थी। भावोद्रेक में बहते देश के आँसू थे, लहूलुहान देश की अभीप्सा थी। लिंकन ने इसे पढ़ा तो वे सिसक उठे।

मैक्लेन की विफलता के बाद लिंकन सोचते रहे कि देश और इतिहास उन्हें क्या कहेगा? वे कब इतना योग्य नायक चुन पाएँगे, जो उनके पास विजय लेकर आएगा। फिर उन्होंने जॉन पोप पर भरोसा किया। पोप में और मैक्लेन में दो समानताएँ थीं। पोप भी बहुत खूबसूरत थे और मैक्लेन की तरह बड़बोले भी। अपनी सैन्य शिरकत के पहले ही पोप ने कहा, "आप सभी एक नंबर के दब्बू और डरपोक हैं, यह बात आपके पूर्व में काम करने से साबित होती है। अब मैं आ गया हूँ और आप जल्दी ही सैन्य जादूगरी का कमाल देखेंगे।" पोप के प्रति मैक्लेन की घृणा चरम थी। पोप उनकी जगह नियुक्त हुए थे। पोप को वर्जीनिया रवाना होना था। युद्ध के विस्तृत होने के आसार थे। लिहाजा पोप भी अपनी तैयारी में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। चाहते थे, जितना अधिक सैन्य बल मिल जाए उतना अच्छा। युद्ध के मैदान में जबरदस्त रक्तपात हुआ। उस समय हालात इतने खराब हो गए कि लिंकन को लगने लगा था कि राजधानी हाथ से निकल जाएगी। वाशिंगटन को बचाने का आग्रह हर नागरिक से करना पड़ा था। युद्ध सचिव स्टेनटन ने करीब आधा दर्जन राज्यों को लिख भेजा कि सूचना मिलते ही अतिरिक्त बल और स्वयंसेवकों को विशेष ट्रेन से वाशिंगटन भिजवाएँ। लोग प्रार्थना करने लगे—हे प्रभु! अब इस शहर को बचाओ।

लिंकन मैक्लेन को ह्वाइट हाउस तलब कर चुके थे और बता चुके थे कि लोग तुम्हें क्या मान रहे हैं। लोगों का मानना है कि तुम पृथकतावादियों के हाथों वाशिंगटन का पराभव देखना चाहते हो। लिंकन वास्तव में सोच ही नहीं पा रहे थे कि अब किया क्या जाए? सेना की कमान किसके हाथ में दी जाए। उन्हें यह कहते भी सुना गया कि मैक्लेन को ही दुबारा अवसर दे दिया जाना चाहिए। वह स्वयं नहीं लड़ता, लेकिन दूसरों को युद्ध की प्रेरणा तो दे सकता है। शायद उसमें युद्ध की भावना जगानेवाला मंत्र है। इस बात पर लिंकन की तीव्र भर्त्सना हुई। उनकी अपनी काबीना के स्टेनटन और चेज ने कहा कि शायद ली का वाशिंगटन को कब्जा लेना उतना बुरा नहीं होगा जितना देशद्रोही मैक्लेन को दुबारा सेना की कमान देना। इस निंदा से लिंकन विचलित हो गए। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि यदि काबीना चाहता है तो वे अपने पद से इस्तीफा देने को तैयार हैं।

इधर लिंकन का परिवार धीरे-धीरे ह्वाइट हाउस में समायोजित हो गया। लिंकन को बच्चों के साथ खेलना प्रीतिकर लगता था। उन्हें जब भी समय मिलता, अपने बच्चों के साथ खेलते। इतना ही नहीं, लिंकन की मिलनसारिता की वजह से ह्वाइट हाउस के दरवाजे आम और खास लोगों के लिए हमेशा खुले रहते। इस

@Digitallibrary84

वजह से लोग उन्हें अपने बीच का आदमी मानते थे। मैरी लिंकन 'प्रथम महिला' के दायित्व में खरी उतर रही थीं।

ह्वाइट हाउस की आंतरिक स्थिति

ह्वाइट हाउस की स्थिति ठीक नहीं थी। टूटा फर्नीचर, दरवाजों से उखड़ता पलस्तर और फटे कालीन—कुल जमा यह आंतरिक स्थिति थी ह्वाइट हाउस की। तहखाने के ग्यारह गंदे कमरों में चूहे उत्पात मचाते। इस बीच संसद् ने ह्वाइट हाउस के रख-रखाव के लिए चार साल में 20 हजार डॉलर खर्च करने की अनुमति दे दी। इसे मैरी को करना था। सन् 1861 की गरमियों में न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया से उन्होंने फर्नीचर खरीदा, फिर रँगाई-पुताई का काम हुआ। इस बीच न्यूयॉर्क से नया फर्नीचर, नई कालीनें, नए परदे इत्यादि पहुँच गए। वर्षांत में बिल आया तो पता चला कि उन्होंने बजट से ज्यादा पैसे खर्च कर दिए। बजट तो चार वर्ष के लिए था। मैरी ने सोचा कि पुराना फर्नीचर बिक जाएगा तो कुछ असर पड़ेगा, लेकिन खाई ज्यादा बड़ी थी। कुछ असर न पड़ता देख मैरी ने संबंधित अमले के कमिश्नर को बुलाकर साफ-साफ बता दिया। लिंकन के पास बात पहुँची तो वे नाराज हो गए, मगर बाद में राजी हो गए और उन्होंने संसद् से अतिरिक्त मंजूरी ले ली। मामला शांति से निपट गया; लेकिन लिंकन के प्रारब्ध में शांति नहीं बदी थी। विद्रोह लंबा खिंचने से लोगों में उकताहट और घबराहट फैलने लगी। वे फैसला चाहने लगे। लिंकन को मिल रहा समर्थन भी डाँवाँडोल होने लगा। डेमोक्रेट दो भागों में विभाजित हो गए—युद्ध समर्थक और शांति समर्थक। शांति समर्थकों का कहना था कि राष्ट्रपति को चाहिए कि वह इस निरर्थक और अप्राकृतिक युद्ध को जल्दी-से-जल्दी समाप्त करवाएँ। युद्ध समर्थक तो लिंकन के साथ थे ही। लिंकन का मानना यह था कि इस विद्रोह को बिना डेमोक्रेट लोगों की मदद के दबाया नहीं जा सकता। यही वजह थी कि उन्होंने डेमोक्रेट को अपने प्रशासन में महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ भी दीं थी। वे हर हाल में उन्हें टूटने नहीं देना चाह रहे थे। रिपब्लिकन लोगों में भी असंतोष पनप रहा था। वे मान रहे थे कि लिंकन धीमी गति से काम कर रहे हैं।

दूसरी तरफ सेंट लुइस की पश्चिमी कमान के कमांडर थे फ्रीमौंट। वे लिंकन की धीमी रफ्तार से नाखुश थे। उन्होंने मिसौरी प्रांत में पृथकतावादियों को ठिकाने लगाने के लिए लिंकन से परामर्श किए बिना मार्शल लॉ लगा। मिसौरी की रक्षा उन्हें ही करनी थी और केंद्र इसमें उनकी कोई सहायता नहीं कर पा रहा था। न केंद्र सैनिक दे रहा था, न हथियार, न रसद। इस पर क्षुब्ध होकर फ्रीमौंट ने घोषणा की कि यदि कोई नागरिक हथियार लेकर घूमता पाया गया तो उसे गोली से उड़ा दिया जाएगा। इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी घोषणा की कि यदि

@Digitallibrary84

कोई नागरिक विद्रोहियों की अपरोक्ष रूप से मदद करता पाया गया तो उसके दासों को जबरन रिहा कर दिया जाएगा। लिंकन को यह बात रास नहीं आई। उनकी सोच थी कि यह सब बेमियादी तौर पर चलता रहेगा। वे भी हमारे लोगों को देखते ही गोली मारने लगेंगे। उनका कहना था कि जबरन दासों को रिहा करने से सामाजिक समस्याएँ बढ़ेंगी और दक्षिण के लोग हमसे स्थायी क्रम से दूर हो जाएँगे। फ्रीमौंट ने अपनी बात मनवाने के लिए अपनी पत्नी जेसी को लिंकन के पास भेजा। 10 सितंबर को रात नौ बजे उन्होंने लिंकन से भेंट की। उन्होंने समझाना चाहा कि फ्रीमौंट ने ऐसा क्यों किया? लिंकन ने कहा कि ऐसी स्थिति में यदि मैं फ्रीमौंट का समर्थन करता हूँ तो जनता में एक ही संदेश जाएगा कि अमरीका में तानाशाही है। यहाँ कोई चुनी हुई सरकार नहीं है। लिहाजा मैं समर्थन नहीं दे सकता। फ्रीमौंट भी अड़ियल आदमी थे। वह पहले मिसौरी के गवर्नर, उनके सहायकों और मंत्री मोंट गुमरी ब्लेयर के परिवार से झगड़ा कर चुके थे। ब्लेयर ने तो लिंकन से लिखित शिकायत कर निवेदन किया था कि फ्रीमौंट को हटा दिया जाए। फिर भी लिंकन ने फ्रीमौंट में विश्वास जताया और उन्हें बुलाकर कहा था कि उम्मीद है, आगे से ऐसा नहीं होगा। मगर इस बार फ्रीमौंट ने बिना वाशिंगटन को विश्वास में लिये अधिनायकवादी आदेश प्रसारित किए। इसे लिंकन बरदाश्त नहीं कर पाए और 2 नवंबर को उन्हें हटाकर उनके द्वारा पारित सभी तरह के आदेशों को निरस्त कर दिया। इससे पश्चिम और उत्तर-पश्चिम के लोग सहमत नहीं थे। उनकी मान्यता थी कि फ्रीमौंट संभव है, सैद्धांतिक रूप से गड़बड़ कर रहे होंगे; लेकिन इस युद्ध को सिर्फ फ्रीमौंट के तरीके से ही जीता जा सकता है। यह एक तरह से लिंकन की आलोचना थी। कंटेकी के लोगों ने अलबत्ता लिंकन के फैसले को सही ठहराया।

अपनी आलोचनाओं के जवाब में लिंकन ने कहा कि ऐसा करना आवश्यक था। इसलिए कि फ्रीमौंट के आदेश बने रहते तो हमें कंटेक को खोना पड़ता। कंटेक चला जाता तो मिसौरी, मैरीलैंड को भी बचाना मुश्किल हो जाता। और यदि मैरीलैंड चला जाता तो वाशिंगटन को कैसे बचाया जाता। दूसरी बात यह कि गुलामों को रिहा करने या न करने संबंधी आदेश मिलिट्री का जनरल कैसे दे सकता है। यह मामला पूरी तरह से राजनीतिक है। यहाँ संविधान है, चुनी हुई सरकार है और लोकतंत्र है। लिहाजा, इस तरह के फैसले इसी ढाँचे के तहत लिये जा सकते हैं।

लिंकन अपनी तमाम व्यस्तताओं, संत्रासों व संकटों के बाद भी अपने दोनों बेटे टेड और विली के साथ खेलना नहीं भूलते। वे दोनों भी ह्वाइट हाउस में चिल्ल-पों मचाए रखते। शैतानी भी कम नहीं करते थे। कभी नौकरों को साथ लेकर ड्रिल करते तो कभी कुछ। उन्हें कभी लगता कि कोई जरूरतमंद आ गया है और उसकी मुलाकात लिंकन से होनी चाहिए तो वे कुछ नहीं तो उसके कागजात

लिंकन तक दौड़कर पहुँचा देते। ऐसे में यदि लिंकन जहाँ होते, वहाँ सामने के दरवाजों से जाना मना होता तो वे पिछले दरवाजे से पहुँच जाते। मगर आगंतुक की मदद जरूर करते। फिर भी, थे तो बच्चे ही। लिंकन उनके लिए पिता थे। और वे ऐसा मानते थे कि पिता से वे कभी भी कहीं भी अपनी बात कह सकते हैं। एक दिन लिंकन काबीना बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में जरूरी मसले पर विचार-विमर्श चल रहा था कि दोनों बच्चे धड़धड़ाते हुए उस कक्ष में चले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने लिंकन को बताया कि तलघर में एक बिल्ली ने अभी-अभी छोटे-छोटे बच्चे दिए हैं।

छोटे बेटे विली का असामयिक निधन

बच्चों से लिंकन कभी कुछ नहीं कहते थे। इससे उनकी काबीना के चेज भी परेशान थे। एक बार चेज किसी आवश्यक मुद्दे पर लिंकन को सहमत कराने की कोशिश में लगे थे, तभी टेड आया और कूदता-फाँदता लिंकन के कंधे पर चढ़ गया। फिर एक टाँग लिंकन के गले के एक तरफ और दूसरी दूसरे तरफ डालकर बैठ गया। इस पर चेज झुँझला उठे; मगर लिंकन निर्विकार भाव से बात करते रहे।

विली सर्दी में भी अपनी शैतानी से बाज नहीं आता। वह हाड़ कँपा देनेवाली सर्दी थी। सर्दी में बारिश हो गई थी और विली उसमें भीग गया। उसे बुखार हो आया। बहुत कोशिशों के बाद भी उसे बचाया नहीं जा सका। इस पर लिंकन सुबक-सुबककर रोए। उन्होंने कहा, "मेरा बच्चा! वह इस धरती के लिए बहुत अच्छा था। ईश्वर ने उसे अपने घर बुला लिया। मगर यह ज्यादती है, उसे इस रूप में देखना ज्यादती है।" मैरी लिंकन इसके बाद ऐसे गहरे अवसाद में चली गईं कि वे विली की अंत्येष्टि में भी नहीं गईं। वे उसकी तसवीर की तरफ भी देख नहीं पाती थीं। यहाँ तक कि उसे जो भी पसंद था, उसकी तरफ भी नहीं। उन फलों की तरफ भी नहीं, जिन्हें विली पसंद करता था। उन्होंने उसके सारे खिलौने बाँट दिए। इतना ही नहीं, जिस अतिथिकक्ष में विली ने अंतिम साँसें ली थीं, उसे उन्होंने फिर कभी खोला ही नहीं। लिंकन की हालत भी काफी खराब हो गई थी। कई दिनों तक वे जरूरी कागजात नहीं देख पाए। उनकी मेज पर आए कागज अनुत्तरित पड़े रहे।

राष्ट्रपति कई बार बैठकर घंटों जोर-जोर से पढ़ते थे। उस समय ज्यादा-से-ज्यादा उनका एक सचिव साथ होता था। अमूमन ऐसे में वे शेक्सपीयर को पढ़ना पसंद करते थे। एक दिन वे 'किंग जॉन' पढ़ रहे थे। वे एक ऐसे अनुच्छेद तक पहुँचे, जिसमें एक स्त्री अपने खोए पुत्र के लिए विलाप कर रही थी।

@Digitallibrary84

लिंकन ने पुस्तक बंद कर दी और वे उन पंक्तियों को मन-ही-मन में दोहराने लगे —

और! पिता कार्डिनल है मैंने तुम्हें

कहते हुए सुना

कि हम अपने संबंधियों को स्वर्ग में

देख और जान सकेंगे—

यदि यह सच है तो मैं अपने बेटे को

फिर से देख पाऊँगा।

फिर वे अपने बेटे विली के सपनों में खो गए। उन्होंने अपना सिर मेज पर टिका दिया और बड़ी देर तक सुबकते रहे। लिंकन निजी संबंधों में भी पर्याप्त तरल थे। बच्चों के संदर्भ में वे इन्हें ईश्वर का प्रतिरूप ही मानते थे। सामाजिक संदर्भों में उनका मानना था कि आप उम्र पाकर सीख गए हैं और ये सीखने की प्रक्रिया में हैं। इसलिए प्रक्रिया का भी सम्मान किया जाना चाहिए।

राष्ट्रपति के रूप में लिंकन का राज्यों के संघ को संदेश 3 दिसंबर, 1861 को कांग्रेस यानी संसद् में दिया गया। उन्होंने संसद् से गुजारिश की कि हेती और साइबेरिया दोनों को देशों के रूप में मान्यता दी जाए। ये दोनों ही काले लोगों के देश हैं। साफ है कि लिंकन अपनी अवधारणा और कार्यों में एकरूप थे। उन्होंने अपने भाषण में मुक्त समाज में पूँजी और मजदूरों के संबंधों की व्याख्या की। वे उसी काल में थे, जब 'दास कैपिटल' से द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की ताजा व्याख्या कार्ल मार्क्स ने की थी।

राष्ट्रपति लिंकन ने काबीना की ओर ध्यान देना शुरू किया तो उन्हें लगा कि सेना में आपसी झगड़े, वैमनस्यता और विद्वेष की भावनाएँ घर कर गई हैं। राज्य सचिव सेवर्ड अपने को सबसे ऊपर मानते थे और दूसरों के अमलों में हस्तक्षेप भी करते थे। इतना ही नहीं, गाहे-बगाहे वे दूसरों का अनादर भी करते थे। इससे लोगों में गहरा असंतोष व्याप्त हो जाता। ट्रेजरी सचिव चेज सेवर्ड का तिरस्कार करने लगे। जनरल मैक्लेन युद्ध सचिव स्टेनटन से घृणा करने लगे। पोस्टमास्टर जनरल ब्लेयर की सेवर्ड से बननी बंद हो गई थी। ब्लेयर ने तो सरेआम सेवर्ड को सिद्धांतहीन और झूठा भी कहा। ब्लेयर ने तो विवाद को इतना बढ़ा लिया कि लिंकन के हस्तक्षेप से भी मामला निपटा नहीं। अंत में मजबूर होकर लिंकन को ब्लेयर का इस्तीफा माँगना पड़ा। घृणा एक संक्रामक रोग की तरह हो गई थी। पूरी काबीना में कोई किसी का न विश्वास कर रहा था और न सम्मान।

@Digitallibrary84

उपराष्ट्रपति हन्निबला हेमलिन नौसेना के सचिव गिडोन वेल्स से बात भी नहीं करते थे। स्टेनटन तो सभी की घृणा के पात्र थे। वे खुद भी चेज, वेल्स, ब्लेयर और मैरी लिंकन का तिरस्कार कर चुके थे। काबीना का हर सदस्य अपने को लिंकन से श्रेष्ठ समझने लगा था। राष्ट्रपति लिंकन ने सन् 1860 में बड़ी उम्मीद और विश्वास के साथ बेट्स को एटॉर्नी जनरल नियुक्त किया था। वे समझते थे कि इसके नतीजे सुखद होंगे। इसके उलट बेट्स ने अपनी डायरी में लिखा कि लिंकन को राष्ट्रपति बनाकर रिपब्लिकन लोगों ने बड़ी भूल की है। लिंकन एक ऐसा व्यक्ति है, जिसमें इच्छाशक्ति का अभाव है। वह नियंत्रण करने में भी नितांत अक्षम है। सेवर्ड को लगता था कि उन्हें प्रशासन चलाने का बीस वर्ष का दीर्घ अनुभव है। वे लिंकन से चीजों को बेहतर समझते हैं और उन्हें हल करने का माद्दा रखते हैं। उन्हें लोग चापलूसी में 'प्रधानमंत्री' कहते तो उन्हें बड़ा भला लगता। वे ऐसे लोगों को नजदीक रखना पसंद भी करते। इतना ही नहीं, उनका मानना था कि अमरीका के इन सारे पापों की मुक्ति सिर्फ उनके और उनके ही जरिए संभव है।

अफसरों की अड़ंगेबाजी

एक बार तो सेवर्ड ने लिंकन को बड़ा ही दुःसाहसी पत्र भेज दिया। शायद वह आश्चर्य से भी ज्यादा कुछ कहा जा सकता है। ऐसा पत्र कभी किसी काबीना सदस्य ने राष्ट्रपति को नहीं भेजा होगा। सेवर्ड मानते थे कि उन्हें देश का शासन चलाने के लिए ही सचिव बनाया गया है। लिंकन तो सिर्फ मुखौटे हैं। वे ही नहीं, उनके कुछेक चापलूस मित्र भी ऐसा ही मानते थे। सेवर्ड ने अपने पत्र में लिखा था—'हमारे प्रशासन का यह महीना भी व्यतीत हो गया और इस माह भी हम न तो घरेलू मुद्दों पर, न वैदेशिक मसलों पर किसी नीति को बनाने में सफल रहे।' पत्र के अंत में उनका सुझाव था कि लिंकन अब नेपथ्य में चले जाएँ। यदि देश को नरक में जाने से बचाना है तो वास्तविक नियंत्रण उनके हाथ में दे दिया जाए। सेवर्ड को मेक्सिको के संदर्भ में फ्रांस का रवैया भी पसंद नहीं था। वह ग्रेट ब्रिटेन और रूस से भी खफा था। उसने इस बारे में इंग्लैंड के लिए एक बड़ा अहम्मन्यतावादी नोट तैयार किया। लिंकन की निगाह पड़ गई। उन्होंने उसकी भाषा के तेवर और तल्खमिजाजी को कम किया, अन्यथा युद्ध होने से कोई नहीं बचा सकता था।

लिंकन ने खुद भी माना कि वे स्वयं अनुभवी नहीं थे और जिस तरह की परिस्थितियाँ सामने आ रही थीं, उसमें किसी भी व्यक्ति को बेहतर सलाह और मदद की दरकार होती। मुझे भी हुई और मैंने इनसे मदद ली। मगर उससे परेशानियाँ बढ़ीं। इस बीच पूरा वाशिंगटन इसी दुष्प्रचार में था कि समूचा

@Digitallibrary84

प्रशासन सेवर्ड ही चलाते हैं। यह बात मैरी लिंकन ने भी सुनी। इससे वे बौखला गईं। उनका गर्व आहत हुआ और उन्होंने लिंकन से कहा कि वे विधायी रूप में कुछ जरूरी कदम उठाएँ, ताकि स्थिति स्पष्ट हो सके। लिंकन ने मैरी को भरोसा दिलाया कि तुम चिंता न करो, मैं प्रशासन चलाऊँ या नहीं, लेकिन इतना तय है कि अब सेवर्ड प्रशासन नहीं चलाएगा।

सेलमोन पी-चेज लिंकन काबीना के महत्त्वपूर्ण सदस्य थे। लंबे, खूबसूरत, सांस्कृतिक और तीन भाषाओं के विद्वान् चेज इस बात से चकित रहते थे कि ह्वाइट हाउस में लिंकन जैसा आदमी रहता है, जिसे रात के खाने का आदेश देना भी ठीक से नहीं आता। उसे हमेशा लगता रहता था कि उसके साथ अन्याय हुआ है। सेवर्ड को सचिव बनाया जा सकता है तो उन्हें क्यों नहीं? सन् 1864 में फिर चुनाव होने थे और चेज इसमें जुट गए कि अबकी बार वे जरूर ह्वाइट हाउस में जाएँगे। उन्होंने वे सारे काम किए, जिस पर टिप्पणी करते हुए लिंकन ने कहा था कि यह चेज का राष्ट्रपति बनने के लिए किया गया पागलपन है। मजा यह था कि लिंकन के सामने चेज उनका सबसे अच्छा मित्र होने का ढोंग करते। लेकिन जैसे ही वे आँखों से ओझल होते, चेज सबसे पहले उनकी निंदा शुरु करते। वह भी काफी तीखी शैली में। इतना ही नहीं, लिंकन यदि किसी के बारे में कोई कठोर फैसला ले लेते तो चेज उससे व्यक्तिगत रूप से मिलते। उसे समझाते कि तुम सही हो और उसकी सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते। लिंकन ने कहा, "चेज एक काबिल आदमी है। मगर जहाँ तक राष्ट्रपति पद के विषय में उसके रवैए का सवाल है तो वह इस बारे में सनकी हो चुका है। मुझे कई लोगों ने सलाह भी दी कि इसका कुछ करना चाहिए। मगर मैं कुछ करना नहीं चाहता, कम-से-कम तब तक जब तक वह अपना दायित्व ठीक से निभाता रहे।" लेकिन स्थितियाँ ठीक नहीं हुईं। वह लगातार खराब होती रहीं। चेज ने इस बीच कई बार अपना इस्तीफा दिया, लेकिन हर बार लिंकन ने उन्हें जाकर मनाया और कहा कि काम करो। जनता ने इसीलिए यह जिम्मेदारी दी है। इससे चेज को लगा कि लिंकन भयभीत हैं। वे उसके बिना काम चला ही नहीं सकते। उन्होंने दबाव बनाने के लिए एक बार फिर त्यागपत्र भिजवा दिया। तब तक हालात इतने खराब हो गए थे कि दोनों एक-दूसरे की शक्ल देखना भी पसंद नहीं करते थे। लिंकन ने बिना विचार किए इस बार चेज का इस्तीफा मंजूर कर लिया।

इस्तीफा मंजूर होते ही वित्तीय मामलों की सीनेट कमेटी के सदस्य ह्वाइट हाउस में इकट्ठे हुए। वे विरोध जता रहे थे। लिंकन ने सबकुछ शांति व धैर्य से सुना और कहा कि चेज प्रशासन चलाना चाहते थे और उनके प्रभुत्व को चुनौती देते आ रहे थे। उनकी उपयोगिता समाप्त हो चुकी है। वे चाहते हैं कि मैं उन्हें अपने कंधे पर बैठाऊँ और पद पर बने रहने के लिए फुसलाऊँ। यह मैं नहीं कर सकता। यदि जरूरी हुआ तो मैं पद से त्यागपत्र देकर इलिनॉय चला जाऊँगा, जहाँ खेती कर

@Digitallibrary84

मैं अपने लिए भोजन का इंतजाम तो कर ही सकता हूँ। बावजूद इसके लिंकन को चेज की योग्यता पर कोई संदेह नहीं था। अमूमन होता यह है कि मनुष्य अपने प्रति किए गए व्यवहार से ही व्यक्ति का आकलन करता है। लिंकन ऐसा नहीं करते थे। उन्होंने बाद में कहा कि अब तक मैं जितने भी महान् लोगों से मिला हूँ, चेज उनमें से एक हैं। उन्होंने कहा ही नहीं, कुछ समय बाद चेज को अमरीका की सुप्रीम कोर्ट का प्रधान न्यायाधीश नियुक्त किया। इस घोषणा से चेज भी चौंके थे।

स्टेनटन भारी लेकिन बलवान शरीर का मझौले कद का व्यक्ति था। उसके पिता डॉक्टर थे, जिनके बाहरी कक्ष में नर-कंकाल टँगा रहता था। उन्हें लगता था कि एक दिन उनका बेटा भी डॉक्टर बनेगा। हालाँकि ऐसा हुआ नहीं। उसका निश्चित मत था कि लिंकन प्रशासन चलाने में असमर्थ हैं। मिलिट्री शासक को उन्हें ह्वाइट हाउस से बाहर निकाल देना चाहिए। बुचानन को लिखे पत्र में उसने लिंकन की आलोचना इतनी अभद्र भाषा में की थी कि उसका उल्लेख भी संभव नहीं है।

लिंकन को शपथ लिये दस माह हो गए थे। युद्ध सचिव केमेरान और लिंकन के बीच किसी बात पर असहमति बढ़ती गई। लिंकन ने युद्ध सचिव से इस्तीफा माँग लिया। लिंकन को मालूम था कि देश का भविष्य उनके इस चुनाव पर टिका हुआ है। वे बिलकुल द्वंद्व में नहीं थे और उन्होंने स्टेनटन को युद्ध सचिव नियुक्त कर दिया। संभवतया यह अकेली थी, जिसे बाद के इतिहासकारों ने भी सर्वाधिक बुद्धिमत्तापूर्ण करार दिया। एक ऐसी नियुक्ति, जिस पर देश और लिंकन दोनों निर्भर करते थे, उस पद पर चुनना था और उन्होंने उसे चुना, जो लिंकन को सख्त नापसंद करता था। आमतौर पर ऐसा नहीं होता। आज की समकालीन राजनीति में तो बिलकुल नहीं। न अमरीका में, न भारत में। स्टेनटन ने भी युद्ध सचिव बनने के बाद लिंकन को धोखा नहीं दिया। वे दिन-रात काम करते। यहाँ तक कि वे भोजन भी युद्ध के मैदान में करते और सोने के लिए भी घर नहीं जाते। हालाँकि स्टेनटन भी ऐसे सैन्य अफसरों से घिरे थे, जो नितांत अयोग्य और अकर्मण्य थे। उन्होंने उनकी कसकर परेड ली। उनसे कांग्रेस के अनेक सदस्य भी भयभीत रहते थे। उनके लिए संविधान ईमान था। उसके उल्लंघन पर स्टेनटन ने कई जनरलों को भी नहीं बख्शा। उन्होंने मैक्लेन से भी यह कह दिया था कि यदि वे सेना का कार्यभार देखना चाहते हैं तो उन्हें लड़ना ही होगा।

एक दिन एक संसद् सदस्य स्टेनटन के पास पहुँचा। कहने लगा कि कुछ रेजीमेंट का स्थानांतरण कर दें। उसने बताया भी कि किनका स्थानांतरण करना है। स्टेनटन ने तत्काल जवाब दिया कि मैं ऐसा कुछ नहीं कर सकता। मगर राजनेता अपना पासा फेंककर यूँ ही नहीं उठ जाते। उस राजनेता ने कहा कि शायद

@Digitallibrary84

आपको मालूम नहीं कि मेरे पास राष्ट्रपति का आदेश है। इस पर उन्होंने झल्लाते हुए कहा कि यदि राष्ट्रपति ने ऐसा आदेश दिया है तो वे नितांत मूर्ख हैं। वे सज्जन लिंकन के पास आए और कहने लगे कि स्टेनटन को तत्काल बरखास्त किया जाए। लिंकन ने उनकी बात गौर से सुनी और आदतन कहा कि यदि वह कह रहा है कि मैं मूर्ख हूँ तो शायद हो भी सकता हूँ। बहरहाल, मैं खुद उनसे मिलूँगा। लिंकन स्टेनटन से मिलने गए तो स्टेनटन ने बताया कि ऐसा आदेश नहीं दिया जाना चाहिए। यह गलत है। लिंकन उनकी बात से सहमत हो गए और उन्होंने अपने आदेश को वापस ले लिया। स्टेनटन की कड़वी टिप्पणियों के बारे में लिंकन को पता होता था, फिर भी वे न तो उनके काम में हस्तक्षेप करते थे और न सफाई माँगते थे। वे कहा करते कि मैं उनकी परेशानियों को और नहीं बढ़ा सकता। उनकी स्थिति दुनिया में सबसे कठिन है। हजारों लोग उन्हें सिर्फ इसलिए दोष देते रहते हैं कि उनकी प्रोन्नति नहीं हुई और हजारों इसलिए कि उनकी नियुक्ति नहीं हुई। उन पर जितना दबाव है उतना शायद किसी पर नहीं। उस दबाव को नापा नहीं जा सकता। वह अंतहीन है। स्टेनटन आजीवन लिंकन के प्रशंसक नहीं रहे। मगर फोर्ड्स थिएटर में लिंकन के पार्थिव शरीर को देखकर उन्होंने कहा था— "यहाँ एक ऐसा व्यक्ति सो रहा है, जो दुनिया का सबसे अच्छा प्रशासक था।"

लिंकन के सचिव रहे जॉन हे ने लिखा—"लिंकन अनियमित तरीके से काम करने के आदी थे। हमें करीब चार बरस लगे उन्हें समझाने में कि कुछ नियमों की प्रक्रिया का पालन किसी भी काम के लिए अनिवार्य होता है। वे किसी भी नियम को बनने के साथ ही तोड़ देने में यकीन रखते थे। उन्हें लगता था, काम महत्त्वपूर्ण है, नियम नहीं। नियम भी तो काम के लिए ही बनाए गए हैं। उन्हें ऐसा कोई नियम मंजूर नहीं था, जो उन्हें आम जनता से दूर रखे। यह और बात है कि जनता उनकी जिंदगी में अनावश्यक शिकायतें और प्रार्थनाएँ लेकर सिवा असंतोष पैदा करने के और कुछ नहीं करती थी। फिर भी वे उन्हें अपने से कभी दूर नहीं होने देते।

लिंकन बहुत कम चिट्ठियाँ लिखते थे और उनके पास जो आती थीं, उनमें से पचास चिट्ठियों में से एक बमुश्किल पढ़ते थे। उनका ध्यान इस बारे दिलाया गया तो उन्होंने चिट्ठियों का काम पूरे तौर पर मुझ पर सौंप दिया। मुझे याद नहीं कि अपने नाम पर लिखी चिट्ठी भी कभी उन्होंने पूरी पढ़ी होगी।

लिंकन बहुत कम खाते थे। नाश्ते में अंडा, टोस्ट, कॉफी वगैरह और दोपहर को दूध, बिस्किट वगैरह। रात को करीब 11 बजे सो जाते और प्रातः से काम के लिए सन्नद्ध।

@Digitallibrary84

अखबारों को भी वे अमूमन सरसरी निगाह से देखते थे। पढ़ते तो शायद ही थे। उनका ध्यान जब किसी खास लेख या रपट पर दिलाते तब कहीं वे उसे पढ़ते। वे कहा करते, "मुझे इन लोगों से ज्यादा पता है।" उन्हें विनीत कहना मुश्किल है, शायद इसलिए कि कोई भी महान् आदमी इतना और ऐसा विनीत नहीं हो सकता।

ट्रेंट जहाज की घटना

घटनाओं के साथ चलें तो 3 दिसंबर, 1861 को लिंकन के संदेश से थोड़ा पहले अक्तूबर में पृथकतावादियों ने ब्रिटेन और फ्रांस में एक-एक राजदूत नियुक्त कर दिया। पहले वे लोग क्यूबा गए। वहाँ से ब्रिटेन के डाक जहाज से यूरोप रवाना हो गए। रास्ते में अमरीकी नौसेना के जहाज के कप्तान विल्कीज ने ब्रितानी जहाज 'ट्रेंट' की तलाशी ले ली और उन्हें उतारकर बोस्टन बंदरगाह ले जाया गया। विल्कीज की अमरीका में काफी प्रशंसा हुई; लेकिन ब्रिटेन ने इसे अपना अपमान मानते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताया। विदेश नीति का काम सेवर्ड देखते थे। पहले इस बारे में उल्लेख आ चुका है कि सेवर्ड ने कैसे पत्र लंदन को लिखे थे, जिन्हें लिंकन ने न देखा होता तो निश्चित ही युद्ध होता। ऐसे में लिंकन समनर से मशविरा करने लगे। समनर सीनेट की विदेशी मामलों से संबंधित कमेटी के अध्यक्ष थे। वे लिंकन को ईमानदार लेकिन अनुभवहीन मानते थे और लिंकन उन्हें सुलझा हुआ राजनयिक। ब्रिटेन उस समय बड़ी राजनीतिक शक्ति था। अमरीका पहले से ही गृहयुद्ध में जल रहा था और उसे मालूम था कि उसकी उँगलियाँ हीरे की नहीं हैं, इसलिए उसे ब्रिटेन की ज्वाला में उँगलियाँ नहीं डालनी हैं। समनर ने लिंकन को परामर्श दिया कि वह इस मामले में पंच निर्णय लें। ब्रिटेन बौखला रहा था। उसने अमरीका से माफी माँगने और गिरफ्तार राजनयिकों को छोड़ने की माँग रखी। उसने चेताया कि यदि सात दिनों में ऐसा नहीं हुआ तो अमरीका में ब्रितानी दूतावास बंद कर दिया जाएगा। 25 दिसंबर की काबीना की बैठक हुई। यद्यपि उसमें हल नहीं निकाला जा सका, लेकिन बाद की दो बैठकों में हल खोज लिया गया।

जनरल मैक्लेन को कुछ लोग गद्दार कहते थे। मगर लिंकन ऐसा नहीं कहते थे; पर वे उनकी गतिविधियों पर नजर जरूर रखते थे। पृथकतावादी सेना मनासाज से पीछे हटने लगी, तब मैक्लेन 1 लाख 12 हजार सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँचे। वहाँ मुश्किल से 50 हजार लोग थे, जिन्हें पहले जनरल 1 लाख बता रहे थे और किसी तरह अपने को युद्ध से बचा रहे थे। हँसी तो तब ज्यादा उड़ी जब यह पता चला कि विद्रोहियों ने लकड़ियों के लट्ठे पेंट कर कुछ इस तरह लगा दिए कि वे तोप नजर आएँ, और मैक्लेन ऐसा समझते भी थे।

@Digitallibrary84

जानते तो सभी थे कि युद्ध के पीछे दासप्रथा ही मूल कारण है, फिर भी लिंकन इस बारे में साफ कुछ नहीं कहते थे। उनका मानना था कि इसके उन्मूलन से पहले देश में एकता जरूरी है। रिपब्लिकन पार्टी का दबाव बढ़ रहा था कि लिंकन इस बारे में अपनी नीति स्पष्ट करें। हालाँकि एक तरह से यह साफ ही था। वे जितने भी कदम उठा रहे थे, वे सभी दासप्रथा पर चोट करनेवाले थे। लिंकन राष्ट्रपति थे, मगर राष्ट्रपति को भी कानून के तहत ही काम करना होता है। अमेरिका में भगोड़ा कानून लागू था। इसके तहत सरकार का यह फर्ज था कि वह भगोड़ों को फिर से उनके मालिकों को सौंपे तथा न मिलने पर खोजे भी। सेना के अनेक कमांडर इस कानून से सहमत नहीं थे। उनका मानना था कि पुनः सौंपे गए दासों का इस्तेमाल पृथकतावादी ढाल के रूप में कर सकते हैं। इस पर लिंकन ने अपना पुराना प्रस्ताव दोहराया कि शरणार्थी ऐसी जगह बसाए जाएँ, जो उनके मन-माफिक हो। मार्च 1862 में उन्होंने कांग्रेस के नाम अपने संदेश में कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका ऐसे किसी भी राज्य के साथ सहयोग करेगा, जो दासप्रथा के क्रमागत उन्मूलन की नीति पर काम करता है।

लिंकन दूरदर्शी थे, यह उन्होंने अपने हर कदम से साबित किया। सैनफ्रांसिस्को के अखबार 'डेली आरा कैलिफोर्निया' ने लिखा कि लिंकन का यह सही समय और सही जगह लिया गया कदम है। न्यूयॉर्क के अखबारों ने इसे नए युग का सूत्रपाती कदम अभिहित किया। 'न्यूयॉर्क ट्रिब्यून' ने लिखा कि यह सौभाग्य की बात है कि लिंकन हमारे राष्ट्रपति हैं। पूरा देश इस बात के लिए धन्यवाद देता है कि हमारे पास इतना बुद्धिमान शासक है। दासों को मुक्त कराने में आनेवाले खर्च के बारे में लिंकन ने स्पष्ट किया कि डेलावेयर के प्रांत में दासों को मुक्त कराने में जो खर्च आएगा, वह युद्ध के मात्र आधे दिन के खर्च के बराबर है। बहुत संक्षिप्त चर्चा के बाद लिंकन के प्रस्ताव को संसद् ने ध्वनि मत से पारित कर दिया।

3 मई को लिंकन को पता चला कि मैक्लेन पेनिनसुएला की ओर बढ़ रहे हैं। लिंकन ने तय किया कि रणभूमि पहुँचकर स्थिति जानी जाए। इस विचार के साथ ही लिंकन, चेज और स्टेनटन 'मियामी' स्टीमर पर सवार होकर चल पड़े। दूसरे दिन वे लोग मोनरो के किले में पहुँचे। इसकी सुरक्षा का जिम्मा अठहत्तर वर्षीय जनरल बुल के हाथ में था। वहीं ज्ञात हुआ कि मैक्लेन का यहाँ पहुँचना फिलहाल संभव नहीं है। उनका विचार बना कि नारफाक को छुड़ा लिया जाए। वहीं 'मैरीमैक' नाम का एक लड़ाकू जहाज भी खड़ा था। वह कभी भी संघीय सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता था। बुल की राय यह थी कि बिना बड़ी सेना के वहाँ न जाया जाए; लेकिन चेज एक सुरक्षा नाव में सवार होकर नारफाक तक चले गए। बाद में लिंकन और स्टेनटन भी वहाँ पहुँच गए थे। फिर लिंकन को मोनरो के किले में वापस भेज दिया गया और चेज ने छोटी सी सैन्य टुकड़ी के

@Digitallibrary84

बलबूते नारफाक से समर्पण भी करवा लिया। इतना ही नहीं, जिस 'मैरीमैक' जहाज से खतरा था, उसे भी नष्ट कर दिया गया। ऐसा नहीं कि चेज ने इसकी वाहवाही अकेले लूट ली। उन्होंने कहा कि यह संभव नहीं होता, यदि लिंकन में अकूत हिम्मत और सूझ-बूझ न होती।

कागजी मुद्रा का प्रश्न

इस बीच संघ की वित्तीय स्थिति दयनीय हो गई। वित्तमंत्री चेज ने इससे निपटने के लिए कांग्रेस से निवेदन किया कि उन्हें कागजी मुद्रा जारी करने की अनुमति दी जाए। इस बीच विद्रोहियों की राजधानी रिचमौंड को रौंदने के खयाल से मैक्लेन उसकी तरफ बढ़ रहे थे, लेकिन बिना दूरदर्शिता के। उन्होंने यह काम कुछ इस तरह किया कि वाशिंगटन के लिए खतरा पैदा हो गया। मुख्य सेनापति यदि अपनी जिम्मेदारी ठीक से न निबाहे तो उसे किसी-न-किसी को तो निभाना ही पड़ेगा। लिहाजा दैनिक प्रशासन के अलावा लिंकन एवं स्टेनटन सेना की दैनिक जरूरतों को देखते और उन्हें कहाँ क्या करना है, इसकी हिदायत भी देते। वस्तुतः यह काम मैक्लेन का था। जहाँ तक रिचमौंड की तरफ उनके बढ़ने की बात है तो उनकी रफ्तार एक दिन में महज दो मील थी। अर्थात् संघीय सेना रिचमौंड की ओर एक दिन में दो मील से ज्यादा का रास्ता तय नहीं कर पा रही थी। नतीजतन, विद्रोही प्रभावी हो गए। उन्होंने मैक्लेन के सैनिकों पर यानी पोटेमैक सेना पर हमला कर दिया। यह दीगर बात है कि संघीय सेना से वह पार न पा सके, फिर भी सेना को अपने पाँच हजार जवान गँवाने पड़े। इससे मैक्लेन फिर यह कहने लगा कि उसे और अतिरिक्त बल की जरूरत है। वैसे वह यह बात इतनी अधिक बार कह चुका था कि यह उसका तकियाकलाम बन गया था। मैक्लेन को अतिरिक्त मदद दी गई। इससे उसके पास 1,30,000 सैनिक हो गए। लेकिन एक बार फिर विद्रोहियों ने संघीय सेना को सँभलने का मौका दिए बिना हमला कर दिया। इस बार संघीय सेना को चिकमोहिनी नदी के पार जाना पड़ा। लिंकन ने उत्तरी वर्जीनिया की सभी टुकड़ियों को मिलाकर वर्जीनिया सेना बना दी। मगर उसकी बागडोर मैक्लेन के हाथ में नहीं दी। उसके मुखिया जॉन पोप बनाए गए।

जुलाई में लिंकन ने क्लेलन के मुख्यालय का निरीक्षण किया। यह इसलिए भी हुआ कि उसकी सूचनाएँ कभी कहीं से पुष्ट नहीं हो रही थीं। वह लंबे समय से बता रहा था कि रिचमौंड में विद्रोहियों की संख्या दो लाख के करीब है। इसकी पुष्टि कहीं से नहीं हुई। लिंकन ने मालूम किया तो पता चला कि विद्रोहियों की संख्या इतनी नहीं है। मैक्लेन समझ गया कि लिंकन आएँ और उस पर सवाल दागे, इससे बेहतर है कि वही उनके सामने कुछ नए सवाल खड़े कर

@Digitallibrary84

दें। मुख्यालय लिंकन पहुँचे ही थे कि मैक्लेन ने उन्हें एक गोपनीय पत्र दिया। उसमें लिखा था कि संघ को ईसाई सभ्यता के सिद्धांतों के अनुसार लड़ाई लड़नी चाहिए। इतना ही नहीं, विद्रोहियों की संपत्ति राजसात नहीं की जानी चाहिए। संपूर्ण सेना के लिए एक सेना प्रमुख होना चाहिए। यह सब सुन-पढ़कर लिंकन लौटे, इस बार पहले की अपेक्षा ज्यादा दृढ़ और निश्चिंत। 11 जुलाई को उन्होंने हेनरी हैलेक को सेना का प्रमुख बना दिया। लिंकन ने हेनरी हैलेक से यह भी कहा कि यदि वे चाहें तो मैक्लेन को हटा भी सकते हैं। हैलेक का सोचना था कि यदि राष्ट्रपति चाहते हैं कि मैक्लेन को सेना के उच्च पद पर नहीं रखना चाहिए तो इसका फैसला उन्हें करना चाहिए। लिंकन समझ रहे थे कि जब तक तात्कालिक रुप में युद्ध में जीत हासिल नहीं होगी, दासप्रथा का कुछ समाधान नहीं हो सकता। इसलिए उनकी निगाह मनासाज में पोप की सैन्य टुकड़ी पर थी। उसकी मदद के लिए लिंकन ने मैक्लेन से कहा था; लेकिन मैक्लेन हैलेक की नियुक्ति के बाद कुंठित हो गया था, इसलिए भी उसने पोप की मदद नहीं की। इसे यों भी कह सकते हैं कि उसने एक बार फिर लिंकन के आदेश की अवहेलना की। नतीजा स्पष्ट था। पोप की सेना जीत नहीं पाई। ऐसा हो जाता तो रिचमौंड पर संघ का ध्वज फहरा उठता और बाजी लिंकन के हाथ आ जाती। मगर ऐसा नहीं हुआ। लिंकन ने सोचा कि ईश्वर युद्ध को पता नहीं किस कारण से लंबा चलाना चाहता है। उन्होंने मैक्लेन से कहा कि वह वाशिंगटन आकर यहाँ की सेना का कामकाज देखें। इस पर स्टेनटन उखड़ गए। उन्होंने कहा कि उस जैसे व्यक्ति को संघीय सेना की किसी भी टुकड़ी का प्रभारी नहीं बनाया जाना चाहिए।

@Digitallibrary84

लिंकन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

बहरहाल 17 सितंबर को संघीय सेना की जीत हुई और 22 सितंबर को लिंकन ने काबीना बैठक में अपनी घोषणा का प्रारुप प्रस्तुत किया। इसके तहत

1 जनवरी, 1863 से दक्षिणी राज्यों के सभी दास मुक्त माने जाएँगे। उन्होंने काबीना सदस्यों से यह भी कहा कि ऐसा होना पूरी तरह संभव नहीं है। इसलिए कि दक्षिणी राज्य अभी तक उनके नियंत्रण से बाहर हैं। इससे दिक्कतें और बढ़ गईं। रिपब्लिकन, डेमोक्रेट और सीमांत राज्यों के नेताओं में इसी मुद्दे पर एकता थी और वह बिखर गई। दक्षिण के संघ समर्थकों ने भी इसे 'धोखा' करार दिया।

सन् 1862 के अंत में गवर्नरों और संसद् के चुनावों में लिंकन की रिपब्लिकन पार्टी को जनता का गुस्सा झेलना पड़ा। अंतहीन दिखाई देता युद्ध जनता की पहली चिंता बन गया था। नागरिकों के मूल अधिकार कुचले जाने से रिपब्लिक

पार्टी को भारी नुकसान उठाना पड़ा। युद्ध का अपेक्षित परिणाम न आने और देश के सैनिकों के जान गँवाने की खबरों से लिंकन की लोकप्रियता का ग्राफ भी नीचे आ रहा था। मैक्लेन एवं लिंकन दोनों एक-दूसरे से खफा थे और एक-दूसरे पर शक करते थे। दोनों की नजर में दोनों की निष्ठाएँ संदिग्ध थीं। मैक्लेन ने अपने एक साथी पिंकर्टन को लिंकन के पास भेजा था, ताकि वह लिंकन के मन की थाह ले सके। मगर मैक्लेन अपने मंसूबों में कामयाब नहीं हो सका। उसने लिंकन को समझने में भूल की। लिंकन वाक् पटु थे। उन्होंनेबातों-बातों में पिंकर्टन से वह सब पूछ लिया, जो शायद मैक्लेन कभी न बताता।

इस बीच लिंकन के सामने एक जनरल का बयान आया। बयान युद्ध संबंधी था। लिंकन इससे नाराज हो गए और उन्होंने उसे तत्काल प्रभाव से बरखास्त कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि मैक्लेन भयभीत हो गया और उसने लिंकन की सार्वजनिक आलोचना करनी बंद कर दी। लिंकन ने भी पोटेमैक सेना के जरिए यह जान लिया कि उसमें मैक्लेन के वफादार भी हैं। कुछ समय और उसे चलाए रखने की गरज से उन्होंने एक बार फिर उसकी माँगें मान लीं। मगर इसके साथ ही उससे कहा कि वह विद्रोही ली की सेना का सामना करे। उसे याद दिलाया कि यह बात उसने ही अपने लिए निश्चित की थी। लेकिन मैक्लेन बहानेबाजी करने लगा। उसकी रुचि वक्त गुजारने में थी। उसने बहाना बनाया कि उसकी सेना थकी हुई है और सेना के पास रसद आपूर्ति भी कम है। उसके इस बहाने के बाद पोटेमैक की बड़ी सेना एक माह तक बिना कुछ किए वहाँ पड़ी रही। इसके विपरीत विद्रोही मैरीलैंड और पेनसेलविया में घुस गए।

अब तक लिंकन सैनिक गतिविधियों, उसके संचालन और प्रशासन के अभ्यस्त हो गए थे। इसी समय तीन गवर्नरों की शिकायत पर उन्होंने एक और जनरल बुल को बरखास्त कर दिया। उसकी जगह रोजक्रेंस को जिम्मेदारी दे दी गई। मगर मैक्लेन को समझ न आनी थी, न आई। उसने फिर ली की सेना से सीधे संघर्ष को टालने के लिए बहाना बनाया कि अभी हमला करना संभव नहीं है, इसलिए कि उसके घोड़े थके हुए हैं, उनकी हड्डियाँ निकल आई हैं। उसकी यह दलील अंतिम थी। इसके बाद 5 नवंबर को उसे बरखास्त कर दिया गया और उसकी जगह बर्नसाइड को पोटेमैक सेना का प्रमुख बना दिया गया। लिंकन को अब बुल और क्लेलन से मुक्ति मिल गई। उन्हें लगा कि वे दूसरी समस्याओं पर भी ध्यान केंद्रित कर सकेंगे। वैसे भी विकास, ढाँचागत विकास उनके जेहन में लगातार घूमता रहता था। लिंकन का मानना था कि कोई भी देश अपनी सामाजिक विपन्नताओं, भेदों पर काबू कर जब तक आर्थिक रूप से समुन्नत नहीं होता तब तक दुनिया के नक्शे पर उसका वजूद नहीं बनता। वे सोच रहे थे कि सबकुछ ठीक-ठीक चलता रहेगा तो व्यवस्था अपने आप बन जाएगी; मगर ऐसा हुआ नहीं। अक्तूबर में मिसीसिपी नदी के उत्तर-पश्चिम में बसे राज्य

@Digitallibrary84

मिनेसोटा में रेड इंडियनों का विद्रोह भड़क उठा। उन लोगों को जमीन के बदले सालाना मुआवजे की रकम सरकार से मिलती थी। सरकार का प्रतिनिधित्व नौकरशाह ही करते थे। उन लोगों ने रकम अदायगी में इतनी देरी कर दी कि जनजातीय लोग भुखमरी के कगार पर पहुँच गए। इससे आहत और क्षुब्ध होकर आदिवासियों ने अंडे के गोदाम पर धावा बोला, उसे लूटा और पाँच श्वेतों को मार डाला। समस्या दो खेमों में बँट गई। रेड इंडियन मान रहे थे कि गोरे उनका शोषण कर रहे हैं। इतना ही नहीं, उनकी नारकीय स्थिति के लिए गोरे ही जिम्मेदार हैं। गोरों के विरोध में विद्रोह भड़क गया। भूख और शोषण की आग में जलते आदिवासियों ने गोरों को मारना शुरू किया। पूरे मिनेसोटा राज्य में गोरों के लिए कोई जगह सुरक्षित नहीं रह गई। गुस्से और बदले की आग में 350 गोरे मार डाले गए। अमेरिका के इतिहास में इतने गोरों का कत्ल कभी नहीं हुआ था। वाशिंगटन से पोप को इस काम के लिए नियुक्त किया गया। वे नौकरशाहों के साथ मिलकर इस जनजाति को सबक सिखाने के मूड में थे। लिंकन इस बात को भाँप गए। उन्होंने आदेश दिया कि एक भी विद्रोही को उनकी जानकारी के बिना मौत की सजा न दी जाए। 8 नवंबर को सेना ने लिंकन को उन आदिवासियों की सूची सौंपी, जिन्हें वह मौत की सजा सुना चुकी है। लिंकन ने हर व्यक्ति के बारे में विस्तार से जानकारी चाही कि आखिर उस पर किस तरह के आक्षेप हैं। इस बीच पोप, गवर्नर और सीनेटर को लगा कि लिंकन कुछ ज्यादा ही दरियादिली दिखा रहे हैं। उन्होंने अपने पत्र में लिंकन को लिखा कि आदिवासियों के हमले से गोरे बहुत नाराज हैं। यदि समुचित कारवाई न की गई तो वे पूरी जनजाति को ही मौत के घाट उतार देंगे। बावजूद इसके लिंकन ने सारे मामले को विस्तार से सुना और महज 39 लोगों को मृत्युदंड दिया गया। यह भी अमरीकी इतिहास की पहली बड़ी घटना है, जिसमें सामूहिक रुप से इतने लोगों को मृत्युदंड दिया गया।

1 दिसंबर, 1862 को लिंकन ने अपने वार्षिक संदेश में दासप्रथा के लिए तीन संशोधन पेश किए। कहा गया कि जो राज्य 1 जनवरी, 1900 तक अपने राज्य से दासप्रथा उन्मूलन का वादा करते हैं, उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका के ब्रांड दिए जाएँ और गुलामों की मुक्ति को स्थायी बनाए जाने के प्रबंध किए जाएँ। यह काम उनके परिजनों को मुआवजा देकर किया जाए, बशर्ते उन्होंने पृथकतावादियों का साथ न दिया हो। तीसरा और अंतिम संशोधन यह था कि मुक्त हुए काले दासों को यदि उनकी इच्छा हो तो अमरीका से बाहर बसाने के लिए खर्च की व्यवस्था कांग्रेस करे। हालाँकि इन तीनों के तत्काल कांग्रेस से पारित होने की संभावना नहीं थी।

इस बीच 13 दिसंबर को बर्नसाइड ने संघीय सेना की टुकड़ी को मैरी की पहाड़ियों पर पृथकतावादियों से पिटवा दिया। उन्हें लिंकन ने कहा भी था कि

@Digitallibrary84

वे इस रास्ते न जाएँ, मगर वे नहीं माने। सुबह और शाम में संघीय सेना के पाँव उखड़ गए। इसलिए भी कि पृथकतावाद वहाँ पहले से बैठे इंतजार कर रहे थे। बर्नसाइड को पता न था कि अचानक हमला हो सकता है। अमरीकी सेना की इसे सबसे बड़ी हार कहा जाता है। 'शिकागो ट्रिब्यून' ने टिप्पणी की कि सैन्य असफलता, करों का बोझ, मुद्रास्फीति, कपास की कमी, बढ़ते कर्ज, सफलता के सूरज का दूर तक पता न होना, मिसीसिपी नदी का बंद रहना—इस सबसे सिर्फ एक स्थिति बनती है, वह है गहरी निराशा और घटाटोप अंधकार। स्वाभाविक रूप से यह लिंकन और उनकी काबीना की असफलता का संकेत था। इससे खीझकर सेवर्ड ने अपना त्यागपत्र दे दिया। दो ही दिन बाद सेवर्ड के विरोधी चेज ने भी अपना इस्तीफा लिंकन को भेज दिया। लिंकन ने दोनों के इस्तीफे नामंजूर कर दिए। उन्होंने कहा कि वे बचपन में दो बड़े कद्दू अपने घोड़े पर लादकर ले जाते थे, ताकि दोनों तरफ वजन बराबर रहे और वे घोड़े की सवारी आराम से कर सकें। यही उन्होंने काबीना के लिए भी किया। दो धुर विरोधियों को उसमें जगह दी। इसलिए नहीं कि वे अपने विचार लिंकन पर थोपते रहें, बल्कि इसलिए कि वे लिंकन प्रशासन को बेहतर तरीके से चलाने में उनकी मदद करते रहें।

लिंकन अपने में संशोधन और समायोजन करने में भी कुशल थे। यूँ तो वे कार्य को तत्परता से निबटाने में अनौपचारिक होने में कतई संकोच नहीं करते थे, लेकिन इन सारी घटनाओं के बाद उन्होंने अपनी कार्यशैली में औपचारिकता की जगह तय कर दी। औपचारिक प्रतिवेदन और चर्चाओं के जरिए उन्होंने लोकतंत्र को और मजबूत करने की दिशा में भी साथ-साथ अनेक कदम उठाए।

उनका विश्वास था कि यदि वे संघ को किसी भी तरह बचा लेते हैं और दासप्रथा को फैलने से रोक भी लेते हैं तो समय के अंतराल के साथ दासप्रथा अपने आप खत्म हो जाएगी। लेकिन यदि संघीय अस्तित्व पर आँच आती है तो शताब्दियों तक कुछ नहीं हो सकेगा। लिंकन का विवाह सीमांत राज्य के ऐसे परिवार में हुआ था, जहाँ क्रीत दास थे। उनकी पत्नी मैरी लिंकन को अपने पिता के घर से संपत्ति समायोजन में मिला एक बड़ा अंश दासों के बेचने से ही मिला था। लिंकन के सबसे अच्छे दोस्त जोशुआ स्पीड के घर में पीढ़ी-दर-पीढ़ी दास रखे जाते थे। इसलिए ऐसा नहीं कि लिंकन दक्षिण के लोगों की मनःस्थिति को समझते नहीं थे या उनके तर्क उनकी समझ में नहीं आते थे। लिंकन हालातों से निराश जरूर थे, लेकिन उनकी कटिबद्धता में कभी कोई कमी नहीं आई। उन्होंने कहा था, "जहाँ तक संभव होगा, मैं इस सरकार को बचाऊँगा। और यह बात बिलकुल साफ तरीके से हमेशा के लिए समझ ली जानी चाहिए कि मैं तब तक समर्पण नहीं करूँगा जब तक कि एक भी विकल्प शेष बचा है। मेरा विश्वास

@Digitallibrary84

है कि अब दासों को मुक्त करना और काले लोगों को सेना में रखना सेना की आवश्यकता बन गई है।"

इस बीच नेपोलियन (तृतीय) दक्षिण की भरसक मदद करने की सोचने लगा। उसे लग रहा था कि यदि सम्मिलित सेना जीतती है तो वह उसके साम्राज्य की पक्षधर होगी, लेकिन यदि विभिन्न स्वतंत्र राज्यों का संघ इस लड़ाई में बाजी मार लेता है तो मेक्सिको से फ्रांसीसी तत्काल हटा दिए जाएँगे। दूसरी बात यह भी थी कि वह दक्षिण के कपास क्षेत्र पर नजर रखता था। दक्षिणी राज्यों ने नेपोलियन तृतीय को प्रस्ताव भी दिया कि यदि वह अमरीकी संघ की रोक को हटवा देगा तो वे उसे 1 करोड़ 20 लाख डॉलर की कपास दे देंगे। वे युद्ध की वजह से हलकान थे। वे न तो अपना कपास बेच पा रहे थे, न बंदूक खरीद पा रहे थे और न कोई अन्य हथियार। हालत इतनी खराब हो गई थी कि संचार साधन भी ठप हो रहे थे। ऐसे में नेपोलियन ने सन् 1863 की शुरुआत में लिंकन प्रशासन को प्रस्ताव दिया था कि संयुक्त राज्य और सम्मिलित राज्य के प्रतिनिधि किसी तटस्थ स्थान पर बैठकर मामले का शांतिपूर्ण समाधान करने का प्रयास करें। लिंकन ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। फिर भी, नेपोलियन रूस और इंग्लैंड को सहमत करने में लगा रहा कि सभी मिलकर सम्मिलित राज्यों को मान्यता दे दें। उनकी रुचि अमरीका के विभाजन में थी। वे उसकी एकता से जलते थे। कपास इंग्लैंड की भी एक भौतिक जरूरत थी। कपास की खेप के इंग्लैंड न पहुँचने से त्राहि-त्राहि मच गई। अनेक फैक्टरियाँ बंद हो गईं। लाखों बेरोजगार हो गए। बच्चों के लिए भोजन जुटाना मुश्किल हो गया। इस सबका मात्र एक ही हल था कि संघीय सरकार की रोक को खत्म करवाया जाए। मगर यदि ऐसा हो जाता तो अमरीका में क्या होता? दक्षिणी राज्यों को बंदूकें मिल जातीं। उनके शस्त्रों का भंडार बढ़ जाता। इस सबके अलावा उनके आत्मविश्वास में जबरदस्त बढ़ोतरी हो जाती। और उत्तरी राज्यों को स्थायी दुश्मन मिलते। इससे स्थिति आज तो बिगड़ती ही, भविष्य में भी उसके सुधरने के आसार न होते। लिंकन इस अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में अमरीका पर बढ़ते दबाव और इसकी उत्तरवर्ती अनुक्रियाओं अर्थात् बाद के परिणामों के बारे में ठीक-ठीक समझते थे। इसलिए वे कहते थे कि हमें अपनी नीतियों में बदलाव करना होगा, वरना हम हमेशा के लिए काफी कुछ खो देंगे। लिंकन देख रहे थे कि युद्ध के बारे में यूरोप का नजरिया बदलना चाहिए और वे जानते थे कि यह कैसे होगा। यूरोप में करीब 10 लाख लोगों ने 'अंकल टाम्स केबिन' पढ़ी थी और वे दासप्रथा की बुराइयों पर अँसुआ चुके थे। लिंकन जानते थे कि यदि वे अपनी मुक्ति की घोषणा कर देते हैं तो युद्ध को यूरोप दूसरे परिप्रेक्ष्य में देखने लगेगा। ऐसे में कोई भी यूरोपीय हुकूमत दक्षिण को मान्यता देने के बारे में सोच भी नहीं

@Digitallibrary84

सकेगी। जुलाई 1862 में लिंकन ने तय किया कि वे मुक्ति की घोषणा करेंगे; लेकिन मैक्लेन और पोप ने उन्हें लज्जित करवा दिया।

सेवर्ड की सलाह का लिंकन पर असर हुआ। वे सहमत हो गए कि विजय की दुंदुभी के साथ इस आशय की घोषणा का खुले दिल से स्वागत होगा। इसके बाद लिंकन ने अपनी काबीना की बैठक बुलाई और उसमें स्वतंत्रता की घोषणा के बाद से अब तक के सबसे प्रसिद्ध दस्तावेज पर विचार किया। यह वही मुक्ति की घोषणा थी। इस बीच लिंकन ने ब्रिटेन और फ्रांस को अमरीकी युद्ध की हकीकत से अवगत कराने के लिए एक गैर-सरकारी प्रतिनिधिमंडल भेजा। इसमें सभी जमात के लोग थे—अर्थात् बड़े व्यापारी, राजनेता और धर्मोपदेशक। उसके अलावा लिंकन ने इन देशों में ऐसी बैठकें भी आहूत करवाईं, जिनमें लिंकन सरकार को युद्ध में समर्थन देने की जरूरत और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दासप्रथा एक लांछन है, इन बातों पर गौर किया गया। इसके अपेक्षित नतीजे भी आए। मगर दूसरी तरफ डेमोक्रेट शांत नहीं बैठे थे। उसके सीनेटरों ने दिसंबर में माँग की कि सभी राजनीतिक बंदियों को छोड़ दिया जाना चाहिए। वे विद्रोहियों को राजनीतिक बंदियों की श्रेणी में रख रहे थे। उन्होंने संघ को युद्ध के जरिए बचाने को अत्यंत घातक फैसला निरूपित करते हुए कहा कि यह लिंकन की सबसे बड़ी असफलता है। उन्होंने फ्रांस की मध्यस्थता में कोई सर्वस्वीकार्य हल खोजने की बात भी कही। स्वाभाविक रूप से रिपब्लिकन इससे सहमत नहीं थे। युद्ध जारी था और उसमें स्वैच्छिक स्वयंसेवकों की कमी न आने पाए, इसलिए राष्ट्रपति ने अनिवार्य भरती अध्यादेश जारी कर दिया। इसका एक लाभ यह हुआ कि संख्या बल बढ़ा; लेकिन खेती पर विपरीत असर पड़ा। दक्षिणी राज्यों के दासों को मुक्त करने की लिंकन की घोषणा से उत्तरी राज्यों में भय बैठ गया कि सारे दास इन्हीं राज्यों में आ जाएँगे—अर्थात् यह क्षेत्र अफ्रीकियों से पट जाएगा। नतीजतन, नस्लवाद को लेकर फिर लोग सड़कों पर आ गए। आम राय यह थी कि अमरीकी संघ की एकता युद्ध से नहीं लाई जा सकती। लोग कहते थे कि इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ कि राष्ट्र-राज्य की एकता युद्ध के बाद हासिल हुई हो। ये सभी लोग जल्दी-से-जल्दी युद्ध-विराम की माँग कर रहे थे। इलिनॉय और इंडियाना में तो गवर्नरों को विधानसभा की अनदेखी कर प्रशासन अपने हाथ में लेना पड़ा, जैसा कि आजकल एक विशेष अध्यादेश के बाद हो सकता है।

लिंकन ने पश्चिम के असंतोष को दबाने के उद्देश्य से बर्नसाइड को वहाँ भेजा। बर्नसाइड ने वहाँ पहुँचते ही एक आदेश जारी किया कि जो भी देश के दुश्मनों को किसी भी तरह की मदद पहुँचा, उसे गिरफ्तार कर लिया जाए। उसके साथ एक गद्दार की तरह का व्यवहार किया जाए। एक डेमोक्रेट वेलेंडिगम ने इसका विरोध करते हुए बर्नसाइड को अधिनायकवादी करार दिया। उन्होंने राष्ट्रपति

@Digitallibrary84

लिंकन को 'सम्राट् लिंकन' कहा, जो कालों की आजादी के लिए युद्ध लड़ रहे हैं। लेकिन बर्नसाइड ने वेलेंडिगम को गिरफ्तार कर लिया। लिंकन प्रत्यक्ष रूप में बर्नसाइड से कुछ नहीं कह सके, क्योंकि वे अपने आदेश की प्रतिलिपि राष्ट्रपति को भेज चुके थे। इधर वेलेंडिगम की गिरफ्तारी से उफान आ गया। लोगों ने कहा कि इससे हमारी बोलने की आजादी, संविधान, देश सबकुछ समाप्त हो गया। जनमत के विरोध के आगे लिंकन को झुकना पड़ा और उन्होंने वेलेंडिगम की सजा माफ कर दी तथा उन्हें सम्मिलित राज्य क्षेत्र में भिजवा दिया।

आपसी गुटबाजी के बावजूद संसद् में सन् 1862-63 के अधिवेशन में रिपब्लिकन पार्टी जरूरी कानूनों को पारित करवाने में कामयाब रही। इनमें शामिल था—

- ❑ केंद्र को यह अधिकार होगा कि वह सभी सक्षम पुरुषों को, जिनकी आयु 20 से 25 वर्ष है, को सेना में भरती के लिए बुला सकता है।
- ❑ देश में राष्ट्रीय बैंकिंग कानून के जरिए राष्ट्रीय मुद्रा चलाने का फैसला। इसके साथ ही राष्ट्रीय बैंकों के निर्माण की अनुमति।

लिंकन का स्वाध्याय किसी भी परिस्थिति में कभी बंद नहीं हुआ। वे जब भी कोई व्यंग्यात्मक अथवा कोई दिल को छू लेनेवाली कहानी पढ़ते तो उसे किसी-न-किसी को जरूर सुनाते। वे ऑटमस वार्ड की पुस्तक को सोते समय पढ़ते और यदि कोई मजाकिया बात उन्हें गुदगुदाती तो फिर वे सोते नहीं, टहलकर जोर-जोर से पढ़ने लगते चाहे रात कितनी भी गहरा गई हो। इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि मुक्ति की घोषणा के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए काबीना की बैठक बुलाई गई थी। उससे पहली रात लिंकन कुछ पढ़ चुके थे। एजेंडा शुरु होने से पहले उन्होंने रात के अध्ययन की बात पहले सुनाई, फिर काररवाई शुरु हुई। लिंकन काबीना बैठक में अपने साथ पढ़ी हुई पुस्तक भी ले गए थे। जब उन्होंने पूरा वाकया बयान कर लिया और वे उस पर हँस लिये तब उन्होंने पुस्तक को एक ओर रखा और बोलना शुरु किया—"जब विद्रोही सेना फ्रेडरिक पर थी, मैंने तभी निश्चय कर लिया था कि मैरीलैंड से इन्हें खदेड़ देने पर मुक्ति की घोषणा जारी की जाएगी। इस बारे में मैंने किसी से कुछ नहीं कहा था, लेकिन मैंने अपने आपसे और ईश्वर से, स्रष्टा से इस बारे में प्रतिज्ञा की थी। आज विद्रोही सेना खदेड़ दी गई है और मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूरी कर रहा हूँ। मैंने आप सभी को इसलिए बुलाया है कि आपको बता सकूँ कि मैंने इसमें क्या लिखा

@Digitallibrary84

है। यदि आप में से कोई भी यह समझता है कि इसमें कतिपय संशोधन किया जाना है तो मैं किसी के भी सुझाव का सहर्ष स्वागत करता हूँ।"

किसी ने कोई सुझाव नहीं दिया, मगर सेवर्ड ने उठकर एक संशोधन सुझाया, जिसे तुरंत मान लिया गया। कुछ देर रुककर उन्होंने फिर एक सुझाव दिया। उसे भी मान लिया गया। लिंकन ने उनसे पूछा कि तुमने एक साथ दोनों सुझाव क्यों नहीं दिए? उन्होंने कहा, "ऐसा हुआ कि इंडियाना में एक आदमी एक किसान के पास काम करता था। उसने किसान को एक दिन कहा—बैल मर गया। किसान चकित होकर उसके मुँह की ओर देखता रह गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि बैल इतनी जल्दी मर सकता है। थोड़ी देर बाद उसने कहा कि उसका जोड़ीदार दूसरा बैल भी मर गया। किसान को थोड़ा गुस्सा आया कि तूने एक साथ ही क्यों नहीं बता दिया कि दोनों बैल मर गए। उसने कहा—हुजूर, मैं आपको एक साथ इतना सारा कष्ट नहीं देना चाहता था।"

पारिवारिक दायित्व

लिंकन अपने दैनिक कामकाज के अलावा बच्चों को शिक्षा और उनके शिक्षकों में भी गहरी दिलचस्पी रखते थे। वे एक अर्थ में सरोकारी पिता भी थे। एक अवसर पर उन्होंने अपने बेटे के शिक्षक को चिट्ठी लिखी—

सीखना होगा उसे जानता हूँ मैं

कि सब लोग नहीं होते सही

नहीं बोलते सच सभी,

लेकिन उसे यह भी सिखाना कि हर बदमाश के

मुकाबले एक हीरो भी होता है

हर खुदगर्ज सत्ताधारी से टक्कर

लेने एक सच्चा नेता भी होता है

हर दुश्मन के साथ कहीं एक दोस्त भी होता है।

रखना उसे दूर ईर्ष्या से हो सके तो

और सिखाना उसे राज मन-ही-मन मुसकराने का

@Digitallibrary84

सीखने दो उसे शुरू से ही

कि शैतानों से निपटना नहीं होता मुश्किल

और दिखाओ, अगर दिखा सको

किताबों की रंग-बिरंगी दुनिया;

लेकिन कुछ पल हों अकेले

उसके अपने

कि वह जाने आकाश में उड़ते पंछियों का राज

धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ

और हरे-भरे पहाड़ों पर खिलनेवाले फूल

सिखाना उसे स्कूल में

कई गुना अच्छी है नाकामयाबी झूठी जीत से

सिखाना उसे विश्वास करना खुद पर

बेशक बताते रहें लोग उसे गलत

सिखाना उसे सीधापन सीधे-सादे लोगों से

कोशिश करना मेरे बेटे को मजबूती देने की

न घसीटे वह खुद को भीड़ के साथ

देखा-देखी में लोगों की

सिखाना उसे सुने सबकी और

सुनकर पाए दूध-का-दूध

और पानी-का-पानी

देखना, अगर सिखा सको

मुसकराना उदासी में भी

और यह भी कि आँसू

@Digitallibrary84

बहाने में शर्म कैसी

सिखाना उसे हताश-निराश

लोगों से दूर रहना

और मीठी-मीठी बातों से बचना।

कहना कि बेच दे बेशक तन-मन की शक्ल

लेकिन उसका दिल और आत्मा कभी न खरीद पाए कोई

उसे सिखाना, रहें कान बंद

चीखते-चिल्लाते झुंड के सामने

और कह पाना अपनी बात

खड़े होकर उसके बीच

प्यार जरूर देना उसे लेकिन बिगाड़ना नहीं

क्योंकि आग से तपकर ही निकलता है फौलाद

देना उसे हिम्मत कि हो सके बेसब्र कभी,

लेकिन सब्र कर सके बहादुरी के लिए भी।

सिखाना उसे अटल विश्वास

अपने आप पर

जो फिर देगा विश्वास

दुनियावालों पर

यह फेहरिस्त लंबी है

लेकिन जो भी संभव है—

क्योंकि वह बहुत प्यारा है

वह—मेरा बेटा।

—लिंकन

@Digitallibrary84

लिंकन ने अपनी घोषणा कैबिनेट को सितंबर 1862 को सौंपी, लेकिन वह

1 जनवरी, 1863 से ही प्रभाव में आई। अपनी बात के समर्थन में लिखते हुए लिंकन अचेतन रूप से ही काव्यात्मक प्रभाव छोड़ गए थे।

उन्होंने लिखा था—

हम शिष्टता से बचा लें या

क्षुद्रता से वंचित हो जाएँ

धरती की अंतिम सर्वश्रेष्ठ

उम्मीद!!

दासों की मुक्ति का रास्ता साफ

सन् 1863 के नववर्ष पर ह्वाइट हाउस पहुँचनेवाले सभी लोगों से लिंकन ने आत्मीयता से हाथ मिलाए। अपराह्न में वे अपने दफ्तर चले गए, ताकि उस घोषणा पर हस्ताक्षर कर सकें। दस्तखत करने से पहले वे सेवर्ड की तरफ मुखातिब हुए और बोले, "यदि दासप्रथा गलत नहीं है तो दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है। मैं अपने जीवन में इतना निश्चित कभी नहीं रहा जितना आज हूँ कि मैं जो भी करने जा रहा हूँ, वह सही है। मगर मैं सुबह नौ बजे से लोगों से हाथ मिला रहा हूँ। अब तो मेरे बाजू में दर्द हो रहा है। ऐसे में कोई मुझे ध्यान से देख रहा हो। हस्ताक्षर करते हुए मेरे हाथ काँप रहे हैं तो वह सोचेगा कि इसके मन में कहीं कोई पश्चात्ताप होगा।" कुछ समय हाथ को विश्राम देकर उन्होंने हस्ताक्षर कर दिए और इसके साथ ही 35 लाख दासों के लिए मुक्ति के द्वार खोल दिए।

सन् 1864 के मार्च तक पृथकतावादियों पर हमले की सुविचारित योजना तैयार हो गई। दो वर्ष के युद्ध संचालन ने लिंकन को सैन्य जानकारियों में निपुण बना दिया। लिंकन ने वाशिंगटन के पास स्थित पोटेमैक सेना पर नजर रखी। अप्रैल की शुरुआत में पोटेमैक सेना प्रमुख हूकर के निमंत्रण पर लिंकन अपनी पत्नी मैरी लिंकन और छोटे बेटे टैड के साथ सेना के उत्तरी वर्जीनिया स्थित मुख्यालय पहुँचे। वहाँ टैड ने टट्टू की सवारी की। लिंकन वहाँ तीन दिन रुके और करीब 60 हजार सैनिकों से मिले। सैनिक छावनी के निरीक्षण से लिंकन में आत्मविश्वास आ गया। उन्हें लगा कि चमचमाते अस्त्र-शस्त्रों से लैस यह सेना किसी भी दुश्मन के छक्के छुड़ाने में समर्थ है। लौटने पर लिंकन से लोगों ने पूछा कि इस बार की तैयारी कैसी है? इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा कि तैयारी प्रमाण देने को तैयार है, फिर भी वे किसी भी स्थिति से निपटने के लिए अपने मन-मस्तिष्क को तैयार कर चुके हैं। लौटते समय उन्होंने सैनिकों से अपील की कि

@Digitallibrary84

एक साथ एकबारगी समूची ताकत झोंक दें, ताकि परिणाम हमारे पक्ष में हो। अलग-अलग ताकत इस्तेमाल करने से नतीजे अच्छे आने में संदेह रह जाता है।

7 अप्रैल को पता चला कि उनकी नौसेना की एक इकाई ने समटर के किले पर धावा बोल दिया है। इसमें पाँच बड़े जहाज क्षतिग्रस्त हुए। गृहयुद्ध का यह सबसे बड़ा नौसैनिक अभियान था, जो असफल रहा। दूसरी तरफ 28 अप्रैल, 1863 को हूकर ली पर चढ़ाई करने निकला। उसके पास 70 हजार सैनिक थे। मगर उसने लिंकन की सलाह को दरकिनार करते हुए एक साथ अपनी ताकत नहीं लगाई। ली के जाँबाज जबरदस्त लड़े और हूकर हाँफ गए। रिचमौंड पर कब्जा करने का उनका सपना ध्वस्त हो गया। लिंकन इससे बहुत आहत हुए, मगर वे इसमें लगे थे कि आखिर हार की जिम्मेदारी किसकी है। वे 6 मई को मुख्य सेनाध्यक्ष के साथ एक बार फिर वर्जीनिया के मुख्यालय पहुँचे। वहाँ लिंकन को यह देखकर भला लगा कि सैनिकों का हौसला बरकरार है। सिर्फ हूकर अपनी गलती मानने को राजी नहीं थे। इसी बीच खबर आई कि ली की फौज उत्तर की ओर बढ़ रही है। दूसरी ओर लिंकन-विरोधियों ने झूठी खबर फैला दी कि लिंकन अपनी काबीना के कुछेक साथियों को लेकर पलायन करना चाह रहे हैं।

इस बीच लिंकन एक बात समझ गए कि अपनी निष्पत्तियों से सिर्फ स्वयं का राजी रहना ही पर्याप्त नहीं है। जब तक इन निष्पत्तियों पर जनता अपनी सहमति की मुहर नहीं लगाती, तब तक सब व्यर्थ है। ऐसी हालत में सिर्फ इरादतन इतिहास के पक्षधर लोग विजयी होते जाएँगे, क्योंकि उनका आधार सिर्फ अफवाहें होती हैं। इसलिए वे सोचने लगे कि कुछ-न-कुछ ऐसा किया जाना चाहिए, जिससे जनता मानसिक रूप से उनके कार्यों की सराहना करने लगे और उसका ध्यान ऐसी फिजूल की अफवाहों पर न जाए। इसमें दिक्कत यह थी कि अमरीका की राजनयिक परंपरा के अनुसार राष्ट्रपति न तो राजधानी से बाहर जाते थे और न जनसभाएँ संबोधित करते थे। इतना ही नहीं, वे कांग्रेस में अपना संदेश भी स्वयं नहीं पढ़ते थे, बल्कि दूसरों से पढ़वाते थे। लिंकन को भी इसका पालन करना होता था। वे करते भी थे। मगर वे ह्वाइट हाउस में जनता दरबार लगाकर लोगों से मिलते अवश्य थे। लिंकन ने सोचा कि वे अपनी नई नीतियों के बारे में जनता को सीधे संबोधित करेंगे। उन्होंने विस्तार से पूरा विवरण लिखा। उसमें विस्तार से विश्लेषित किया गया कि उन्होंने ये कदम क्यों उठाए हैं। 12 जून, 1863 को उन्होंने इस पत्र को सभी रिपब्लिकन सदस्यों और अखबारों को भेज दिया। उन्होंने लिखा कि देश इस समय अत्यंत नाजुक दौर से गुजर रहा है। जब भी कोई देश नाजुक स्थिति में हो तो नागरिक अधिकारों की चिंता और परवाह किए बिना उनकी बलि चढ़ाई जा सकती है।

@Digitallibrary84

लिंकन के इस पत्र को करीब एक करोड़ लोगों ने पढ़ा और उनकी अनुक्रिया लिंकन की अपेक्षानुरुप थी। इससे उत्साहित होकर आगे भी लिंकन ने इस प्रक्रिया को बनाए रखा। इसका यथोचित लाभ भी उन्हें मिला।

उधर, युद्ध में ली की सेना पोटोमेक नदी के साथ उत्तर में बढ़ रही थी। नियमानुसार हूकर को इस बार ली से भिड़ना था। मगर लिंकन से उनके मतभेद बढ़ गए थे। उन्होंने सोचा कि यह अच्छा मौका है। यदि लिंकन पर दबाव बढ़ाया गया तो वे परेशान हो जाएँगे और उनकी शर्तें मानने के लिए विवश। यह सोचकर उन्होंने अपना इस्तीफा लिंकन को भेज दिया। एक तरफ ली की पृथकतावादी सेना और दूसरी तरफ संघीय सेना के जनरल का इस्तीफा। लिंकन ने एक बार फिर विषम परिस्थितियों में भी अपने सबल मानसिक संतुलन का परिचय दिया और हूकर का त्यागपत्र स्वीकार कर मीड को पोटोमेक की कमान सौंप दी। मीड सीधे हेलेक को रिपोर्ट करते थे। दूसरे छोर पर मिसीसिपी नदी पर ग्रांट तैनात थे। लिंकन ने उनके काम में भी कभी दखल नहीं दिया। उन्हें पूरी छूट थी कि वे अपने विवेकानुसार काम करें। नतीजा यह हुआ कि विक्सबर्ग में जहाँ सम्मिलित सेना यानी पृथकतावादी सेना बड़ी ताकत में थी, वहाँ ग्रांट ने उन्हें हर जगह पराजित कर दिया। इतना ही नहीं, पूरे विक्सबर्ग को चारों तरफ से घेर लिया। और यह घेराव कुछ घंटे और दिन का ही नहीं, महीने भर से ज्यादा का था। इस बीच अखबार अपनी निजी प्रतिबद्धताओं के अनुसार खबरें प्रकाशित कर रहे थे। दक्षिण समर्थित समाचार-पत्र युद्ध की एकांगी और मनगढ़ंत खबरें भी छापते रहते थे। इससे लिंकन बेहद व्यथित होते।

@Digitallibrary84

ली सेना की हार

4 जुलाई, 1863 को खबर आई कि पेनसिल्वेनिया के गेट्सबर्ग में ली की सेना हार गई है। लिंकन ने प्रेस वक्तव्य जारी कर कहा कि यह संघीय स्थायित्व की दिशा में एक बड़ी सफलता है। आज के दिन हमें ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए। इसके ठीक तीन दिन बाद विक्सबर्ग पर भी संघीय सेना ने अपना परचम लहरा दिया। इतना ही नहीं, ली के 30 हजार सैनिकों ने समर्पण भी कर दिया। इसके साथ ही पूरा मिसीसिपी राज्य संघीय सेना के कब्जे में आ गया। दूसरी तरफ ली पोटोमेक सेना और पोटोमेक नदी के बीच अपने कुछ सैनिकों के साथ फँस गया था। अगर मीड ने तत्परता से हमला कर दिया होता तो संपूर्ण युद्ध जीत लिया होता। मीड की जरा सी लापरवाही के चलते ली छुपते-छुपाते वर्जीनिया भाग गया। वैसे मीड ने बाद में लिंकन को सूचित किया कि एक युद्ध लड़ने के बाद उसके कई साथी घायल हो गए थे और किसी भी स्थिति में एक

और युद्ध लड़ना संभव नहीं था। इस पर लिंकन ने उन्हें अगली तैयारी के लिए सजग रहने की प्रेरणा दी।

लिंकन के विरुद्ध षड्यंत्र

षड्यंत्रकारी लिंकन के खिलाफ कभी शांत नहीं बैठे। वे किसी-न-किसी बहाने लिंकन को नीचा दिखाने, उनके खिलाफ दुष्प्रचार करने से बाज नहीं आते थे। इरादतन खबरें भी ऐसे ही लोगों की देन थीं। उन्हीं में से किसी ने राष्ट्रपति को शारीरिक चोट पहुँचाने की नीयत से उनकी बग्घी के बोल्ट ढीले कर दिए थे या निकाल दिए थे। मगर 2 जुलाई को उनकी जगह मैरी लिंकन उसमें बैठ गईं और ह्वाइट हाउस लौटते समय उससे गिर गईं। इसकी जाँच चल ही रही थी कि सेना में अनिवार्य भरती के विरुद्ध न्यूयॉर्क में दंगे शुरू हो गए। इसमें करीब 100 लोगों की जाने चली गईं। दंगों पर काबू पाने के लिए और स्थिति सामान्य करने के लिए सेना की मदद लेनी पड़ी थी। इस पर न्यूयॉर्क के गवर्नर भड़क उठे। उन्होंने लिंकन को कहा कि अनिवार्य भरती का नियम शिथिल करना चाहिए। गवर्नर सिमौर ने तो यहाँ तक कहा कि यह असंवैधानिक है। इस पर लिंकन ने उन्हें उनकी ही भाषा में उत्तर दे दिया, यदि उन्हें लगता है कि फैसला संविधान की परिधि में नहीं लिया गया है तो बेहतर है वे सुप्रीम कोर्ट का द्वार खटखटाएँ। उन्होंने अपना फैसला नहीं बदला। 14 अगस्त, 1863 को अनिवार्य भरती फिर से शुरू हो गई।

प्रांतीय गवर्नरों के चुनाव

सन् 1863 में उत्तरी राज्यों में प्रांतीय गवर्नरों के चुनाव होने थे। लिंकन की मंशा इस बार नहीं थी कि इस चुनाव में दलीय आधार पर उनकी विजय हो, बल्कि वे चाहते थे कि पार्टी लाइन से इतर भी यदि लोग जीतते हैं तो भी हर्ज नहीं है, बशर्ते वे सभी युद्ध समर्थक हों। उनकी सुविधा यह भी थी कि राष्ट्रपति होने के नाते वे चुनाव सभाओं में सीधे शिरकत नहीं कर सकते थे। वे एक साथ दो बातों पर विचार कर रहे थे—पहला, चुनाव और दूसरा यह कि युद्ध को अंतिम स्थिति तक पहुँचाकर संयुक्त राज्य अमरीका की एकता को सुनिश्चित किया जाए।

3 सितंबर, 1863 को स्प्रिंगफील्ड में लिंकन को एक सभा को संबोधित करना था। इसका निमंत्रण वे स्वीकार कर चुके थे, हालाँकि वे वहाँ जा न पाए, फिर भी उन्होंने अपना लिखित वक्तव्य भिजवाया। उसमें कहा गया था कि युद्ध एक अनिवार्यता थी और इस अनिवार्यता में गोरे व काले सैनिकों ने जिस समर्पण, तत्परता और लगन से सहयोग दिया, पूरा देश उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता है। इसका स्वागत तालियों की गड़गड़ाहट, धन्यवाद और आँसुओं से

@Digitallibrary84

हुआ। हर अखबार ने इसे प्रकाशित किया। केवल 'न्यूयॉर्क वर्ल्ड' ने इसकी आलोचना की।

इसके बाद लिंकन ने जनरल ग्रांट को मिसीसिपी के नए डिवीजन का प्रमुख बना दिया। इस डिवीजन में ओहायो, कंबरलैंड और टिनेसी शामिल थे। टिनेसी की सैन्य सफलता का सीधा लाभ चुनावों में मिला और आयोवा, पेनसिल्वेनिया तथा कैलिफोर्निया में लिंकन समर्थित उम्मीदवारों ने विजय पद हासिल किए। ओहायो में वेलेंडिगम प्रत्याशी था। वेलेंडिगम लिंकन का घोर विरोधी था और इस चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी को हराने पर आमादा था। इससे लिंकन थोड़े चिंतित भी थे, लेकिन नतीजे आए तो वेलेंडिगम चुनाव हार गया। नतीजों ने लिंकन की प्रामाणिकता को एक बार फिर स्थापित कर दिया।

4 जुलाई, 1863 को गोटसबर्ग में निर्णायक युद्ध हुआ और ली की सेना की जबरदस्त पराजय हुई। यह वह पराजय थी, जिसकी बाट संघीय सेना अरसे से बाट जोह रही थी। लोगों ने उत्साह को उत्सव में बदल दिया। ह्वाइट हाउस के सामने बैंड बजाए गए। उस समय लिंकन ने कहा था, "लगभग 80 वर्ष पहले आज ही के दिन 4 जुलाई, 1776 को दुनिया के इतिहास में पहली बार घोषणा हुई थी कि सभी मनुष्य बराबर हैं। इस घोषणा और मनुष्य की आत्यंतिक सच्चाई को कतिपय लोगों ने झुठलाने की कोशिश की; लेकिन स्वतंत्रता की घोषणा की वर्षगाँठ के दिन इनकी निर्णायक पराजय हो गई।" इसके बाद लोगों ने उन्हें सलाह दी कि वे अपने युद्ध को न्याय युद्ध के रूप में परिभाषित करें, ताकि जनता का मनोबल ऊँचा रह सके। वह इसे केवल उत्तर और दक्षिण के युद्ध के रूप में याद न करे। एक व्यापारी जॉन मुरे फोर्स का सुझाव था कि राष्ट्रपति इसे सामंतों के विरुद्ध जनता के संघर्ष के रूप में अभिहित करें, ताकि आनेवाली पीढ़ी इस प्रशासन पर गर्व कर सके।

शहीद स्मारक पर ऐतिहासिक भाषण

गोटसबर्ग की लड़ाई में मारे गए सैनिकों को श्रद्धांजलि देने के लिए एक स्मारक बनाया गया। यही वह स्थल है, जहाँ अपने संक्षिप्त उद्बोधन में अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र की विश्व-प्रसिद्ध परिभाषा दी।

उस कार्यक्रम में भाषण देने के लिए अमरीका के प्रसिद्ध वक्ता एडवर्ड एवेरेट को बुलाया गया था। लिंकन वहाँ पहुँचेंगे, ऐसा किसी ने सोचा भी न था। यही वजह थी कि उन्हें औपचारिक निमंत्रण भी नहीं भेजा गया, लेकिन जब लिंकन की ओर से सूचना आई कि वे भी आ रहे हैं तो लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन लिंकन इस बार अपने भाषण को लेकर कुछ ज्यादा ही सजग और

@Digitallibrary84

चौकन्ने थे। जिस दिन उन्हें बोलना था, उससे पहले उन्होंने कहा, "मैंने अपने भाषण को दो-तीन बार लिखा है; मगर लगता है कि अभी वह पूरा नहीं हुआ। शायद मुझे अपनी संतुष्टि तक उसे एक बार फिर देखना होगा।"

वहाँ जब लिंकन भाषण के लिए मंचासीन थे, तब भी वे असहज महसूस कर रहे थे। उन्हें लग रहा था कि भाषण में कुछ और करना चाहिए। वे बोलने खड़े हुए, उस समय भी उनके हाथ में लिखा हुआ परचा था।

भाषण के आरंभ से ही लोगों की करतल-ध्वनि शुरू हो गई थी। उन्होंने कहा था—"लोकतंत्र जनता की, जनता के लिए, जनता द्वारा निरूपित प्रणाली है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका मात्र एक संघ नहीं, राष्ट्र है। हम सन् 1776 के स्वतंत्रता के घोषणा-पत्र में यकीन करते हैं, जो मनुष्य की बिना रंगभेद की नीति अपनाए समान व्यवहार पर बल देता है। उन्होंने याद दिलाया कि अमरीका सिर्फ संवैधानिक स्वतंत्रता का ही पक्षधर नहीं है, वह मानवीय समानता का भी पक्षधर है। उन्होंने कहा कि हजारों सैनिकों का बलिदान व्यर्थ न जाए, इसलिए जरूरी है कि हम प्रतिज्ञाबद्ध हों कि इस राष्ट्र की स्वतंत्रता का पुनर्जन्म हो।" महज 272 शब्दों का लिंकन का यह संबोधन दुनिया भर में चर्चित हुआ। अनेक लोगों ने इसकी लिंकन की हस्ताक्षरित प्रति भी हासिल की। अमरीका में आज भी इसकी पाँच प्रतियाँ सुरक्षित हैं। लिंकन ने न सिर्फ प्रतिज्ञा की, बल्कि अपनी प्रतिबद्धता से उसे पूरा किया और दुनिया को दिखाया कि इतिहास गढ़ा कैसे जाता है।

लिंकन का भाषण कुछ इस प्रकार था—

"सदियों पहले जब हमारे पूर्वजों ने

इस उप-महाद्वीप को एक नए राष्ट्र

के अभ्युदय में किया था परिवर्तित

स्वतंत्रता तब भी थी विचार के केंद्र में

और समर्पित की थी प्रतिज्ञा कि सभी

मनुष्य समान हैं

आज हम गृहयुद्ध में रत हैं

परीक्षण में सन्नद्ध कि वह देश या

@Digitallibrary84

कोई भी देश, जो इतना ध्यानस्थ

और समर्पित है।

दीर्घकाल तक दृढ़ रह सके

हम लोग युद्ध की पुण्यभूमि में मिले,

ताकि इसके एक भाग को उन शहीदों

के चिर विश्राम के नाम कर सकें

जिन्होंने अपना जीवन इस राष्ट्र के जीवन

के लिए होम कर दिया

लेकिन वह बृहत् परिप्रेक्ष्य में

हम नहीं कर सकते समर्पित

हम नहीं कर सकते उत्सर्ग

हम नहीं कर सकते मैदान को पवित्र

उन सभी शूरवीरों ने चाहे वे

जीवित हों या नहीं, जिन्होंने

यहाँ संघर्ष किया पहले ही

कर चुके उत्सर्ग

हमारी संचित शक्ति में कुछ जोड़ने या

घटाने के लिए

दुनिया के इतिहास में संक्षिप्त सा

हो वर्णन या कि देर तक न

रह सके याद कि हम यहाँ क्या

कर रहे थे, लेकिन अनंतकाल

तक रहेगा याद कि वे लोग

@Digitallibrary84

यहाँ क्या कर गए

हमारे लिए अंगीकृत जीवन है।

समर्पण भर नहीं

उन सभी अपूर्ण कार्यों को

पूर्ण करने की सौगंध

और प्रतिज्ञा कि उनका

उत्सर्ग नहीं जाएगा अकारथ

यह राष्ट्र ईश्वर की छाया में

एक नई स्वतंत्रता को देगा जन्म

और जनता का जनता द्वारा

जनता के लिए

धरती से कभी लय नहीं होगा।

@Digitallibrary84

यह सब आसानी से नहीं हुआ। सन् 1863 के वसंत में ली ने संयुक्त राज्य अमरीका की संघीय सेना को अनेक मोरचों पर करारी पराजय दी थी। वे इतने आक्रामक थे कि एकबारगी लगता था कि वे समूचे उत्तर को अपने पैरों तले दबा लेंगे। ली ने पेनसिल्वेनिया के हथियार बनाने के कई केंद्र कब्जा लिये और अपनी चीथड़े पहनी सेना के लिए नए वसन भी जुटा लिये। उनके दिमाग में फितूर था कि एक दिन वे वाशिंगटन पर विजय हासिल कर लेंगे और फ्रांस व ब्रिटेन को इस बात के लिए बाध्य कर लेंगे कि वे उनके वजूद को स्वीकार करें —अर्थात् स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दें। उसके पास करीब 75 हजार योद्धा थे। वे लोग जब पोटोमेक के इलाकों मे घुसे तो उन्होंने पूरे क्षेत्र को आतंक से थर्रा दिया। कंबरलैंड की घाटी के किसान अपने घोड़े और मवेशी लेकर भाग खड़े हुए। नीग्रो लोगों की आँखें भय से सफेद पड़ गई थीं। वहाँ की आरंभिक दो दिन की लड़ाई में संघीय सेना के 20 हजार सैनिक खेत रहे थे। इसी से ली को गुमान हो गया था कि वह जल्दी ही संघीय सेना के सारे सपने चूर-चूर कर देगा। गुरिल्ला युद्ध में तो ली की सेना कहीं कभी हारी ही नहीं। ली चाहता था कि अब खुले मैदान की लड़ाई में भी वह बाजी मार ले। वह इसके लिए उतावला हो रहा था, जबकि उसका दाहिना हाथ लांग स्ट्रीट उसे इस बात से मना कर रहा

था। ली का उस पर जबरदस्त दबाव था। लांग स्ट्रीट की दृष्टि युद्ध के मामलों में काफी पैनी थी। उसका सुझाव था कि यह युद्ध सिर्फ हजारों लोगों की जान लेगा और इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा। अंत में दबाव बढ़ने पर लांग स्ट्रीट ने अपना सिर झुकाया और फूट-फूटकर रोने लगा। मगर उसने ली का आदेश मानने से इनकार कर दिया। उसके बाद पिकेट को प्रभाव सौंपा गया। किसी समय पिकेट लिंकन का मित्र रहा था। उसने भी युद्धक्षेत्र से नेपोलियन की तरह रोज प्रेमपत्र लिखे।

ली पोटोमेक नदी के पास घिर गया था और संघीय सेना के जनरल मीड की लापरवाही से भागने में कामयाब भी हो गया था। उस समय लिंकन ने मीड को एक चिट्ठी लिखी थी—"वह हमारी गिरफ्त में था और यदि हम उसे पकड़ने में सफल हो जाते तो युद्ध यहीं समाप्त हो जाता।"

@Digitallibrary84

5

दूसरी बार राष्ट्रपति बनना

सन् 1861 में युद्ध आरंभ हुआ था। उस समय इलिनॉय के गेलेना में एक व्यक्ति अपनी चिंतामग्न, अस्त-व्यस्त कपड़ों में चिलम पीता हुआ यहाँ-वहाँ घूमता रहता था। वह सूअर एवं उसकी खाल किसानों से खरीदता और पुस्तकें सँभालकर रखता। पुस्तकें इसलिए कि उसके दो भाइयों की किताबों की दुकानें थीं। यह और बात है कि वे नहीं चाहते थे कि वह व्यक्ति उनकी दुकान के आस-पास भी फटके। महीनों वह सेंट लुइस की सड़कों पर कुछ करने की इच्छा में मारा-मारा भटका, लेकिन कुछ कर नहीं सका। इस बीच उसके बच्चे और पत्नी निराश्रित हो गए। अत्यंत निराशा और अवसाद में उसने कहीं जाकर कुछ डॉलर उधार लिये और कंटेकी चला गया। वहाँ उसके पिता रहते थे। उनके पास जाकर मदद की गुहार की। वे उम्रदराज जरूर थे, लेकिन उनके पास थोड़ा-बहुत पैसा था। पिता ने मदद की और अपने दोनों छोटे बच्चों को चिट्ठी लिखी कि चाहे जैसे भी हो, वे अपने बड़े भाई को कोई काम दें।

लौटने पर भाइयों ने उसे दो डॉलर रोज पर रख लिया। हालाँकि उसकी हैसियत शायद इतनी भी नहीं थी। लेकिन जैसा कि परिवारों में होता है, कुछ काम अपनेपन के चलते भी किए जाते हैं। यह भी ऐसा ही फैसला था। उसे अपने घर में सम्मान नहीं मिला; लेकिन तीन वर्षों में उसने दुनिया की अब तक की सबसे प्रचंड सेना की कमान सँभाली और सम्मान अर्जित किया। चार वर्षों में उसने ली पर अपनी प्रभुता साबित करते हुए उसे धूल चटा दी। मगर इससे पहले तो उसकी चिंता उसकी माँ ने भी नहीं की। वह घर में उपेक्षित सा था। उसे गाँव के लोग 'ग्रांट' कहते थे। उसकी दादी सिंपसन के कारण संभवतया उसका पूरा नाम हो गया 'यू.एस. ग्रांट'।

ग्रांट ने कभी इसकी परवाह नहीं की कि उसे दोस्त क्या कहते हैं या वह कैसा दिखता है। दोस्त उसे 'अंकल सैम' कहा करते। अन्य फौजियों की तरह न तो उसके जूते चमकते थे, न वह अपनी बंदूक को उनकी तरह साफ रखता था। और,

@Digitallibrary84

तो और, रोल कॉल के वक्त भी देर से पहुँचता। इतना ही नहीं, सैन्य रणनीति पर कोई पुस्तक भी नहीं पढ़ता था। जब वह युद्ध जीतकर प्रसिद्ध हो गया तब उसने बिस्मार्क से कहा था, "मिलिटरी के मामलों में उसकी कोई रुचि नहीं। सच्चाई यह है कि मैं आज भी एक सिपाही से ज्यादा किसान हूँ। वास्तव में मैं दुःखद स्थिति में मिलिटरी में आया था; लेकिन बिना आनंद लिये मैंने इसे नहीं छोड़ा।" उसने माना कि वह आला दर्जे का आलसी था, जिसकी पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं थी। सन् 1853 में वह कैलिफोर्निया के हंबोल्ट किले पर तैनात था। वहीं पास के गाँव में एक रेयान नाम का मनुष्य था। अद्भुत चरित्र का व्यक्ति। सप्ताह भर वह सर्वे करता और रविवार को धर्मोपदेश करता। उसका एक स्टोर भी था, जहाँ वह ड्रम भरकर ह्विस्की रखता था। उस दौर में ह्विस्की बहुत सस्ती थी। वहीं वह एक मग टाँगकर रखता। जो चाहे आए और अपनी सेवा स्वयं करे। ग्रांट वहाँ कई बार गया। इतनी बार कि उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ा। उसके फाकाकशी के दिन आ गए। वह मिसौरी चला गया और अपने श्वसुर के आठ एकड़ के खेत में काम करने लगा। एक बरस उसे वहाँ भी घाटा उठाना पड़ा। वहाँ से परेशान होकर वह सेंट लुइस चला गया। वहाँ वह प्रॉपर्टी के सौदे करवाने अर्थात् दलाली का काम करने लगा। काम चला नहीं तथा वह और अधिक संत्रस्त हो गया।

गृहयुद्ध के बारे में एक और रोचक जानकारी यह है कि ली मानता था कि दासप्रथा गलत है। उसने युद्ध शुरू होने से काफी पहले ही अपने यहाँ काम कर रहे नीग्रो लोगों को मुक्त कर दिया, जबकि ग्रांट के घर में नीग्रो काम करते थे। ऐसे में जब ग्रांट उत्तरी सेना का मुखिया था, ऐसी सेना जो दासप्रथा की मुक्ति को मनुष्य की शांति और समानता का अमोघ अस्त्र मानती थी।

युद्ध की शुरुआत में ग्रांट गेलेना के चमड़ा स्टोर में काम करता था। वह ऊब चुका था और सेना में आना चाहता था। लगता तो आसान था, ऐसे में जबकि ज्यादातर भरतियाँ अप्रशिक्षित लोगों की हो रही थीं। मगर हुआ नहीं। उसके पल्ले सिर्फ ड्रिल करवाने का काम आया।

अंत में उसे स्प्रिंगफील्ड में एक लिपिक का काम मिला। वह इतना सामान्य काम था, जिसे पंद्रह बरस की कोई लड़की आसानी से कर सकती थी। अचानक एक घटना घटी, जिसने ग्रांट के प्रारब्ध को मोड़ दिया। इलिनॉय के वालंटियर की टावी रेजीमेंट ने अचानक अपने अफसरों के आदेश को मानने से इनकार कर दिया। उस समय वहाँ के गवर्नर येट्स थे। उन्हें भी लगा कि ग्रांट वेस्टपॉइंट का स्नातक है, उसे मौका दिया जाना चाहिए। जून 1861 में ग्रांट ने उस रेजीमेंट की कमान सँभाली, जिसके लिए कोई राजी नहीं था। उस समय ग्रांट के पास न घोड़ा था, न वरदी। शुरुआत में तो लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई। लेकिन उसने

@Digitallibrary84

जल्दी ही ऐसी गतिविधियों पर काबू पा लिया। यदि कोई आदमी आदेशों का उल्लंघन करता था तो उसे किसी खंभे से बाँध दिया जाता और पूरे दिन अकेला रहने दिया जाता। यदि कोई सैनिक ऊलजलूल बकवास करते या गालियाँ बकते पाया जाता तो उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया जाता। रोल कॉल के समय देरी से आने पर 24 घंटे तक भोजन नहीं दिया जाता। इस तरह उसने जल्दी ही अपनी प्रशासकीय क्षमता के झंडे गाड़ दिए।

यश कभी अकेला नहीं बढ़ता, वह अपने साथ दूसरों की ईर्ष्या भी बढ़ाता है। ऐसा ही ग्रांट के साथ भी हुआ। उसका वरिष्ठ अफसर हेलेक था। उसने ग्रांट को खून के आँसू रुला दिए। लिंकन के नौसेना सचिव गिडॉन वेल्स हेलेक को अच्छी तरह से जानते थे। उनका कहना था कि हेलेक कुछ नहीं करता; न सोचता है, न सुझाव देता है, न योजना बनाता है, न निर्णय लेता है। दरअसल, वह सिवा लोगों को गालियाँ देने, उन्हें नीचा दिखाने और अपनी बरौनियाँ हिलाने के कुछ नहीं करता। कम-से-कम हेलेक का तो यही मानना था। ग्रांट ने उसे दैनिक रिपोर्ट भेजी; लेकिन संचार-व्यवस्था खराब हो जाने से उसकी रिपोर्ट हेलेक को नहीं मिली। हेलेक ने मैक्लेन को बताया कि ग्रांट ऐसा है, शराब पीता है, सर्वथा अयोग्य है, आदेशों की अवहेलना करता है। मैक्लेन भी ग्रांट की प्रसिद्धि से जलता था। उसने हेलेक को तार भेजा। वह तार उस गृहयुद्ध का सबसे चौंकानेवाला तार था। उसमें लिखा था—

"यदि जरूरी लगे तो ग्रांट को गिरफ्तार कर लो और उसका कार्यभार सी.एफ. स्मिथ को सौंप दो।" और हेलेक ने लगभग वैसा ही किया। ग्रांट से सेना ले ली गई और उसे नजरबंद कर लिया गया। उसके बाद ही हेलेक को चैन आया और वह कुरसी पर पसरकर फिर बरौनियाँ हिलाने लगा। उसके बाद हालाँकि उसे फिर से पदभार मिल गया था। मगर ग्रांट का दुर्भाग्य आड़े आता गया और पूरे आठ महीने वह जिस काम में हाथ डालता गया, परास्त होता गया। मिसीसिपी पर किए उसके प्रयोग असफल रहे। विक्सबर्ग का अभियान भी असफल रहा। चारों ओर उसकी आलोचना होने लगी। मगर लिंकन का विश्वास उस पर से नहीं डिगा। फिर तो उसने विक्सबर्ग के युद्ध में 40 हजार लोगों को बंधक बनाया और पूरा मिसीसिपी क्षेत्र उत्तर के हाथों में धर दिया। इस खबर से एक बार फिर न केवल लोगों का उत्साह बढ़ा, बल्कि ग्रांट की यशगाथा में एक ऐसा अध्याय जुड़ गया, जिसके लिए अनेक जनरल लालायित थे।

कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित किया कि ग्रांट को लेफ्टिनेंट जनरल बना दिया जाना चाहिए। यह एक ऐसा सम्मान था, जो वाशिंगटन के बाद कभी किसी को नहीं मिला था। ह्वाइट हाउस में सम्मान होना था और ग्रांट को उसके प्रत्युत्तर में कुछ शब्द कहने थे। वह अपने साथ एक कागज ले गया था, जिस पर महज

@Digitallibrary84

तीन लाइनें लिखी थीं। उसने पढ़ना ही शुरू किया था कि उसके हाथ से कागज फिसल गया। उसके घुटने काँपने लगे, चेहरा पसीने-पसीने हो गया। बड़ी मुश्किल से दोनों हाथों में कसकर कागज को थामकर वह तीन पक्तियाँ पूरी कर पाया। उसके लिए महज ग्यारह लोगों के सामने 84 शब्द बोलते गोलियों का सामना करने से ज्यादा भारी हो गए थे।

मई 1864 में ग्रांट 1,22,000 लोगों की सेना लेकर रेपीडान नदी के किनारे ली के साथ अंतिम लड़ाई के इरादे से पहुँचा। ली से उसकी मुलाकात वर्जीनिया में हुई। छह दिन की लड़ाई में ग्रांट के 54,926 लोग मारे गए। ली की फौज में तो इतनी संख्या भी नहीं थी। कोल्डहार्बर के एक घंटे के युद्ध में 7 हजार लोग खेत रहे। गेट्सबर्ग के युद्ध में दोनों ओर से मारे गए लोगों की तीन दिन में संख्या 6 हजार ही थी। कोल्डहार्बर पर हमला ग्रांट की सबसे बड़ी भूल थी।

पराजय किसी को भी नहीं बख्शती। दक्षिण और उत्तर दोनों तरफ लिंकन की निंदा होने लगी। इसी के कुछ सप्ताह बाद पेनसिल्वेनिया के एक होटल में मीडविले की एक खिड़की पर किसी ने लिख दिया था—'13 अगस्त, 1864 को जहर खाने की वजह से अब्राहम लिंकन का देहावसान हो गया।' बाद में पता चला कि होटल का वह कमरा जॉन विल्कीज बूथ के नाम से बुक हुआ था।

इस बीच लिंकन के सामने एक बड़ी समस्या थी दक्षिणी राज्यों को संघ में शामिल करने की। उनके पास तीन योजनाएँ थीं। पहली योजना डेमोक्रेट लोगों की सुझाई थी। उनका कहना था कि विद्रोहियों को आम माफी दे दी जाए और राष्ट्रपति अपना मुक्ति घोषणा-पत्र वापस ले लें। दूसरी योजना उदारवादी रिपब्लिकन की थी। उसमें सिर्फ एक शर्त थी कि दास मालिक स्वेच्छा से अपने दासों को मुक्त कर दें। हालाँकि इसके नेता मोंटगुमरी ब्लेयर का विचार था कि काले लोगों को अपने देश दक्षिण अफ्रीका वापस भेजा जाना चाहिए। तीसरी योजना उग्रवादी रिपब्लिकन की थी। उनका कहना था कि दक्षिणी राज्यों का संघ में विलय करने से पहले उनका आर्थिक और सामाजिक ढाँचा ठीक किया जाए। उसके नेता समनर की राय थी कि केंद्र ने इन राज्यों को जीता है, इसलिए इन सभी को केंद्र के अधीन कर दिया जाए। वे चाहते थे कि दक्षिण के विद्रोहियों की जमीन उनसे छीनकर देशभक्त सैनिकों, गरीब गोरों और मुक्त दासों में बाँट देनी चाहिए।

इस पर समनर और ब्लेयर में बहस छिड़ गई। लिंकन यूँ तो उदारवादी थे, लेकिन इस बहस में वे किसी भी पक्ष में नहीं बोले। लिंकन उस समय बीमार भी थे। वे तभी से बीमार थे जब से वे गेट्सबर्ग से लौटे थे। उन्हें चेचक हो गई थी। बिस्तर से ही उन्होंने अपना संदेश तैयार किया और उसमें उग्रवादी व उदारवादी दोनों

@Digitallibrary84

के ही सुझावों की उपेक्षा की। उन्होंने कहा कि देश में नए जीवन की शुरुआत होनेवाली है। लेकिन इस पर विस्तार से कुछ नहीं कहा। उन्होंने राजधानी वाशिंगटन में नया संसद् भवन बनाए जाने पर भी कुछ नहीं कहा। हाथ में मशाल लिये थॉमस क्राफोर्ड की 19 फीट ऊँची स्वतंत्रता की प्रतिमा के बारे में भी उन्होंने चुप्पी साधे रखी। उन्होंने युद्ध में काम आए काले सैनिकों का उल्लेख तो किया, लेकिन सेना में मौजूद कालों की हौसला-अफजाई नहीं की। दरअसल, उन्होंने अतीत की बातों की बजाय भविष्य के बारे में ज्यादा चर्चा की। उन्होंने आम माफी की घोषणा करते हुए कहा कि उन्हें पूरी माफी दी जाती है। दासों को छोड़कर उनकी संपत्ति पर सारे अधिकार पुनः स्थापित किए जाते हैं। आम माफी के पात्र बनने के लिए सम्मिलित राज्य के उच्चाधिकारियों के लिए जरूरी था कि वे संविधान के प्रति अपनी वफादारी की शपथ लें और प्रतिज्ञा करें कि कांग्रेस के निर्णयों और दासप्रथा संबंधी राष्ट्रपति की घोषणाओं का पूरा सम्मान करेंगे। उन्होंने कहा कि वे अपनी मुक्ति की घोषणा से पद पर बने रहने तक कभी नहीं डिगेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जो दास मुक्त हो गए हैं, उन्हें फिर कभी गुलाम नहीं बनाया जाएगा। लिंकन का यह संदेश 9 दिसंबर, 1863 को पढ़ा गया। इस पर 'न्यूयॉर्क ट्रिब्यून' ने लिखा कि जॉर्ज वाशिंगटन के बाद किसी भी राष्ट्रपति के संदेश ने इतना संतोष जनता को नहीं दिया।

पार्टी द्वारा दूसरी बार के लिए नामांकन

जून में रिपब्लिकन पार्टी ने अब्राहन लिंकन को दूसरी बार राष्ट्रपति पद के लिए नामांकित कर दिया। लेकिन जल्दी ही पार्टी को लगा कि उसने गलती कर दी है। पार्टी के कुछ वरिष्ठ नेताओं ने लिंकन को सलाह भी दे डाली कि वे स्वयं अपना नाम वापस ले लें। वे लोग एक और सम्मेलन बुलाना चाहते थे, जिसमें कहना चाहते थे कि लिंकन असफल रहे हैं, लिहाजा उनका नामांकन निरस्त किया जाता है। लिंकन के प्रिय मित्र ओरविल ब्राडनिंग ने अपनी डायरी में लिखा—"देश की सबसे बड़ी जरूरत है कि उसके शिखर पर योग्य नेता ही बैठे।" लिंकन खुद भी समझने लगे कि उनका मामला निराशाजनक है। वे असफल रहे हैं, उनके जनरल असफल रहे हैं और लोगों का विश्वास उनके नेतृत्व से उठ गया है। सन् 1864 की गरमियों के आते-आते लिंकन बिलकुल बदल गए थे। गाल अंदर धँस गए थे। चुटकुलों की जगह गंभीर वक्तव्यों ने ले ली थी। उन्होंने अपने एक मित्र से कहा भी था कि शायद अब कभी जीवन में मैं प्रसन्न नहीं हो पाऊँगा। 'अंकल टाम्स केबिन' की लेखक श्रीमती स्तोव से उन्होंने कहा था, "शायद इस देश में शांति देखने के लिए मैं जीवित नहीं रहूँगा।"

@Digitallibrary84

22 फरवरी, 1864 को रिपब्लिकन पार्टी की राष्ट्रीय समिति की बैठक वाशिंगटन में हुई। बैठक में पाँच में से चार सदस्यों के बहुमत से लिंकन के पुनः नामांकन का प्रस्ताव पास किया गया। तय हुआ कि पूर्ण राष्ट्रीय सम्मेलन 7 जून को बाल्टीमोर में हो, जहाँ इस पर अंतिम प्रस्ताव पारित किया जाए। अनेक राज्य स्तरीय सम्मेलनों ने भी लिंकन के नाम की अनुशंसा की और इस आशय का प्रस्ताव पारित किया। चेज भी इस दौड़ में थे। मगर यह सब देखकर वे बड़े निराश हुए और 5 मार्च को उन्होंने नाम वापसी की घोषणा कर दी।

लिंकन ने सेना को पुनर्गठित करने का बीड़ा भी उठाया। ग्रांट को वे लेफ्टिनेंट जनरल बना चुके थे। 19 मार्च, 1864 को ग्रांट को सेना का जनरल-इन-चीफ बना दिया गया और हेलेक को चीफ ऑफ स्टाफ। लिंकन और ग्रांट इस बात पर एक मत थे कि सम्मिलित राज्य की सेना पर अंतिम प्रहार चारों ओर से एक साथ किया जाए। बुधवार 4 मई, 1864 को पोटोमेक सेना ने इस अभियान का आगाज किया। इसी दिन सेना उत्तरी वर्जीनिया की ओर बढ़ गई। अगले दिन जनरल बटलर पीटसबर्ग रवाना हुए और 7 मई को जनरल शर्मन अटलांटा पर कब्जा करने के लिए कूच कर गए। सबकुछ गोपनीय तरीके से हो रहा था। आरंभिक हार के बाद संघीय सेना ने विजय का माथा चूम लिया। यह लिंकन की नीतियों और योजनाओं की जीत थी, उनके संकल्प और प्रतिबद्धता की जीत थी। यह जीत थी अमरीका को एक राष्ट्र माननेवालों की। चार वर्ष के युद्ध के बाद भी लिंकन के हृदय में दक्षिण के प्रति कोई मनोमालिन्य नहीं था।

7 व 8 जून, 1864 को बाल्टीमोर में रिपब्लिकन पार्टी का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। इसमें राष्ट्रपति प्रत्याशी चुना जाना था। इसमें लिंकन समर्थकों का बहुमत था। सम्मेलन में लिंकन को एक ऐसा व्यक्ति निरूपित किया गया, जिसमें व्यावहारिक ज्ञान, निस्स्वार्थ सेवा, देशभक्ति विद्यमान है। सम्मेलन में कहा गया कि सम्मिलित राज्य बिना शर्त आत्मसमर्पण करे। इतना ही नहीं, लिंकन की नीतियों के मद्देनजर दासप्रथा उन्मूलन का उल्लेख किया गया। सम्मेलन ने लिंकन का नामांकन सर्वानुमति से पारित किया। उपराष्ट्रपति के लिए हेमलिन और जॉनसन के नाम आए। मतदान हुआ और जॉनसन विजयी हो गए।

जून-जुलाई में युद्ध की खबरें आशावादी नहीं थीं। इस त्रासदी के लिए लिंकन ने स्वयं को जिम्मेदार माना था। लिंकन को जब भी समय मिलता, वे अपने संशय का उत्तर बाइबिल में ढूँढ़ने की कोशिश करते। उन्होंने कहा था—"सिवा ईश्वर के किसी ने भी नहीं सोचा था कि देश इस भँवर में फँस जाएगा।" इस बीच ग्रांट की भी आलोचना हो रही थी। लिंकन इसी दुश्चिंता में अपने पुत्र टैड के साथ ग्रांट के मुख्यालय चले गए। वे घोड़े पर सवार होकर युद्धभूमि भी गए। जब वे अफ्रीकियों की 18वीं बटालियन से मिले तो सैनिकों ने उनके स्वागत में

@Digitallibrary84

गीत गाए और कहा कि ईश्वर लिंकन पर कृपा बनाए रखे। लिंकन ने कहा कि मैं आशा करता हूँ कि कम-से-कम खून-खराबे में ही हम उद्देश्य हासिल कर लेंगे। 23 जून को वे वापस वाशिंगटन आ गए।

रिचमौंड पर ग्रांट के दबाव को समाप्त करने के लिए पृथकतावादियों की सेना की एक टुकड़ी 9 जुलाई, 1864 को वाशिंगटन के नजदीक पहुँच गई। पोटोमेक सेना पीट्सबर्ग की घेराबंदी में थी। राजधानी बचाने के लिए सरकारी दफ्तरों के लिपिकों को भी राइफलें थमा दी गईं। 11 जुलाई को ग्रांट ने पोटोमेक सेना की टुकड़ी जनरल राइट की अगुआई में रवाना की। इससे पहले कि जनरल राइट वहाँ पहुँचते, विद्रोही सेना फोर्टस्टीवेंस के काफी निकट पहुँच गई। परंतु तोप के गोलों ने उसे पीछे हटने को विवश कर दिया।

लिंकन राजनीतिक पैंतरेबाजी को समझने में बेहद कुशल थे। वे हलकी सी राजनीतिक हरकत की पदचाप भी सुन लेते थे। एक बार लिंकन से 'न्यूयॉर्क ट्रिब्यून' के संपादक ग्रीली ने कहा कि उन्हें सम्मिलित सरकार के प्रतिनिधियों से चर्चा के लिए जाना चाहिए। ग्रीली भी फ्रांस की तरह किसी तीसरे स्थान पर चर्चा के पक्षधर थे। लिंकन तुरंत भाँप गए कि यह डेमोक्रेट्स की भी चाल हो सकती है। यह एक ऐसा प्रस्ताव था, जिसको अस्वीकार करना भी बदनामी थी और स्वीकार करना पिछले चार वर्षों के कठोर परिश्रम को अकारथ करवा देता। उन्होंने संपादक के नाम एक खुला पत्र लिखा—ग्रीली ही संघ प्रतिनिधि की हैसियत से चर्चा करें, ताकि संघ की एकता और दासप्रथा उन्मूलन पर वार्त्ता आरंभ हो सके। ग्रीली इसमें फँसना नहीं चाहते थे। उन्होंने इनकार कर दिया। लिंकन ने ऐसे प्रस्ताव रखे थे, जिन्हें पृथकतावादी मान ही नहीं सकते थे। मानते तो तय हो जाता कि वे निरर्थक युद्धोन्माद में लड़ाई लड़ रहे हैं। लिंकन के प्रस्तावों में संयुक्त राज्य अमरीका की एकता और दासप्रथा के पूर्ण उन्मूलन की बात कही गई थी। इसे मानना पृथकतावादियों की सैद्धांतिक पराजय होती। लिंकन पर कोई और आरोप इस बारे में लगता, तब तक उन्होंने अलगाववादियों के प्रमुख डेविस के एक संदेश को सार्वजनिक कर दिया। उसे डेविस के दूतों ने लिंकन तक पहुँचाया था। उसमें था कि युद्ध तब तक जारी रहेगा जब तक इस पीढ़ी का अंतिम आदमी उनके पदचिह्नों पर चलता रहेगा और जब तक राष्ट्रपति लिंकन स्वशासन को मान्यता नहीं देते। उसके उजागर होते ही युद्ध-विरोधियों की बोलती बंद हो गई।

दूसरी तरफ चेज ने अपना नाम वापस तो ले लिया, लेकिन वे लिंकन-विरोधी गुट के नेता बन बैठे। वे लोग राष्ट्रपति के नामांकन पर फिर से विचार करने की माँग कर रहे थे। उनकी बैठक 18 अगस्त को न्यूयॉर्क में हुई। इसमें चेज और समनर शामिल नहीं हुए थे। 30 अगस्त, 1864 को डेमोक्रेटिक पार्टी का राष्ट्रीय

@Digitallibrary84

सम्मेलन शिकागो में हुआ। उसमें भी राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी का चुनाव होना था। पार्टी ने पूर्व जनरल मैक्लेन के नाम का प्रस्ताव पारित किया और कहा कि चार वर्षों तक संघ की रक्षा करने में असफल रहने के बाद न्याय, मानवता, स्वतंत्रता और जनहित की माँग यह है कि वैमनस्यता समाप्त की जाए। यह सब शिकागो आत्मसमर्पण के नाम से कुख्यात हो गया और मैक्लेन ने इससे अपना हाथ खींच लिया।

4 सितंबर, 1864 को शर्मन का संदेश मिला कि 'अटलांटा अब हमारा हो गया है।' दूसरा संदेश मोबिल के बारे में था कि यहाँ भी संघीय सेना का ध्वज फहरा रहा है। मोबिल मेक्सिको खाड़ी में सम्मिलित राज्य का एकमात्र बंदरगाह था। लिंकन इन खबरों से प्रसन्न हो गए। उन्होंने इस दिन को 'धन्यवाद दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की; लेकिन बाद की सरकारों ने इसे 'मजदूर दिवस' के रूप में रूपांतरित कर दिया। आज भी अमरीका में सितंबर माह का पहला सोमवार 'मजदूर दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस सबसे डेमोक्रेट लोगों की धज्जियाँ उड़ गईं और लिंकन की लोकप्रियता आसमान छूने लगी।

लिंकन ने इसका लाभ उठाने की गरज से रिपब्लिकन पार्टी में एकता लाने का बीड़ा उठाया। लिंकन उदारवादी थे, इसलिए उग्रवादी उनके विरुद्ध टिप्पणियाँ करते थे। इन लोगों ने फ्रीमौंट को लिंकन के विरोध में तैयार किया। लिंकन जानते थे कि फ्रीमौंट और मांटगुमरी ब्लेयर में कभी नहीं पटी। फ्रीमौंट चाहते थे कि लिंकन ब्लेयर को हटा दें। लिंकन ने उनके पास खबर भिजवा दी कि यदि वे अपना नाम वापस ले लेते हैं तो ब्लेयर को हटा दिया जाएगा। यूँ भी ब्लेयर को लोग नापसंद करते थे। फ्रीमौंट ने यह कहते हुए नाम वापस ले लिया कि वे नहीं चाहते कि पार्टी की भीतरी स्थिति का लाभ डेमोक्रेट को मिले।

चुनाव प्रचार गरमाने लगा। डेमोक्रेट समझ गए कि इस बार भी लिंकन को पराजित करना संभव नहीं है तो उन्होंने चरित्र-हनन करना शुरु कर दिया। वे उनके नीग्रो प्रेम का मजाक भी उड़ाते। इन लोगों ने अफवाह भी फैलाई कि लिंकन चाहते हैं कि काले और गोरे आपस में विवाह करें। उन दिनों संभवतया यह परंपरा थी कि राष्ट्रपति पद पर रहते हुए कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक सभाओं में जाकर सीधे बहस नहीं कर सकता। इसे सरकारी पद का दुरुपयोग समझा जाता था। लिहाजा लिंकन प्रेस प्रबंधन में लग गए, ताकि अखबार या तो उनके पक्ष में लिखें या उनका विरोध तो कम-से-कम न करें।

लिंकन के पास पर्याप्त विकल्प थे। वे चाहते तो युद्ध की आड़ लेकर चुनाव टाल सकते थे। लेकिन यदि वे ऐसा करते तो विरोधियों को कहने का मौका मिलता और अलगाववादी इसे अपनी राजनीतिक विजय बताते। अक्तूबर माह

@Digitallibrary84

में विराक्यूज में काले लोगों के राष्ट्रीय सम्मेलन में मेसाचुसेट्स के काले वकील जॉन रॉक ने कहा था—"देश में केवल दो पार्टियाँ हैं। पहली, लिंकन की पार्टी, जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता व लोकतंत्र है और दूसरी मैक्लेन की पार्टी, जिसका उद्देश्य कालों को देश निकाला है, गुलामी है।"

अंत में लिंकन विजयी हुए। परिणाम में डेमोक्रेटिक पार्टी के मैक्लेन को 45 प्रतिशत और रिपब्लिकन पार्टी के अब्राहम लिंकन को 55 प्रतिशत वोट मिले। दुनिया भर से मिले बधाई संदेशों में एक संदेश कार्ल मार्क्स का भी था। अंतरराष्ट्रीय कामगार संघ की ओर से लिखे पत्र में मार्क्स ने लिखा—"हम आपके भारी मतों से विजयी होने पर अमरीकी जनता को बधाई देते हैं। अगर दास शक्ति से लोहा लेना आपके पहली बार चुने जाने का कारण था तो आपके पुनर्निर्वाचन का कारण युद्ध में जीत से हुई। यह दासप्रथा उन्मूलन की पुकार थी।"

कहानी एकाकी नहीं चलती। उसमें पात्र टहलते हैं, घटनाएँ हिचकियाँ लेती हैं, स्थितियों के घाट होते हैं। ऐसे ही लिंकन के जीवन की कहानी में भी अनेक पात्र, घटनाएँ, स्थितियाँ थीं। रिचमौंड के पराभूत होने से कुछ पहले जनरल ग्रांट ने श्री और श्रीमती लिंकन को बुलाया था, ताकि वे उनके साथ सप्ताह भर की छुट्टियाँ बिता सकें। लिंकन जब से ह्वाइट हाउस पहुँचे थे, उन्होंने कभी विश्राम नहीं किया था। वे अथक काम में लगे थे। लिंकन और मैरी लिंकन रीवरक्लीन में सवार होकर चल दिए। कुछ दिन बाद राष्ट्रपति की पार्टी में फ्रांस के मंत्री ज्योफ्री भी शरीक हुए। वे सभी युद्ध के स्थान को देखने को लालायित थे। दूसरे दिन प्रमुख घोड़ों पर और श्रीमती लिंकन एवं श्रीमती ग्रांट आधी खुली चौपहिया गाड़ी में सवार हो गए। ग्रांट ने स्वयं इस प्रसंग में लिखा—

"बातचीत के दौरान मैं बता रहा था कि युद्ध के उत्तरार्द्ध के समय एक भी महिला को यहाँ तक आने की इजाजत नहीं थी, सिवा जनरल चार्ल्स ग्रोफिन की पत्नी श्रीमती ग्रोफिन के। उन्हें भी इसलिए कि उन्होंने राष्ट्रपति से विशेष अनुमति ले ली थी। इतना सुनते ही मैरी लिंकन उत्तेजित हो गईं। वे पूछने लगीं कि वास्तव में आपका अभिप्राय क्या है? क्या ग्रोफिन राष्ट्रपति से एकाकी मिली थीं। उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की गई, लेकिन वे समझने को तैयार ही नहीं थीं। वे बार-बार कह रही थीं कि तुम गाड़ी रोको, मैं राष्ट्रपति से ही पूछ लेती हूँ कि क्या वे इस महिला से अकेले मिले थे। बड़ी मुश्किल से शाम ढली।"

पत्नी मैरी लिंकन को व्यवहार

@Digitallibrary84

दूसरे दिन भी इसी दल को इसी तरह जेम्स की सेना की तरफ, जिसकी कमान ओर्ड के हाथों में थी, जाना था। नदी के बाद पुरुष घोड़ों पर तथा श्रीमती लिंकन और श्रीमती ग्रांट एंबुलेंस में सवार हो गए। श्रीमती ओर्ड को भी साथ चलना था। उन्होंने देखा कि एंबुलेंस में जगह नहीं है तो वे अपने घोड़े पर ही बैठी रहीं और अपना घोड़ा राष्ट्रपति की कार के पास लगा दिया। मगर जैसे ही मैरी लिंकन को इसका पता चला कि श्रीमती ओर्ड राष्ट्रपति के बगल से घुड़सवारी कर रही हैं तो उन्होंने आपा खो दिया। वे चीखने लगीं कि यह महिला समझती क्या है? फिर तो उन्होंने क्या-क्या नहीं कहा।

एक बार वे श्रीमती ग्रांट के साथ अकेली थीं। उनके मन की कड़वाहट गई नहीं थी। मैरी लिंकन ने उनसे कहा, "क्या तुम ह्वाइट हाउस के सपने देखती हो?" श्रीमती ग्रांट भद्र महिला थीं, शांत और ओजपूर्ण। उन्होंने विनम्रता से जवाब दिया, "माफ करें, मैं जहाँ हूँ, ईश्वर की दया से संतुष्ट हूँ।"

ह्वाइट हाउस की परंपरा थी कि जनता के स्वागत समारोह के समय राष्ट्रपति विहारार्थ किसी और स्त्री को अपने साथ रखता था। वह प्रथम महिला यानी उनकी पत्नी नहीं होती थी। लेकिन परंपरा या कुछ और, इससे मैरी लिंकन का लेना-देना नहीं था। कोई और स्त्री राष्ट्रपति के साथ हो, मैरी लिंकन उसे बरदाश्त नहीं कर सकती थीं। उन्होंने लिंकन को यह परंपरा निभाने नहीं दी। वे इस बात पर भी नजर रखती थीं कि लिंकन किससे बात कर रहे हैं। एक बार तो लिंकन खीझ गए। उन्होंने कहा, "मेरी माँ! मैं वहाँ ठूँठ की तरह खड़ा तो नहीं रह सकता। मुझे किसी से तो बात करनी होगी। तुम्हीं बता दो कि मैं किससे बात न करूँ?" मैरी लिंकन का अपना नजरिया और अपना रास्ता था। वे उस पर चलने की कोई भी कीमत अदा करने को उद्यत रहती थीं।

एक बार की बात है कि लिंकन किसी को साक्षात्कार दे रहे थे। अचानक कहीं से किसी बात पर भड़की मैरी लिंकन भीतर आ गईं। ऊलजलूल बकने लगीं। लिंकन ने देखा, लेकिन वे उत्तेजित नहीं हुए। सिर्फ उनकी बाँह पकड़ी और दूसरे कमरे में ले गए। वहाँ उन्हें बैठाया और बाहर निकलकर कुंडी लगा दी। मैरी लिंकन को उनकी कैबिनेट के अनेक सदस्यों से भी तकलीफ थी। किसी से इस वजह से, किसी से दूसरे कारण से। वस्तुतः वे किसी और की प्रशंसा व प्रसिद्धि बरदाश्त नहीं कर पाती थीं। वे चेज को बरखास्त करने के लिए कई बार लिंकन से कह चुकी थीं। लिंकन ने एक बार कहा भी था—"अगर मैं तुम्हारी बातों पर गौर करने लगूँ तो जल्दी ही मैं बिना काबीना के हो जाऊँगा।"

ली के आत्मसमर्पण के बाद श्री और श्रीमती ग्रांट वाशिंगटन आए। पूरा शहर रोशनी में नहा रहा था। लोग गीत गा रहे थे। उत्सवी माहौल था। श्रीमती लिंकन

@digitallibrary84

ने जनरल ग्रांट को इस संबंध में चिट्ठी भी लिखी। वह एक तरह का न्योता था, लेकिन उन्होंने श्रीमती ग्रांट को नहीं बुलाया। कुछ दिनों बाद मैरी लिंकन ने एक थिएटर पार्टी दी। उसमें उन्होंने श्री व श्रीमती ग्रांट और श्री व श्रीमती स्टेनटन को बुलाया। श्रीमती स्टेनटन को जैसे ही निमंत्रण मिला, वे उसे लेकर श्रीमती ग्रांट के पास गईं। यह पूछने कि क्या वे इस कार्यक्रम में जा रही हैं। दरअसल, वे चाह रही थीं कि यदि श्रीमती ग्रांट न जा रही हों तो वे भी नहीं जाएँगी, क्योंकि पता नहीं मैरी लिंकन वहाँ क्या कह दें और कैसा मजमा खड़ा कर दें। दोनों ने आपसी चर्चा के बाद तय किया कि वे नहीं जाएँगी। यह वही रात थी, जब बूथ ने लिंकन को गोली मारी थी। यदि ये दोनों भी वहाँ होतीं तो शायद वह इन पर भी घात करता।

लिंकन लगातार विपक्ष को भी साथ लेकर चलने की पहल कर रहे थे; मगर उसका कोई असर नहीं हो रहा था। लिंकन की जीत से इतना हुआ कि दक्षिण के लोगों को अपना रवैया बदलना पड़ा। इनके प्रमुख डेविस ने लूसियाना के किसान डंकन को ब्रिटेन और फ्रांस भेजा। कहलवाया कि अगर ये लोग दक्षिण को अलग से मान्यता दे दें तो सभी दासों को छोड़ दिया जाएगा। कुछ ने तो यह भी कहा कि यदि आप लोग चाहें तो हम काले लोगों को अपनी सेना में भी जगह देने को तैयार हैं। मगर कुछेक उग्रवादियों का कहना था कि इस पराजय का बदला लिंकन को रास्ते से हटाकर लिया जा सकता है। लिंकन को लगातार धमकियाँ मिलती रहती थीं। यह इसलिए चौंकानेवाली बात नहीं थी कि पहली शपथ के समय से ही वे इसके अभ्यस्त हो गए थे। उन्होंने तो अपने निजी सचिव को स्थायी आदेश दे रखा था कि इस आशय के पत्रों को बिना उन्हें दिखाए नष्ट कर दिया जाए। वे लगातार अकेले टहलने जाते। वाशिंगटन में मैरी लिंकन और बच्चों को लेकर नाटक देखने चले जाते। इससे सुरक्षा प्रमुख लैमन नाखुश रहते थे।

दक्षिण के एक वर्ग का मानना था कि लिंकन की हत्या की बजाय उनका अपहरण किया जाना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो लिंकन को वार्त्ता के लिए बाध्य किया जा सकेगा। उन्हें छोड़ने के नाम पर शर्त रखकर बंदी कैदियों को छुड़वाया जा सकता है। अपहरण की योजना सिर्फ खामखयाली नहीं थी। उसे अमली जामा पहनाने के लिए उनका आदमी आया भी था; मगर तब तक लिंकन और उनके परिवार की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी।

लिंकन पर हमला

अगस्त में भी लिंकन पर किसी ने गोली चलाई। गोली उनके हैट पर लगी थी। मगर वे कभी चिंतित नहीं हुए। दूसरी बार जीतने पर उन्होंने पत्रकार ब्रुक्स को

@Digitallibrary84

अपना सचिव बनाया और सीनेटर हलेन को गृह सचिव। हलेन की बेटी से तो उन्होंने अपने बेटे रॉबर्ट का रिश्ता भी तय किया था।

सम्मिलित राष्ट्र के उपराष्ट्रपति स्टीफंस की अगुआई में तीन सदस्यीय दल 3 फरवरी, 1865 को लिंकन और सेवर्ड से मिला। चर्चा फोर्ट मोनरो में हुई। स्टीफंस ने लिंकन से गतिरोध समाप्त करने के बारे में तरीका पूछा। इस पर लिंकन ने कहा कि उन्हें तो सिर्फ एक ही रास्ता पता है, कि विद्रोही अपना विद्रोह समाप्त कर दें। स्टीफंस ने दूसरा सवाल पूछा कि क्या उन्हें मंजूर होगा कि दोनों सेनाएँ मिलकर मेक्सिको से फ्रांस को खदेड़ दें? उन्होंने कहा कि ऐसा तभी संभव है, जब विद्रोही संघ में शामिल हो जाएँ। सेवर्ड ने तो साफ कर दिया कि लिंकन का मुक्ति का घोषणा-पत्र बदल नहीं सकता। प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य हंटर ने कहा कि इंग्लैंड के सम्राट् चार्ल्स प्रथम ने अपने विद्रोहियों से बातचीत की थी। लिंकन ने कहा कि अंत में चार्ल्स का सिर कलम कर दिया गया था। इस बैठक के बारे में लिंकन ने कांग्रेस को सूचित किया कि यह बेनतीजा समाप्त हो गई।

दूसरी बार शपथ ग्रहण

5 मार्च, 1865 को लिंकन ने दूसरी बार राष्ट्रपति पद की शपथ ली। वाशिंगटन में उस समय कई दिन से बारिश हो रही थी। स्वाभाविक रूप से सड़कें कीचड़ और पानी से उफन रही थीं। उपराष्ट्रपति जॉनसन के बाद जैसे ही लिंकन अपना भाषण देने खड़े हुए, बादलों को भेदती सूर्य-रश्मियाँ वाशिंगटन पर बरसीं। लोगों ने इसे नए सवेरे के रूप में लिया। कहा कि इन बादलों की तरह समस्याओं के बादल भी छँट जाएँगे। भीड़ और मौसम एक साथ कह रहे थे—

हार सकते हम नहीं इनसाफ की कोई लड़ाई,

क्योंकि दृढ़ विश्वास का अर्जुन हमारे साथ है।

@Digitallibrary84

6

बलिदान

अमरीका विश्वास, अविश्वास, संदेह, आशा और निराशा के दौर में था। जॉन विल्कीज बूथ ने अविश्वास, संदेह और लिंकन-विरुद्ध नैराश्य को जिता दिया और उन्हें गोली मार दी। मगर बूथ ने किसी विशेष मुद्दे पर ऐसा नहीं किया। वह सिर्फ प्रसिद्धि पाना चाहता था। मूल रूप से वह अभिनेता था। इस पेशे में जितने भी लोग आते हैं, वे अमूमन चुंबकीय सामर्थ्य के धनी होते हैं। वह भी था। फ्रांसिस विल्सन ने बूथ की जीवनी में लिखा कि वह इतना नयनाभिराम था कि लड़कियाँ उसे देखकर ठिठक जातीं और जब वह गुजर जाता तो वे उसकी प्रशंसा में प्रशस्तियाँ पढ़तीं। उसका 'रोमियो' नाटक बहुत चर्चित हुआ था। उस समय वह महज तेईस वर्ष का था और महिलाएँ उसका एक पल का साहचर्य पाने के लिए व्याकुल रहती थीं। वह इतना अच्छा अभिनेता था कि मंच पर दूसरों को टिकने नहीं देता था। उसके कला-प्रभाव से त्रस्त एक जलनेवाली अदाकारा इराका ने उस पर एक होटल में चाकू से हमला कर दिया था। बाद में इसी संताप में उसने आत्महत्या कर ली। उसकी एक और प्रेमिका थी इला टर्नर। उसे जब पता चला कि बूथ ने लिंकन की हत्या कर दी है तो उसने दिल पर उसकी तसवीर बनाई और क्लोरोफार्म सूँघकर जान दे दी। वैसे न्यूयॉर्क में बूथ को हूट किया जा चुका था।

बूथ जल्दी खुश और निराश होता था। वह चाहता था कि एक ही रात में ऐसी प्रसिद्धि मिले कि उसका नाम इतिहास से मिटाया न जा सके। अपनी तमाम तैयारियाँ और षड्यंत्रकारी योजनाओं के बाद जनवरी 1865 में वह मौका आया, जब उसे पता चला कि लिंकन 18 जनवरी को फोर्ड थिएटर में एडविन फॉरेस्ट के नाटक 'जेक रेड' को देखने आएँगे। बूथ ने भी खबर सुनी थी कि लिंकन आने वाले हैं। मगर कुछ नहीं हुआ। लिंकन पहुँचे ही नहीं। ली समर्पण कर चुका था। ऐसे में बूथ का मानना था कि अब लिंकन के अपहरण का कोई तुक नहीं है। अब तो उन्हें गोली ही मारनी चाहिए।

@Digitallibrary84

14 अप्रैल, 1865 को गुडफ्राइडे था। लिंकन फोर्ड थिएटर जाने को उद्यत थे। मैरी लिंकन के सिर में दर्द था, फिर भी वे लिंकन के कहने से जाने को तैयार हो गईं। लिंकन के सुरक्षा प्रमुख लेमन रिचमौंड चले थे; मगर वे जाते हुए लिंकन से थिएटर न जाने की गुजारिश कर गए थे। लिंकन और उनके साथ के कुछ लोग करीब 8.30 बजे थिएटर पहुँचे। नाटक शुरू हो चुका था। दर्शक बार-बार उस बॉक्स को देख रहे थे, जहाँ लिंकन और ग्रांट को बैठना था। दरअसल, टिकट से पहले ही यह घोषणा हो गई थी कि राष्ट्रपति और ग्रांट आने वाले हैं। इसी कारण एक डॉलर का टिकट ढाई डॉलर में बिका था। राष्ट्रपति के पहुँचते ही कुछ क्षणों के लिए नाटक रोककर 'प्रमुखों का स्वागत है' धुन बजाई गई।

मसीहा की हत्या

इधर बूथ ने रात आठ बजे अपने तीन षड्यंत्रकारी साथियों को हर्मडन हाउस बुलाया। उसने तीनों को अलग-अलग जिम्मेदारियाँ दीं। एक साथी जर्मन था — अजेराट। उसने कहा कि वह उपराष्ट्रपति जॉनसन को मारेगा। उसने इनकार किया कि उसे अपहरण के लिए कहा गया था, हत्या करने के लिए नहीं। लेकिन बूथ के दबाव डालने पर वह राजी हो गया। एक दूसरा षड्यंत्रकारी था—पैर्न। उसे कहा गया कि वह सेवर्ड को निपटा दे। उसने कोई आनाकानी नहीं की, वह तत्काल मान गया। तीसरा था—हैराल्ड! उसे बूथ ने जिम्मेदारी दी कि वह पैर्न को सेवर्ड का घर बताए और राष्ट्रपति को गोली मारने का जिम्मा उसने स्वयं लिया।

बाद में मिली डायरी में बूथ ने लिखा था—"देश की हर मुसीबत के लिए लिंकन जिम्मेदार है। ईश्वर ने तो उसे (लिंकन को) सजा देने का जरिया बनाया है।" उसने अपनी तुलना आधुनिक बूरट्स या विलियम टेल कहकर की।

बूथ का नाम था, इसलिए उसे नाटक के दौरान ऊपरी मंजिल तक पहुँचने में दिक्कत नहीं आई। राष्ट्रपति की सुरक्षा ह्वाइट हाउस के गार्ड चार्ल्स फोर्ब्स के हाथों में थी। बूथ ने उसे अपना कार्ड दिखाया तो उसने उसे राष्ट्रपति बॉक्स में जाने की इजाजत दे दी। वह लिंकन के ठीक पीछे खड़ा हो गया। नाटक के तीसरे दृश्य में हास्य का ठहाका गूँजा और इधर बूथ की पिस्तौल। लिंकन का बायाँ हाथ ठोड़ी पर था और दाहिना खंभे पर। ठहाकों के बीच गोली की आवाज किसी को सुनाई नहीं दी। वैसे भी हँसी के प्रहसन में दर्द का खयाल भी किसी को नहीं आता। मेजर राठबोन राष्ट्रपति के साथ ही बैठे थे। उन्होंने बूथ को पकड़ने की चेष्टा की, लेकिन उसने उन पर चाकू का भरपूर वार किया और वहाँ से कूदा। इस बीच उसके जूते की कील वहाँ लगे एक झंडे में फँस गई और वह गिर गया। लँगड़ाता हुआ वह मंच की ओर बढ़ा। लोगों ने इस को भी नाटक का

@Digitallibrary84

कोई हिस्सा समझा। थोड़ी देर में राष्ट्रपति बॉक्स से धुआँ उठा और उसके साथ ही मैरी लिंकन की चीख कि राष्ट्रपति को मार दिया—राष्ट्रपति को मार दिया!

लिंकन की आँखें बंद हो रही थीं। गोली उनके सिर में लगी थी। उनका सिर छाती की ओर झुक रहा था। डॉक्टर लीले ने देखा कि अभी लिंकन में जीवन शेष है। कृत्रिम श्वसन के बाद उन्हें पास के एक मकान में ले जाया गया। वह पीटरसन नाम के व्यापारी का था। लिंकन को जमीन पर गद्दा डालकर लिटाया गया। इसलिए कि उनकी लंबाई का कोई पलंग नहीं था। कंबलों से ढँकने पर भी लिंकन की टाँगें ठंडी पड़ गईं। लिंकन नौ घंटे तक ऐसी ही दशा में रहे। उनके पारिवारिक डॉक्टर स्टोन रात को ग्यारह बजे पहुँच पाए। मगर लिंकन को होश नहीं आया। पीटर्सन के घर के बाहर भीड़ लग गई। लिंकन का बड़ा बेटा रॉबर्ट तो समनर के साथ आ गया, लेकिन छोटे बेटे को आने नहीं दिया गया। शायद इसलिए कि इस घटना का उस पर बुरा असर पड़ सकता था।

वाशिंगटन की सड़कों पर अफवाहों की दहशत नृत्य कर रही थी। कोई कह रहा था—स्टेनटन को मार दिया गया, ग्रांट को भी गोली लग गई है। लोगों का मानना था कि पृथकतावादियों का काम खत्म नहीं हुआ है। ये ही वे लोग हैं, जो यह सब कर रहे हैं। सेवर्ड की हालत खराब थी। उन पर भी निशाना साधा गया था। काम स्टेनटन के जिम्मे था। वह आदेश पर आदेश जारी किए जा रहा था। उसने कई गिरफ्तारियाँ तत्काल करवाईं।

जो गोली बूथ ने चलाई थी, वह लिंकन के बाएँ कान के नीचे से होती हुई दिमाग को भेद गई थी। उसने उनकी दाहिनी आँख को भी क्षति पहुँचाई थी। मैरी लिंकन को पास के कमरे में रखा गया था। वह बार-बार लिंकन के पास पहुँच जातीं। इससे लिंकन की साँसें उखड़ने लगीं। स्टेनटन इससे खीझ गए और उन्होंने मैरी लिंकन को कक्ष से बाहर निकलवा दिया। डॉ. लीले लिंकन का हाथ अपने हाथ में लेकर बैठे रहे। वे सेना के डॉक्टर थे। 7.22 मिनट पर उन्होंने लिंकन का नाड़ियों के बंद हो जाने पर बाजू मोड़ दिया। डॉक्टरों ने मैरी को बताया कि सब समाप्त हो गया। स्टेनटन ने सबसे पहले राष्ट्राध्यक्ष को सैल्यूट किया। जॉनसन को आनन-फानन में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। जेब से रुमाल निकालकर लिंकन का खुला मुँह बंद किया गया और इस तरह अमरीकी इतिहास का नायक अपने शरीर से जुदा होकर अमर हो गया।

अत्येष्टि संकार

अंत्येष्टि ट्रेन पूरे राजकीय सम्मान के साथ मृत देह को इलिनॉय ले गई। ट्रेन के इंजन को भी काले कपड़े से ढका गया। उस पर चाँदी के सितारे झिलमिला रहे

@Digitallibrary84

थे। जब ट्रेन फिलाडेल्फिया पहुँची तो वहाँ भीड़ की गिनती करना असंभव था। एक से दूसरे के बीच कोई दूरी नहीं थी। मनुष्यों की जैसे दीवार खड़ी हो गई थी। लोगों ने दस घंटे तक इंतजार किया कि वे एक पल के लिए सही, लेकिन अपने नायक का चेहरा अंतिम बार देख लें। सैकड़ों औरतें बेहोश हो गईं। लिंकन की हत्या के सात दिन तक तय नहीं हो पाया था कि उनकी अंत्येष्टि स्प्रिंगफील्ड में हो या वाशिंगटन में। मैरी लिंकन सहमत ही नहीं हो रही थीं कि स्प्रिंगफील्ड में उनकी अंत्येष्टि की जाए। किसी तरह 4 मई को वह ट्रेन लिंकन को आखिरी बार अपने शहर लेकर आई, एक ऐसे इनसान के साथ, जिसकी किसी से कोई बुराई नहीं थी। एक छत के तले रहने पर भी मैरी ने उनसे कभी कुछ नहीं सीखा था।

बाद में खबर आई कि बूथ को गोली मार दी गई। दोपहर बाद खुफिया प्रमुख कर्नल बेकर तेजी के साथ स्टेनटन के पास पहुँचे और बताया कि उन्होंने कुछ ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया है, जो आदेशों का उल्लंघन कर रहे थे। उनमें से एक महिला ने बूथ के बाल काट लिये। स्टेनटन को लगा कि इससे विद्रोहियों को बल मिलेगा और वे इसे विशेष चिह्न मानकर सँभालकर रखेंगे। वे यह भी मान रहे थे कि यह हत्या पृथकतावादियों के नेता जेफरसन डेविस के षड्यंत्र का ही नतीजा है। उन्होंने तय किया कि बूथ की अंत्येष्टि तत्काल और गोपनीय ढंग से की जाए, ताकि वे लोग उसके शव को लेकर किसी तरह की राजनीति न कर सकें। पूरा देश जानना चाहता था कि बूथ के शव का क्या हुआ? महज आठ लोगों को हकीकत मालूम थी। ऐसे आठ लोग, जो सिर्फ राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्ध थे और जिन्होंने गोपनीयता की सौगंध ली हुई थी।

कई तरह के भ्रम और शंकाओं के बीच अफवाह फैली कि सैनिकों ने गलत आदमी को बूथ समझकर गोली मार दी। वह तो फरार हो गया। यह खबर ऐसे फैली होगी कि जीवित बूथ और मृत बूथ में बहुत अंतर दिखाई दे रहा था। वैसे बूथ को उसके दाहिने हाथ के गोदने से नेशनल होटल के चार्ल्स डावसन ने पहचाना था। वाशिंगटन के फोटोग्राफर गार्डनर और बूथ के नजदीकी दोस्त हेनरी क्ले फोर्ड ने भी उसकी शिनाख्त की थी।

15 फरवरी, 1869 को बूथ को उसकी कब्र से निकालकर एक बार फिर राष्ट्रपति के आदेश से उसकी शिनाख्त की गई थी और सभी ने माना था कि वही बूथ है। लेकिन 13 जनवरी, 1903 को ओकलाहोमा के होटल इनिड में एक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली। उसने माना कि वह जॉन विल्किस बूथ है। उसने घोषणा की कि उसी ने लिंकन को गोली मारी थी। उसके दोस्तों ने उसे ट्रंक में बंद कर यूरोप जानेवाले जहाज में चढ़ा दिया। वहाँ वह दस वर्षों तक रहा।

@Digitallibrary84

श्रीमती लिंकन के लिए अब्राहम लिंकन के अवसान के बाद के दिन अवसाद भरे थे। वे जब ह्वाइट हाउस छोड़ रही थीं तो उन्हें विदा देने के लिए एकाध दोस्त ही वहाँ मौजूद थे। एक दर्दनाक सन्नाटा पसरा हुआ था। राष्ट्रपति जॉनसन ने भी लिंकन की हत्या के बाद सांत्वना की एक लाइन भी लिखकर मैरी लिंकन को नहीं भेजी थी। वे पहले शिकागो गईं, लेकिन वहाँ के खर्च उनसे सँभले नहीं। वे फिर हाइड पार्क चली गईं। उन्हें चिंता थी तो थॉमस की। वह छोटा बेटा था, जिसे लिंकन 'टैड' कहते थे। टैडपोल से टैड! टैडपोल का सिर बड़ा होता है, टैड का भी था।

वैसे बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि सन् 1876 में विद्रोहियों के एक गैंग ने लिंकन के शव को चुराने की कोशिश की थी। 'बिग जिम' नाम था उसका। दुर्भाग्य से उस समय इस तरह का कोई कानून नहीं था, जो शव को चुराने पर अपराधी को दंडित कर सके। लिंकन के बेटे ने बड़े-से-बड़े वकील खड़े किए; किंतु उस समय कॉफिन चुराने पर अधिकतम 75 डॉलर का अर्थदंड था, शव चुराने पर नहीं। बहरहाल 26 सितंबर, 1901 को एक बार फिर लोगों ने लिंकन के दर्शन किए। अपनी मौत के छत्तीस वर्ष बाद भी लिंकन ऐसे लग रहे थे जैसे किसी योजना पर विचार कर रहे हों।

@Digitallibrary84

Published by

Satsahitya Prakashan

205-B Chawri Bazar, Delhi-110006

ISBN 978-93-5186-033-4

Abraham Lincoln

by Pradeep Pandit

Edition

First, 2010

@Digitallibrary84